मानदण्ड

'वनफूल' के लोकप्रिय बंगला उपन्यास
का हिन्दी रूपान्तर

उपन्यासकार
'वनफूल'

अनुवादिका
[illegible] गुप्त
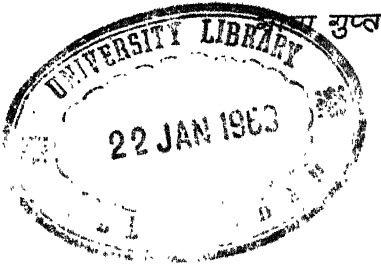
राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

मानदण्ड

मानदण्ड

इस दिन प्लेटफार्म पर काफी भीड़ थी। गाड़ी बहुत देर से आई। इससे पहले जो गाड़ी आती थी, वह भी अभी तक नहीं पहुंची थी। दोनों गाड़ियों के यात्री वहां जमा थे। गाड़ी के आते ही दौड़धूप मच गई। जिससे जहां बना, वहीं चढ़ गया। यथासमय गार्ड साहब ने सीटी दी और हरी झंडी दिखाई। नियमानुसार घंटी भी बज गई। श्रीमती तुंगश्री जब वहां पहुंचीं, तब तक गाड़ी चल पड़ी थी। दौड़कर भी वे गाड़ी पकड़ नहीं पाईं। आंख से ओझल होते हुए गार्ड के डिब्बे की ओर ताकती हुई वे स्तब्ध-सी खड़ी रह गईं। गाड़ी चली गई। इस परदेस में वे इतनी रात को रहेंगी भी तो कहां? यहां रहना निरापद भी तो नहीं।

उन्होंने कुली की ओर मुड़कर देखा, जो उनका सूटकेस और बिस्तर सिर पर लादे, उनके पीछे ही खड़ा था। सारा क्रोध उसीपर उतरा। इसी आदमी ने तो अपने-आप आकर बस से सामान उतार लिया था, फिर सामान सिर पर लादे ही खड़े-खड़े किसीसे गप्पें मारने लगा था और उसके बाद उन्हें वहीं इन्तज़ार करते छोड़कर बीड़ी खरीदने चला गया था।

तुंगश्री की आंखों से क्रोध की चिनगारियां निकलने लगीं। कुली की ओर क्षण-भर देखकर उन्होंने कहा, "तुम्हारी वजह से ही गाड़ी छूट गई। बोलो, अब क्या करें?"

कुली बुद्धू की तरह थोड़ी देर उनकी ओर ताकता रहा, फिर बोला, "आप वेटिंगरूम में रह सकेंगी?"

"नहीं।"

"धर्मशाला ले चलूं?"

"नहीं।"

"स्टेशन के पास ही एक होटल है..."

"नहीं, वहां भी नहीं जाना है।"

"तब ?"

कुछ हिचकिचाकर कुली रुक गया। तुंगश्री भी किंकर्तव्यविमूढ़-सी खड़ी रह गईं। जहां अन्य दस आदमी उन्हें देख सकें, ऐसी जगह टिकने की इच्छा नहीं थी। वे यह नहीं चाहती थीं कि उनका यहां आना तक किसी-को मालूम हो सके। उन्होंने यही सोचा था कि गुप्त रूप से यहां होकर लौट चलूंगी। पर इस कुली की वजह से सब गुड़ गोबर हो गया। कुली ने फिर से कहा, "तो फिर आप कहां चलेंगी ? बताइए, आपको वहीं ले चलूं।"

"मैं कहीं ऐसी जगह रात बिताना चाहती हूं, जहां कोई दूसरा आदमी न हो। यानी, मैं बिलकुल अकेली रहना चाहती । तुम्हें कोई ऐसी जगह मालूम है ?"

"हां, पर वह शहर से बाहर है।"

"कितनी दूर ?"

"कोई दो मील होगी। मेरी जान-पहचान के एक साहब का मकान है। वे यहां नहीं रहते, मैं ही उनके घर की देखभाल करता हूं। चाभी मेरे ही पास है।"

तुंगश्री भौंहें सिकोड़कर सोचने लगीं। कल शाम से पहले लौटने की कोई गाड़ी नहीं थी। सबेरे एक गाड़ी जाती तो थी, पर वे दिन को जाना नहीं चाहती थीं। जाना खतरे से खाली नहीं था। आज रात-भर और कल तमाम दिन उन्हें छिपकर बिताना था। कुली जैसा बता रहा है, अगर वैसा कोई घर मिल जाए तो बुरा क्या है ?

"वहां चलेंगे कैसे ?"

"पैदल चल सकते हैं, सवारी भी मिल सकती है।"

"ठीक है, सवारी का ही इन्तज़ाम करो।"

"चलिए।"

कुली के पीछे-पीछे वे प्लेटफार्म से बाहर निकल आईं, जहां छकड़ों जैसी घोड़ागाड़ियां खड़ी थीं। पर वहां पहुंचकर कुली जिस कोचवान से

बातें करने लगा, उसकी गाड़ी छकड़ा नहीं थी, अच्छी खासी कीमती फिटन थी। घोड़ा भी अच्छी नस्ल का था।

तुंगश्री ने इस कस्बे में ऐसी गाड़ी देखने की कल्पना भी नहीं की थी। एकाएक उन्हें लगा कि आर्थिक कारणों से ही यह सम्भव हुआ है। जो चीज़ किसी दिन विलास की सामग्री थी, आज ज़रूरत पड़ने पर उसे भाड़े पर उठाया जा रहा है। अमीरी ठाट अब चलने का नहीं। यह युग ही ऐसा है कि जो सिर ऊंचे उठे रहते थे, अब धीरे-धीरे झुकते जा रहे हैं। समानता अनिवार्य होती जा रही है। तुंगश्री को खुशी हुई। इसीके लिए तो वे जी-जान से लड़ रही हैं। फिटन के आगे बढ़ते ही वे उसमें बैठ गईं। कुली ने उनका सामान उनके सामने ही लगा दिया, और कहा, "मैं कोचवान के पास बैठ जाता हूं। अभी पहुंच जाते हैं।"

यह कहकर वह तुरन्त कोचवान के पास जा बैठा। फिटन चल पड़ी। अचानक तुंगश्री को ख्याल आया कि उस कुली का बात करने का ढंग एकदम साधारण कुलियों जैसा नहीं था। कुछ ऊंचे वर्ग के लोगों जैसा लगता था। शायद अभाव के थपेड़ों से किसी भले घराने के लड़के को कुली बनना पड़ा है। एड़ी-चोटी का पसीना एक करके हरेक को रोटी कमानी पड़ेगी। अब वे दिन लद गए जब सूद के पैसे पर नवाबी हांकते थे। एकाएक झन-झनाकर गाड़ी की घंटी बज उठी। पीछे खड़ा साईस चिल्ला उठा, "बच के!..."

तुंगश्री भी चौंक पड़ीं। ऐसा लगा मानो किसीने अचानक उनकी चिन्ताधारा पर भी रोक लगा दी।

टप-टप-टप-टप...घोड़ा दौड़ा चला जा रहा था। विलायती स्प्रिंग की गद्दी पर तुंगश्री की यौवन से पुष्ट देह हिल रही थी। अपरिचित रास्ते के चारों ओर अंधेरा था। पेड़ दानवों जैसे दिखाई पड़ते थे। मकान स्तूपों जैसे। वे आते और चले जाते। अपना परिचय छोड़ जाने का उन्हें मौका ही कहां था? कभी-कभी देहाती कुत्ते भूंक उठते थे। दूर पर कोई बत्ती भी कभी-कभी दिखाई पड़ जाती थी। फिर कुत्तों की भौं-भौं भी रुक जाती और

रोशनी भी ओझल हो जाती। फिटन तेज़ी से भाग रही थी।

थोड़ी देर बाद फिटन एक बड़े-से महल के सामने जाकर रुक गई। अंधेरे में वह पहाड़ जैसा दिखाई पड़ता था। कुली उतरकर तुंगश्री से बोला, "आ पहुंचे! आइए।"

तुंगश्री गाड़ी से उतर पड़ीं।

"चलिए।"

कुली उन्हें रास्ता दिखाता हुआ आगे बढ़ चला। वह उन्हें उस विशाल महल के एक सिरे पर ले गया। एक कमरे के सामने रुककर उसने ताला खोला और फिर तुंगश्री से बोला, "आइए।"

अपरिचित स्थान में अंधेरे में एक अपरिचित पुरुष के आह्वान पर तुंगश्री को आगे बढ़ने में संकोच हो रहा था। वे थोड़ी देर खड़ी ही रह गईं, फिर बोलीं, "बत्ती का इन्तज़ाम होता, तो अच्छा रहता।"

"आप आ जाइए न, बिजली की बत्ती है।"

उसने कमरे में जाकर बत्ती जला दी और बाहर निकल गया।

"आपका सामान लेता आऊं।"

तुंगश्री कमरे के भीतर आकर चकित रह गईं। सोफासेट, अच्छी-अच्छी तस्वीरें, किताबों का शेल्फ, दीवारघड़ी, एकदम रईसी ठाट। दीवार-घड़ी की ओर देखकर उन्होंने अपनी कलाईघड़ी की ओर देखा, दीवार-घड़ी एकदम ठीक चल रही थी, पर कुली ने तो कहा था कि घर पर कोई रहता ही नहीं। भौंहें सिकोड़कर तुंगश्री खड़ी रह गईं। सामान लेकर कोचवान आ पहुंचा।

"आप अन्दर आइए।"

कोचवान पास का एक दरवाज़ा खोलकर अन्दर के एक कमरे में चला गया। उसे पार करके फिर एक दरवाज़ा खोलकर वह तीसरे कमरे में जा पहुंचा। तुंगश्री यंत्रचालित-सी उसका अनुसरण करती हुई अब जिस कमरे में पहुंचीं, उसकी सजावट से मालूम हुआ कि यह शयनकक्ष था। एक तरफ एक खूबसूरत पलंग था, उसपर जालीदार मसहरी टंगी थी। बिजली का

पंखा भी लगा था। पलंग पर बिस्तर तक लगा हुआ था। सिरहाने की मेज़ पर टेबललैम्प तथा अंग्रेज़ी और बंगला की कुछ आधुनिक पुस्तकें भी रखी हुई थीं। बेडस्विच भी लगा था। बिलकुल त्रुटिहीन प्रबन्ध। जैसे किसीने पहले से ही किसीके लिए सारा प्रबन्ध कर रखा हो।

सामान एक तरफ रखकर कोचवान ने ही स्विच दबाकर पंखा चला दिया, फिर तुंगश्री की ओर देखते हुए बड़े अदब से कहा, "इधर बाथरूम है, स्नान का भी प्रबन्ध है।"

उसने उंगली से कमरे की ओर इशारा कर दिया।

तुंगश्री आश्चर्य से चुपचाप सब देख रही थीं। उनके मुंह से आवाज़ नहीं निकल रही थी। कोचवान जाने लगा, तो तुंगश्री को ख्याल आया कि अब तक किराया नहीं दिया।

"पैसे ले जाओ। कितना हुआ ?"

"पैसे देने की ज़रूरत नहीं।"

कुछ और कहने का मौका दिए बिना ही वह दबे पांव बाहर निकल गया। इसके बाद एक के बाद दूसरे दरवाज़े के बन्द होने की आवाज़ सुनाई पड़ी। तुंगश्री थोड़ी देर वैसे ही खड़ी रहीं, फिर वातावरण को अच्छी तरह समझने के लिए वे आगे बढ़ीं। सब कुछ उन्हें अजीब-सा लग रहा था। आखिर वह आदमी किराया क्यों नहीं लेता ? दरवाज़े पर पहुंचकर उन्होंने जो कुछ देखा, उससे उनका दिल कांप उठा। खींचकर देखा तो दरवाज़ा बाहर से बन्द था। तो वे कैद हैं ? एकाएक वे चौंक उठीं, कहीं घंटी टनटना रही थी। लगा कि मकान के दूसरे सिरे से वह आवाज़ आ रही थी। हतबुद्धि-सी वे कुछ देर वैसी ही खड़ी रह गईं। सोचने लगीं, अब क्या करना चाहिए। चिल्लाऊं ? पर इससे कोई फायदा नहीं होगा। आस-पास कोई भी ऐसा नहीं था, जो उन्हें बचा सकता। अगर कोई हो भी, तो वह दुश्मन के ही साथी होंगे। पीछे से खट् की आवाज़ सुनाई पड़ी। जैसे बिजली का झटका लगा हो, तुंगश्री झट से घूमकर खड़ी हो गईं। उन्होंने देखा, एक लड़की कमरे में खड़ी है। वह सुन्दरी, तन्वी युवती

थी। आंख मिलते ही वह नमस्ते करके आगे बढ़ आई।

"भैया आप ही को स्टेशन से लाने गए थे न ? आइए…"

"मुझे तो कोई भी स्टेशन लेने नहीं गया था ! मुझे तो यहां एक कुली ले आया।"

"कुली ?…क्या पता…पर भैया के ही स्टेशन जाने की बात थी। आप ही तुंगश्रीदेवी हैं न ?"

"हां।"

"आप ही को स्टेशन से लाने के लिए तो भैया गए थे। मनमौजी ठहरे, कहीं किसी और काम में व्यस्त हा गए होंगे, नौकर को स्टेशन भेज दिया होगा। आइए, आपने हाथ-मुंह धो लिया ? चाय आ रही है।"

"नहीं तो, अभी कहां धोया। पर सुनिए तो, बात कुछ समझ में नहीं आ रही है !"

"क्या ?"

"यहां मुझे इस तरह क्यों ले आया गया है ?"

"भैया के आने पर ही समझ सकेंगी। मुझे तो कुछ मालूम नहीं। भैया मुझसे कहकर गए हैं कि आठ बजे आकर मैं आपका स्वागत करूं। सो मैं आ गई हूं। आप हाथ-मुंह धोकर कपड़े बदल लीजिए। बाथरूम में पानी-वानी सब ठीक है। मन हो, तो नहा भी सकती हैं। मैं चाय-नाश्ता लेकर आ रही हूं, तब तक आप तैयार हो जाएं।"

वह लड़की जाने लगी तो तुंगश्री ने उसे फिर बुलाया।

"अच्छा, आपके भैया का नाम क्या है ?"

"श्री हिरण्यगर्भ वर्मन।"

तुंगश्री के शरीर का रक्तप्रवाह सहसा रुक-सा गया और फिर भयानक तेज़ी के साथ बह चला। चेहरा पल-भर के लिए फक् पड़ गया, फिर लाल हो उठा। वे समझ गईं कि अब पकड़ ली गईं।

उस लड़की ने ही फिर बात छेड़ी, "भैया से आपका परिचय नहीं है क्या ?"

"कोई खास तो नहीं है, पर..."

उस लड़की के सामने अपने-आपको पूरी तरह खोल देने की इच्छा तुंगश्री की नहीं थी, पर उसकी आंखों में एक दबी हुई मुस्कराहट देखकर उन्हें शक हुआ कि इस लड़की को भी शायद सारा भेद मालूम है।

"परिचय होने पर आपको आश्चर्य होगा। हमारे खानदान में सभी-के पुर्जे कुछ ढीले हैं। खैर, छोड़िए ये बातें बाद में होंगी। अब आप हाथ-मुंह धो लें, मैं चाय ले आती हूं।"

लड़की चली गई। तुंगश्री क्षण-भर स्तब्ध खड़ी रह गईं। फिर उन्होंने निश्चय कर लिया। आफत में धैर्य खो देना उनका स्वभाव नहीं था, इसी-लिए इतनी कम उम्र में भी इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी का भार उन्हें सौंपा गया था। वे मौत से नहीं डरतीं। अप्रत्याशित रूप से पकड़े जाने पर वे अपने निकट भी कुछ झेंप-सी गई थीं और उनका मानसिक संतुलन क्षण-भर के लिए विचलित हो गया था। परिस्थिति समझने के साथ ही वे संभल गईं। देखें तो, हिरण्यगर्भ वर्मन क्या करते हैं। जान से मार देंगे? मारें। पर जिस आदर्श को उन्होंने जीवन का सत्य मान लिया है, उसे आखिरी सांस तक छोड़ेंगी नहीं। अगर ज़रूरत पड़ी तो मृत्यु के ठीक सामने ही अपने आदर्श को रक्त से लिख जाएंगी। वे कभी सिर झुका नहीं सकतीं। हिरण्यगर्भ को उन्होंने कभी देखा तो नहीं है, पर मज़दूरों की मांग के जवाब में उन्होंने जो चिट्ठी लिखी थी, उसे देखा था। अपनी मिल के कर्मचारियों की एक भी मांग उन्होंने पूरी नहीं की। हड़ताल हुई, पर कुछ बना नहीं। अनिश्चित समय के लिए हिरण्यगर्भ ने अपनी मिल बन्द कर दी। सभी कर्मचारियों की नौकरी छूट गई। तमाम लोग बेकार हो गए। हिरण्यगर्भ नये कर्मचारियों की खोज में लगे हैं। तुंगश्री की आंखों में बिजली-सी कौंध गई। थोड़ी देर तक वहीं खड़ी रहने के बाद वे गुसल-खाने की ओर बढ़ गईं। फिर सूटकेस से कपड़े निकालने के लिए लौट आईं। वहां पहुंचकर वे फिर एक बार वज्राहत-सी खड़ी रह गईं। वहां उनका वह अटैचीकेस नहीं था, जिसमें उन्होंने अपना रिवाल्वर रखा था।

बाथरूम बहुत शानदार था, संगमरमर का बना हुआ। वहां स्नान करने पर तृप्ति होती थी, पर तुंगश्री का सारा शरीर जैसे जल गया। उनका दिल मसोस उठा। जेल से निकलने के बाद से जो बात उनके हृदय में कांटे-सी चुभ रही थी, वही जैसे फिर करक उठी। संगमरमर को देखकर उन्हें ऐसा लगा जैसे युग-युग से आंसू जमकर पत्थर बन गए हों—उन सब अभागे सर्वहाराओं के आंसू जिन्हें एड़ी-चोटी का पसीना एक करने पर भी खाना नहीं मिला और जो अत्याचार-अविचार के निर्दय दबाव से, भूख और बीमारी से जर्जर होकर आखिर में मर मिटे।

स्नान करके तुंगश्री बाहर आई। उन्होंने देखा कि वही सुन्दर लड़की उनके लिए चाय और नाश्ता लेकर प्रतीक्षा कर रही है।

"नहा चुकीं ? तो चाय लीजिए। मैंने भैया को आपकी बात बता दी। वे ज़रा काम में व्यस्त हैं, नहीं तो खुद ही आ जाते। शायद कुछ देर में ही आ जाएं। आप तब तक आराम कर लीजिएगा।"

नाश्ता लेते समय तुंगश्री ने उस लड़की को अच्छी तरह देखा। खादी की साड़ी पहने, मांग में सिंदूर, शरीर पर कोई ज़्यादा ज़ेवर न थे। उम्र उन्नीस-बीस से ज़्यादा न थी। उजला गोरा वर्ण, सुन्दर चेहरा और अत्यंत सुन्दर आंखें। ऐसी गहरी काली पुतलियां तुंगश्री ने कभी नहीं देखी थीं।

"तुम्हारा नाम क्या है भई ?"

"मेरा नाम ? शिखरिणी।"

"वाह, तुम्हारे नाम के साथ मेरे नाम का भी मेल है। यह नाम तुम्हारे माता-पिता का रखा हुआ है, या मेरी तरह खुद तुमने ही रख लिया ?"

"पिताजी ने रखा था। वे संस्कृत के पंडित थे न, इसीलिए संस्कृत के छन्द के नाम पर मेरा नाम रख दिया। पर इस नाम से मुझे कोई नहीं बुलाता, ज़्यादातर लोग शिखु कहते हैं। भैया कहते हैं खरिणी। अपना नाम आपने खुद ही रख लिया है ? आपके माता-पिता ने क्या नाम रखा था ?"

"मिनती दासी। उसे बदलकर मैंने तुंगश्रीदेवी बना लिया। कैसा

रहा ?"

"बहुत अच्छा । पर आप कुछ खा नहीं रही हैं ।"

"खा तो रही हूं, पर ज़्यादा मीठा मुझसे खाया नहीं जाता ।"

"कुछ नमकीन और ला दूं ?"

"नहीं ।"

"समोसे और ला दूं ?"

"नहीं, अब नहीं चाहिए ।"

पीछे के दरवाज़े की ओर मुड़कर शिखरिणी ने कहा, "योगेन, तुम जा सकते हो और कुछ नहीं चाहिए । मणि को भेज दो बर्तन ले जाए ।"

दरवाज़े के पास अब तक चित्रवत् खड़ा नौकर चला गया । ऐश्वर्य की भरमार ने तुंगश्री को फिर एक बार ठेस लगाई । उन्हें याद आया, उनकी मां भूखों मर गई, उनका भाई तपेदिक का मरीज़ है । एकाएक उन्हें केववसामन्त की भी याद आई । देखते-देखते उनकी आंखों में फिर से चिनगारी चमकने लगी ।

"क्या आप थोड़ी देर आराम करेंगी ?"

"अगर हो सके तो पहले हिरण्यबाबू से भेंट करना ही ठीक रहता ।"

"ठीक है ।"

२

तुंगश्री को उम्मीद थी कि इसी महल के किसी हिस्से में शायद हिरण्यगर्भ भी रहते हैं । पर शिखरिणी का अनुसरण करते हुए उन्हें महल से बाहर आना पड़ा ।

"तुम्हारे भैया कहां रहते हैं ?"

"आप चलिए तो ।"

दोनों एक बड़ा-सा बगीचा पार करने लगीं । फूलों का बगीचा, अमीर

ज़मींदारों के बगीचे में जो चीज़ें होती हैं, यहां पर भी उनकी कमी नहीं थी। जगह-जगह पत्थर की विचित्र मुद्राओं में नग्न, अर्धनग्न नारी-मूर्तियां, पानी के फव्वारे, लोहे की बेंचें, जगह-जगह आलोक-स्तम्भ, लता-कुंज, चौकोर हरे लान, पक्के टेनिसकोर्ट, किसी चीज़ की कमी नहीं। ये सब ऊंची दीवारों से घिरे हुए थे। दीवार से लगकर कुछ दूर पर बड़े-बड़े पेड़ थे।

"अच्छा, अगर मैं भागने की कोशिश करूं तो तुम मुझे रोक सकती हो?" अचानक ही तुंगश्री पूछ बैठीं।

शिखरिणी विस्मित होकर उनकी ओर मुड़कर बोली, "भागेंगी! क्यों? एकाएक ऐसी बात मन में क्यों आई?"

"यों ही।"

तुंगश्री को अब कोई सन्देह नहीं रहा कि उन्हें किस तरह यहां लाया गया है। इस बारे में शिखरिणी को कुछ मालूम नहीं है। इसलिए वे कौन हैं, यहां क्यों आई थीं, इस सम्बन्ध में भी वह कुछ नहीं जानती होगी। शक दूर हो जाने पर उन्हें कुछ शान्ति मिली। साथ ही मन में एक प्रश्न भी उठा, जिसका जवाब मन ही मन पाकर वे स्वयं ही कुछ झेंप-सी गईं। शिखरिणी से अपना परिचय छिपा रखने का आग्रह उन्हें क्यों हुआ? शिखरिणी उन्हें अच्छी लगी, पर क्या इसीलिए अपने वास्तविक परिचय को छिपाए रखना ज़रूरी था? अगर वह परिचय महान होता तब तो उसे ज़ाहिर करने का आग्रह होना ही स्वाभाविक था। तो क्या उनको अपने विवेक के सामने अपने आदर्श में कुछ त्रुटियां दिखाई पड़ती हैं? उनके मन का एक भाग तुरन्त तीव्र प्रतिवाद कर उठा—त्रुटि का क्या प्रश्न है? बाहरी लोगों को अपना वास्तविक परिचय हमेशा नहीं दिया जा सकता। उसमें केवल अपने लिए ही नहीं, पार्टी के लिए भी खतरा रहता है। अनमनी होकर तुंगश्री आत्मविश्लेषण कर रही थीं।

"हम पहुंच गए। इसी सफेदवाले मकान में भैया रहते हैं।"

तुंगश्री ने विस्मित होकर देखा—बहुत छोटा, बहुत साधारण-सा एक मकान है। अपरिचित आदमी को यही लगता कि वह नौकरों के लिए है।

अगल-बगल बैरकों जैसे चार कमरे थे। पक्के थे,पर कोई आडम्बर नहीं था।

"तो तुम्हारे उस महल में कौन रहते हैं ?"

"वहां पर हम लोग रहते हैं, चाचाजी रहते हैं और मेहमान रहते हैं। भैया की प्रयोगशाला के कुछ जानवर भी एक ओर रहते हैं।"

तुंगश्री ने विस्मय से पूछा, "प्रयोगशाला ! कैसी प्रयोगशाला ?"

"भैया डाक्टर हैं न ! रिसर्च करते रहते हैं।"

"वे डाक्टर हैं, यह तो मालूम नहीं था। वे बहुत बड़े ज़मींदार हैं,मिल-मालिक हैं, बस इतना ही जानती थी।"

"प्रैक्टिस नहीं करते, इसीसे बहुतों को पता नहीं है कि वे डाक्टर भी हैं। हम पहुंच गए, आइए।"

दरवाज़ा ढकेलकर शिखरिणी ने एक कमरे में प्रवेश किया। पीछे-पीछे तुंगश्री भी अन्दर आईं। कमरा काफी बड़ा था। कोने में टेबल पर एक लड़का काफी झुका हुआ कुछ कर रहा था। शिखरिणी के भीतर आते ही उसने मुड़कर देखा।

"नरेन, भैया कहां हैं ?" शिखरिणी ने पूछा।

"बगल के कमरे में हैं।"

"ओह, ठीक है। आप बैठिए, मैं भैया को खबर देती हूं।"

तुंगश्री एक कुर्सी पर बैठी रहीं। नरेन फिर से अपने काम में जुट गया। शिखरिणी भी उसी समय लौट आई।

"भैया कुछ कर रहे हैं, आपको वहीं बुला रहे हैं। मैं घर जा रही हूं, आप बातचीत कीजिए।"

"फिर मैं लौटूंगी कैसे ?"

"भैया के साथ ही लौट आइएगा। मैं यहां ठहरती, पर चाचाजी अभी खाना खाएंगे, मेरा वहां रहना ज़रूरी है। आप जाइए, भैया आपको बुला रहे हैं।"

शिखरिणी चली गई। तुंगश्री थोड़ी देर बैठी रहीं। एक अदम्य कौतूहल उन्हें बगल के कमरे की ओर खींच रहा था, फिर भी वे बैठी रहीं।

ज़िन्दगी में उन्हें कई किस्म की आफतों से मोर्चा लेना पड़ा है। पुलिस की गोली का सामना करना पड़ा है। एक बार सुन्दरवन में शेर से भी पाला पड़ा था, पर ऐसे रहस्यमय ढंग से किसी आफत का मुकाबला नहीं करना पड़ा था। पुलिस और शेर दोनों से ही उन्होंने भागने की कोशिश की थी, पर इस आदमी के पास से भागने की इच्छा नहीं हो रही थी। उसका सामना करना भी तो कम खतरनाक नहीं था। शायद जान से ही मार दे, कौन जाने ? पर इसी डर से वे बैठी रह गई थीं, यह सच नहीं है। उनका डर कुछ और ही था। उनके मन में आशंका थी कि उन्होंने मन ही मन उस आदमी का जो काल्पनिक चित्र बनाया था, अगर वह वैसा न निकला तो ?

एकाएक तुंगश्री बगलवाले कमरे में चली गईं। उन्होंने देखा कि दीवार के पास मेज़ पर शीशे के बर्तन में कोई चीज़ उबल रही है और हिरण्यबाबू झुककर उसे देख रहे हैं। उनकी पीठ दरवाज़े की ओर थी, इसीलिए तुंगश्री को उनका चेहरा नहीं दिखाई पड़ा। उनका आगमन शायद हिरण्यबाबू नहीं जान पाए। क्योंकि वे झुककर देखते ही रहे। उन्होंने खादी का ढीला कोट और पाजामा पहन रखा था।

एकाएक हिरण्यबाबू ने इधर देखा। उनका चेहरा देखते ही तुंगश्री चौंक पड़ीं। अरे, यह तो स्टेशन का वही कुली है।

आंख मिलते ही हिरण्यगर्भ का चेहरा हंसी से खिल उठा।

"नमस्कार···पधारिए, मैंने कैसा ठगा आपको ?"

"ऐसा करने का मतलब समझ में नहीं आया।"

"आपकी समझ में नहीं आया, सच ? अच्छा, एक मिनट ठहरिए ! वह फट न जाए, है तो हार्डग्लास···फिर भी आंच ज़रा कम कर दूं।"

बुनसेन बर्नर की आंच कम करके हिरण्यगर्भ ने एक घंटी दबाई। नरेन आकर झांकने लगा।

"नहीं, तुम्हारी ज़रूरत नहीं। ग्राफ तैयार हो गया ?"

"अभी तो नहीं।"

"तो पहले उसीको खतम कर लो···कुंज को यहां भेज दो।"

कुंज आ खड़ा हुआ। हिरण्यगर्भ ने कहा, "इनका सामान दक्षिण-वाले कमरे में है शायद, उसे ले आओ। खरिणी से पूछ लो, वह बता देगी।"

कुंज चला गया। तुंगश्री विस्मय से बोल उठीं, "मेरा सामान यहां क्यों मंगा रहे हैं ?"

"यह दिखाने के लिए कि क्यों आज आपको गाड़ी से जाने नहीं दिया गया। हमारी फैक्टरी का नक्शा शायद आपका सूटकेस खोलते ही निकल आएगा और उसके साथ अगर इस चिट्ठी का अर्थ जोड़ लें तो आप समझ जाएंगी कि आपको क्यों रोका गया है।" हिरण्यगर्भ दराज़ से एक चिट्ठी निकाल लाए और उसे पढ़ सुनाया।

"तुंगश्रीदेवी कल सवेरे यहां से रवाना हो जाएंगी। इन लोगों ने आपकी फैक्टरी को डाइनामाइट से उड़ा देने का निश्चय किया है। तुंगश्री-देवी आपकी फैक्टरी का नक्शा लाने जा रही हैं। शायद आपकी फैक्टरी के ही किसी आदमी ने नक्शा तैयार कर रखा है। तुंगश्री अपनी आंखों से सारी चीज़ें देखने के लिए और वह नक्शा लाने के लिए खुद जा रही हैं। वे एक प्रसिद्ध आतंकवादी महिला हैं। उनको पहचानना मुश्किल नहीं होगा, क्योंकि वे सुन्दरी हैं और उनके बायें गाल पर एक छोटा-सा तिल है। देखते ही आप पहचान जाएंगे।"

चिट्ठी पढ़कर हिरण्यगर्भ ने तुंगश्री की ओर देखा।

"हुलिया हूबहू मिल रहा है, तो मैं यह भी उम्मीद करता हूं कि फैक्टरी का नक्शा भी आपके सूटकेस में मिलेगा। अगर वह मिल गया तो आशा है, मेरे व्यवहार का अर्थ भी आपके सामने स्पष्ट हो जाएगा।"

तुंगश्री का चेहरा एकबारगी फक् पड़ गया था, और फिर धीरे-धीरे ठीक हो गया। वे प्रकृतिस्थ होने की कोशिश कर रही थीं। वे समझ रही थीं कि आत्मगोपन की चेष्टा अब व्यर्थ है। सारी बात अब एकाएक उड़ाई नहीं जा सकती, हंसी-मज़ाक से उसे कुछ हल्का-भर किया जा सकता है।

इसीलिए उन्होंने हंसकर कहा, "नहीं, फिर भी इससे यह बात ज़ाहिर नहीं होती कि किस कारण से हिरण्यगर्भ वर्मन जैसे प्रतापशाली व्यक्ति को कुली बनना पड़ा था।"

"तो स्टेशन पर सिपाही भेजकर आपके बाल पकड़कर खिंचवा लाते, क्या वह ठीक होता ?"

कुछ और हंसकर तुंगश्री ने कहा, "अब इतना कैसे कर पाते ? ज़मींदारों का वह ज़माना लद गया।"

"ज़मींदारों के दिन तो शायद लद गए, पर बुद्धिमान लोगों के लिए ज़माना खतम नहीं हुआ है। कभी होनेवाला भी नहीं है। मेरे बहुत-से पूंजीवादी मित्र भेस बदलकर मज़दूर-नेता बन गए हैं, यह तो मैं खुद ही देख रहा हूं, आप लोग भी उनके चक्कर में आ गए हैं।"

हिरण्यगर्भ की आंखों में हंसी की जो आभा दमक उठी, वह तेज़ छुरे की धार नहीं थी, वह कुछ प्रसन्न सूर्यकिरण जैसी थी। उसे देखकर तुंगश्री केवल आश्वस्त हुई हों, ऐसा नहीं, उनकी ओर कुछ आकृष्ट भी हुईं। पर हिरण्यगर्भ अन्य ज़मींदारों की तरह शून्यगर्व नहीं हैं, इसका सबूत पाकर उनके मन का एक हिस्सा दुःखी हो गया। ऐसे व्यक्ति उनकी पार्टी में न आकर विपक्षी रह गए, यह कैसी बात है। पर इसका कारण भी उन्हें मालूम है। इसका कारण वर्ग-भेद है, धनियों का दम्भ। तुंगश्री की आंखें चमक उठीं। हिरण्यगर्भ को लगा कि शायद उनकी बात से इस भद्र महिला को कुछ ठेस पहुंची है। यह सोचते ही उन्हें लज्जा-सी महसूस हुई। इससे तो अपने आभिजात्य को ही चोट पहुंचती है। कुछ मुस्कराकर उन्होंने कहा, "देखिए, हमारा परिचय अधिक आगे बढ़ने के पहले ही मैं आपसे एक बात कह देना चाहता हूं, आपको इस तरह से धोखा देकर यहां लाया गया है, इसके लिए मैं माफी मांगता हूं। आप यकीन मानिए कि व्यक्तिगत रूप से आपसे मेरा कोई द्वेष नहीं है। आपके विषय में माथा-पच्ची करने की न तो मुझे इच्छा ही है, न मेरे पास समय ही है। उफ्...शायद फिर मेरी बात कुछ कड़वी लग रही है।" हिरण्यगर्भ ज़ोर से हंस पड़े,

फिर बोले, "देखिए, मेरा धंधा विज्ञान का है। बिना लाग-लपेट के सच बात ही मेरे मुंह से निकल पड़ती है, मुलम्मा चढ़ाकर बात करना मुझे भी आता है, अभिनय भी अच्छा कर सकता हूं, इसका प्रमाण तो आपको मिल ही चुका है, पर इसकी मुझे आदत नहीं है, माफ कीजिएगा। हां, तो मैं कह रहा था कि आज आपके साथ जो अभद्र व्यवहार हुआ है, विश्वास कीजिए, वह सिर्फ फर्ज़ पूरा करने के लिए किया गया है। लड़ाई के मैदान में एक सैनिक दूसरे के खिलाफ हथियार उठाता है, मैंने भी वही किया है। यद्यपि आजकल की सेनाओं की मनोवृत्ति ऐसी ही है या नहीं, यह मैं नहीं जानता; पर "आल् क्वाइट ऑन द वेस्टर्न फ्रंट" पुस्तक में इसी मनोवृत्ति का आभास मिलता है। आपने गीता पढ़ी है? नहीं पढ़ी? गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जिस मनोवृत्ति से स्वजनों के विरोध में शस्त्र उठाने के लिए कहा था, मेरी मनोवृत्ति कुछ वैसी ही है, अर्थात् निष्काम कर्तव्य किए जा रहा हूं।"

"आपका कर्तव्य क्या है?"

"मैं जिसे अच्छा समझता हूं, उसकी रक्षा ही मेरा कर्तव्य है।" कुछ रुककर वे फिर बोले, "ज़रूरत पड़ने पर उसके लिए लड़ना भी।"

"आप क्या अच्छा समझते हैं, इसका कुछ आभास मिल सकता है? क्योंकि हमने भी तो उसी उद्देश्य के लिए जान की बाज़ी लगा रखी है।"

तुंगश्री का सूटकेस और बिस्तर लेकर कुंज अन्दर आया।

"उस मेज़ पर रख दो और तुम जाओ। देखना, ज़रा होशियारी से, कहीं फ्लास्क मत तोड़ देना।"

कुंज मेज़ पर सामान रखकर चला गया। हिरण्यगर्भ तुंगश्री की ओर देखते हुए बोले, "फैक्टरी का नक्शा निकाल दीजिए।"

तुंगश्री दीप्त दृष्टि से थोड़ी देर देखती रहीं, फिर बोलीं, "नहीं दूंगी।"

लगभग साथ ही साथ हिरण्यगर्भ ने घंटी दबा दी। फिर नरेन ने आकर दरवाज़े से झांका।

"कुंज को ज़रा फिर से बुला दो। तुम्हारा ग्राफ कितना आगे बढ़ा?"

"कुछ आंकड़े मिल नहीं रहे हैं, उसी दराज़ में तो रखे हुए थे।"

"आंकड़े नहीं मिल रहे हैं ? क्या कह रहे हो ? आंकड़े खोज नहीं सके, तो कल तुम्हें कुत्तों से नोंचवा दूंगा।" अचानक हिरण्यगर्भ की दृष्टि भयानक हो उठी।

नरेन तुरन्त वहां से चला गया और उसके जाने के साथ ही हिरण्यगर्भ की आंखों में कौतुक चमक उठा। उन्होंने फिर तुंगश्री की ओर देखते हुए कहा, "ये साहब एक महान कम्युनिस्ट हैं। गुटबाज़ी में उस्ताद, पर हैं बिलकुल निकम्मे।"

तुंगश्री चुप रह गईं। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। कुंज फिर दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ।

"कुंज देखो, इस सूटकेस को खोलना है। इसकी चाभी नहीं मिल रही है। तोड़कर या जैसे भी हो, इसे खोल लाओ।"

कुंज चुपचाप सूटकेस लेकर बाहर चला गया। तुंगश्री की ओर एक नज़र डालकर हिरण्यगर्भ ने मुस्कराते हुए कहा, "चाभी दे देतीं, तो अच्छा ही रहता ; जब आपको जाने से रोक लिया गया है तो आपको समझना चाहिए था कि आपसे नक्शा लिए बिना छोड़ा नहीं जाएगा।"

"यह तो मैं समझ गई हूं, आपकी दौड़ कहां तक है, मैं यही देखना चाहती हूं।"

"तो देखिए।"

हिरण्यगर्भ ने जाकर बुनसेन बर्नर की आंच बढ़ा दी, फिर एकाएक उनकी ओर घूमकर बोले, "हां, आपके प्रश्न का उत्तर तो रह ही गया। आप मेरे आदर्श को जानना चाहती हैं। मेरा आदर्श भारतीय आदर्श है, कोई नई चीज़ नहीं।"

तुंगश्री जैसे जल उठीं, "भारतीय आदर्श के नाम से आपका क्या मतलब है, यह मुझे मालूम नहीं; पर इसी भारतीय आदर्श का मुखौटा लगाकर मुट्ठी-भर आदमी युगों से जनता पर जो अनगिनत अत्याचार करते आए हैं, उसका वर्णन तो इतिहास से ही मालूम हो जाएगा। अगर यही आपका

आदर्श है······"

"नहीं, यह मेरा आदर्श नहीं है। क्योंकि वह भारतीय आदर्श नहीं है। जान-बूझकर किसीको सताना भारतीय आदर्श नहीं हो सकता। 'जान-बूझकर' शब्द याद रखिए, क्योंकि अनजाने में हम सभी किसी न किसी-के ऊपर कुछ न कुछ अत्याचार करते ही हैं। ज़िन्दा रहने का मतलब ही यह है, दूसरों को कुछ वंचित रखना। भारतीय आदर्श इस क्षेत्र में भी हरएक कदम पर सावधान करता आ रहा है—'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा'—भारतीय आदर्श का मूलमंत्र कहा जा सकता है।"

"पर इतिहास में हम जो पढ़ते हैं, वह तो······"

"गलत पढ़ते हैं। अंग्रेज़ी में लिखी हुई किताबों में भारत का इतिहास नहीं है। भारत का इतिहास तो रामायण, महाभारत, उपनिषद्, जातक, पुराण, लोककथाओं, यहां तक कि हमारी दैनिक जीवन-यात्रा के हर पहलू में भरा है; और जिनको हम अशिक्षित जनसाधारण कहा करते हैं उनके आचार-व्यवहार, बातचीत और उनके सामाजिक जीवन के हर रूप में लक्षित होता है। यह इतिहास अगर आप पढ़ें तो आप देख लेंगी कि भारतीय इतिहास में नीचता का स्थान नहीं है।"

तुंगश्री के होंठों पर एक तीखी मुस्कराहट उभर आई, "तो आप जो यह मिल खड़ी करके लाखों रुपये बटोर रहे हैं और इतने मज़दूरों को कम पैसे देकर आप लोगों ने उन्हें गरीब बना रखा है, इसे भी मैं एक भारतीय आदर्श के नमूने के रूप में ले सकती हूं?"

कुछ हंसते हुए हिरण्यगर्भ थोड़ी देर देखते रहे, फिर बोले, "आपसे मुझे यह उम्मीद नहीं थी। हमारी मिल से अगर इतना मुनाफा होता तो आप उसे डाइनामाइट से उड़ाने न आतीं, शायद एक अच्छी-सी नौकरी मिलने की उम्मीद लेकर आतीं और तब मैं दूसरे अमीरों की तरह आप सबको खरीद सकता था, पर मेरा उद्देश्य यह नहीं है। औरों की तरह ही चलते रहते तो हमारे इतने दुश्मन नहीं खड़े होते। हमने कुछ नया प्रयोग किया है, जिससे बहुतों के स्वार्थ पर चोट पहुंची है, इसीलिए हमारे

विरुद्ध यह अभियान चलाया जा रहा है।"

तुंगश्री कुछ विस्मित हो गईं। तो क्या हिरण्यगर्भ के बारे में उन्होंने जो कुछ सुना था, वह गलत है ? यहां की पार्टी के लोगों ने उन्हें जो खबर भेजी थी, और जो रिपोर्ट मिली थी, क्या वह निराधार ही थी ? इन्होंने मिल बनाई है तो मुनाफे के लिए नहीं, यह तो बड़ा ही युक्तिहीन दावा है। शायद ये महाशय ढोंग रच रहे हैं।

"आप मज़दूरों को कम पैसे नहीं देते थे ?"

"देते थे, पर उनसे हम काम भी कम लेते थे। हमारी मिल में जितना कपड़ा बनना सम्भव है, हमने उतना कभी नहीं बनवाया। अपनी ज़मींदारी के लोगों के कपड़े का कष्ट दूर करना ही हमारा उद्देश्य था। हमारे पुरखे जैसे प्रजा का कष्ट दूर करने के लिए तालाब खुदवाते थे, विद्यादान के लिए पाठशालाएं खुलवाते थे, मैं भी वैसे ही विज्ञान की सहायता से इनका कपड़ों का अभाव दूर करने की चेष्टा कर रहा था। कपड़े बेचकर मुनाफा कमाना मेरा उद्देश्य नहीं था। मुझे उम्मीद थी कि जिनके लिए कपड़े बनाए जा रहे हैं, वे इस यंत्र की मदद से उसे खुद ही तैयार कर लेंगे। मैंने उन्हें मशीन देकर उनकी सहायता की है और थोड़े-बहुत पैसे देकर भी मदद करूंगा, पर आप लोगों की कृपा के कारण यह हो नहीं पाया। मैंने मिल बन्द कर दी है। अब आप कारखाना मी डाइनामाइट से उड़ा देना चाहती हैं, पर यह मैं नहीं होने दूंगा।"

हंसी से दमकती आंखों से हिरण्यगर्भ उनकी ओर देखने लगे।

कुंज टूटा सूटकेस लेकर भीतर आया।

"ताला तोड़ना पड़ा सरकार।"

"अच्छा, रख दो। हां, सुनो, खरिणी के पास से मेरा नया सूटकेस मांग लाओ। कहीं चाभी मत भूल आना।"

कुंज चला गया। हिरण्यगर्भ तुंगश्री का सूटकेस खोलकर कोना-कोना ढूंढ़ने लगे। कुछ नहीं मिला। बिस्तर खोलकर देखा, उसमें भी कुछ नहीं मिला। तकिये का गिलाफ खोल रहे थे, तभी तुंगश्री ने कहा, "आपकी

वह क्या चीज़ उबल रही है, पहले उसे देख लीजिए, वह तो जलकर राख हो गई।"

फ्लास्क की ओर एक नजर देखकर हिरण्यगर्भ ने कहा, "वह ठीक है। जब उसका रंग एकदम उड़ जाएगा तभी उसकी निगरानी करनी पड़ेगी। जेल्डहाल तैयार हो रहा है न!"

बिस्तर में भी कुछ नहीं मिला।

तुंगश्री की ओर चकित दृष्टि से देखते हुए हिरण्यगर्भ बोले, "कुंज के आने के पहले ही सब चीज़ें संभाल लेना चाहता हूं। उसके सामने आपको लज्जित करने की इच्छा नहीं है।"

"मुझसे ज़्यादा तो आपके लज्जित होने की बात है, क्योंकि आपको कुछ मिला नहीं।"

हिरण्यगर्भ का चेहरा हंसी से खिल उठा, "वह चीज़ कहां रख छोड़ी है? बताइए तो!"

तुंगश्री चुप रह गईं। केवल उनकी आंखें चमकती रहीं। जल्दी से बड़ी निपुणता के साथ हिरण्यगर्भ ने तुंगश्री का बिस्तर बांध दिया। सूट-केस का सामान ठीक कर दिया, फिर तुंगश्री की ओर देखते हुए वे बोले, "आप खड़ी क्यों रह गईं, बैठिए न! यहां अच्छी कुर्सी नहीं है। उस ऊंचे स्टूल पर बैठने में शायद आपको दिक्कत होगी। आपके लिए कुर्सी मंगाता हूं।"

"आप परेशान न हों। मैं स्टूल पर ही बैठ जाती हूं।"

"हां आराम से बैठ जाइए, आपसे कुछ कहना है। बस एक मिनट रुक जाइए, मैं दो-चार 'सब-कल्चर' कर लूं नहीं तो टाइफायड के कीटाणु मर जाएंगे।"

हिरण्यगर्भ एक आलमारी की ओर बढ़ गए। उसमें से लोहे की जाली का बना हुआ एक चौकोर बक्स निकाला। उसमें से अगरट्यूब लेकर वे इन्क्यूबेटर के पास आए फिर इन्क्यूबेटर से भी जाली का एक बक्स निकाला। इसके अन्दर भी एक अगरटयूब था। फिर उन्होंने एकाएक स्विच

दबाकर एक ऐसी तेज़ बत्ती जलाई कि आंखें चौंधिया गईं। तब प्लैटिनम-लूप को बुनसेन बर्नर में अच्छी तरह से जला दिया। वह जलकर लाल हो गया। फिर जो अगरट्यूब उन्होंने इनक्यूबेटर से निकाला था, उसमें से प्लैटिनम-लूप की सहायता से बड़ी सावधानी के साथ कीटाणु निकालकर पहला अगरट्यूब खोलकर एक-एक करके अगर में उन्हें लगा दिया। फिर सबके सब इनक्यूबेटर में बन्द करके तेज़ बत्ती बुझा दी।

"हां, अब कहिए। पहले मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूं। आप मेरे साथ दुश्मनी क्यों कर रही हैं ? आपकी सारी बातें मुझे मालूम हैं, इसीलिए आपके व्यवहार से मुझे आश्चर्य होता है। देश का कल्याण हो, यह आप भी चाहती हैं, मैं भी चाहता हूं, इसमें विरोध कहां है ? फिर एकाएक मुझे दुश्मन समझने की वजह क्या है ?"

"धनी-मात्र को ही मैं दुश्मन समझती हूं, क्योंकि वे मुल्क के दुश्मन हैं।"

"यह बात कहां तक युक्तियुक्त है ? सुन्दरी होने के कारण कोई औरत पतिता ही होगी, हर बुद्धिमान व्यक्ति चोर ही होगा, बलवान व्यक्ति डाकू ही होगा, यह आपका अद्भुत तर्क है !"

"उपमा देकर बात करना मेरी प्रकृति में नहीं है, पर आपने जब उपमा दी है तो मैं भी उपमा से ही आपको जवाब दूंगी। सभी सांप विषाक्त नहीं होते, पर सांप-मात्र को ही हम घृणा से देखते हैं और मौका पाते ही उसे मार डालते हैं।"

"ठीक है, पर सांप की आकृति में एक ऐसी विशेषता है, जिसे देखकर स्पष्ट मालूम हो जाता है कि वह सांप है। मुझमें अमीरों जैसी कौन-सी खासियत दिखाई पड़ती है ?"

"अमीरी की खासियत तो आपके चारों ओर फैली हुई है। इतना विशाल महल, ऐसा शानदार बगीचा, इतनी बड़ी ज़मींदारी, इतनी भारी मिल······"

"इनमें से एक भी मेरा नहीं है, यह सभी हमारी कुलदेवी जगद्धात्री-

देवी का है, मैं उनका सेवक-मात्र हूं।"

तुंगश्री के होठों पर एक व्यंग्य-भरी हंसी दिखाई पड़ी, "पर जगद्धात्री-देवी सम्पत्ति को भोगती नहीं। सम्पत्ति का भोग करते हैं आप।"

"क्या आप ठीक-ठीक जानती हैं?"

"फिर इतनी बड़ी सम्पत्ति कौन भोगता है?"

"प्रजा। सम्पत्ति की सारी आमदनी उसीके कल्याण पर खर्च होती है। मैं उसकी तरफ से खर्च करता हूं, पर यह सब उसीके लिए खर्च होता है।"

"आप अपने लिए कुछ भी खर्च नहीं करते?"

"एक कौड़ी भी नहीं। उस बड़ेवाले मकान में भी मैं नहीं रहता। आप यहां जो देख रही हैं, अवश्य यह सब मेरा है और मेरी अपनी कमाई का है।"

"अपनी कमाई? सुना है कि आप प्रैक्टिस नहीं करते।"

"प्रैक्टिस थोड़ी-बहुत करता हूं, पर उसके बदले पैसा नहीं लेता। किसी और तरकीब से मैंने अच्छी रकम कमा ली है।"

हिरण्यगर्भ की आंखें हंसी से प्रदीप्त हो उठीं। अपनी करतूत छिपाकर शरारती बालक का चेहरा जैसे हो जाता है, उनका चेहरा भी कुछ वैसा ही दिखने लगा।

तुंगश्री अनमनी हो गई थीं। उन्होंने ऐसी अप्रत्याशित परिस्थिति की कल्पना भी नहीं की थी। उस इलाके से वे अच्छी तरह परिचित नहीं थीं। वे पूर्वी बंगाल में काम किया करती थीं। थोड़े दिन चटगांव में भी रहीं, एकाएक सारा वर्तमान जैसे उनकी आंखों के सामने से लुप्त हो गया। हिरण्यगर्भ की आखिरी बातें उनके कानों तक पहुंची ही नहीं। चटगांव के पहाड़तली क्लब के पास प्रीति वाददार पोटैशियम सायनाइड खाकर शहीद हो गई थीं। उसे बम से चोट भी लगी थी। कितनी ही बार उसका खून से लथपथ चेहरा तुंगश्री की कल्पना में उभर आता था। स्त्रियां भी देश के लिए निर्भय होकर अपना प्राण दे सकती हैं, इसे प्रमाणित करने के लिए

ही शायद उसने सायनाइड खाया था। वह चाहती तो भाग भी सकती थी। यह बात इस समय क्यों याद आई? जब उन्होंने यह सोचा तो इसका योगसूत्र भी एकाएक स्पष्ट हो गया। स्त्रियां भी निर्भय होकर देश के लिए प्राण दे सकती हैं, इसीको प्रमाणित करने के लिए प्रीतिलता ने जैसे अपनी जान दे दी थी, उसी तरह क्या ये सज्जन भी यही प्रमाणित करना चाहते हैं कि पूंजीपति होकर भी जनता का मित्र होना सम्भव है। ऐसे आदमी को केशवसामन्त न जानते हों, यह कैसे सम्भव हो सकता है?

"आप शायद इससे सहमत नहीं?"

तुंगश्री अपने-आपमें लौट आई, "किस बारे में कह रहे हैं आप?"

"यही मेरे पैसे कमाने के ढंग के बारे में। पर करूं भी तो क्या? बैंक में गुज़ारे लायक अगर कुछ पैसे न हों तो इस ज़माने में ब्राह्मणत्व कायम रखना भी मुश्किल हो जाता है। खासकर हमारे जैसे रिसर्च के पीछे पागल लोगों के लिए। सरकार या समाज कोई भी मुझे सहायता नहीं देगा। अब न वे राम हैं, न वह अयोध्या, सो वे वशिष्ठ भी नहीं रह सकते। वशिष्ठ को तो अब अपने हाथ से कमाए हुए बैंक-बैलेंस का ही सहारा है, इसलिए मेरी तरकीब बहुत..."

"सुनूं तो सही, क्या तरकीब है! हां, अगर शत्रु-पक्ष को बताने में आपको आपत्ति न हो।"

"कोई आपत्ति नहीं। मैं किसीकी दुश्मनी से डरता भी नहीं। आप लोग तो बाहर के हैं, दुश्मनी करेंगे भी, तो कितनी कर सकते हैं? मेरे चाचाजी ही मेरे इतने बड़े विरोधी हैं, जब उन्हें संभाल रखा है तो आप लोगों को भी..." हिरण्यगर्भ फिर हंस पड़े।

"तो आपकी कमाई की तरकीब क्या है, बताइए?"

प्रश्न करके तुंगश्री कुछ झेंप-सी गईं। ऐसा कौतूहल प्रकट करना कुछ अशोभन हो रहा है।

"बहुत सीधी-सी तरकीब है, कुछ पेटेण्ट दवाओं के फारमूले बेच दिए हैं। दस फारमूले बेचकर केवल एक लाख रुपया मिला है। उसे लेकर यदि

मैं व्यापार कर पाता तो इससे बहुत ज़्यादा कमा सकता था, पर मैं क्षत्रिय-कुल में जन्मा हूं, वैश्य होने की इच्छा मुझे नहीं है। ऊपर से ब्राह्मण बनने का लोभ है।"

"तो उसी रुपये के सूद से आपका काम चलता है ?"

"हां, किसी तरह। और भी अच्छी तरह से चल सकता था, पर इस प्रयोगशाला को तैयार करने में मेरा करीब बीस हज़ार रुपया निकल गया।"

तुंगश्री पीछे की मेज़ से टेक लगाकर बैठ गई और कोहनी भी टेबल पर टिका दी। अपलक दृष्टि से हिरण्यगर्भ के चेहरे को थोड़ी देर तक देखती रहीं, फिर बोलीं, "यह इतना असम्भव है कि कहानी जैसा लगता है।"

"मतलब ?"

"इसपर अविश्वास करने का मन नहीं होता।"

इस बात के साथ ही एक घटना हो गई। तुंगश्री के पीछे से एक गेहुं-अन सांप फुफकार उठा। तुंगश्री तड़पकर उठीं तो गिर पड़ीं, हिरण्यगर्भ ने उन्हें पकड़कर उठाया।

"मत डरिए, इसके विषदन्त नहीं हैं। यह निकला कब···? भूख लगी होगी। अरे, उसके बक्स का ढक्कन खुला है!"

हिरण्यगर्भ ने आगे बढ़कर सहज ही सांप को पकड़ लिया और टेबल के एक छोर पर रखे बक्स में बन्द कर दिया। अस्त-व्यस्त तुंगश्री हाथों से अपनी आंखें ढककर स्टूल पर बैठ गई थीं। उनके हाथ-पांव कांप रहे थे और दिल में जैसे हथौड़े चल रहे थे। जिन्दगी में उन्होंने कई तरह की भयावनी परिस्थितियों का सामना किया है, पर इस तरह वे कभी नहीं डरी थीं। केवल भयभीत ही नहीं, वे कुछ लज्जित भी हो गई थीं।

हिरण्यगर्भ ने सांप को बन्द करके तुंगश्री की ओर देखा, पर उनकी निगाह ज़मीन पर पड़े कागज़ के एक तह किए हुए टुकड़े पर जा पड़ी। उन्होंने झुककर उसे उठा लिया। उसे खोलकर देखते ही उनका चेहरा ख़ुशी

से खिल उठा।

"ओह, तो नक्शा आपके कपड़ों के अन्दर ही था? मुझे भी ऐसा ही अन्दाज़ था, पर आपसे कहते संकोच हो रहा था। मैं सोच रहा था कि खरिणी का सहारा लूं, खैर भुजंगबाबू ने इस समस्या को हल कर दिया।"

तुंगश्री ने जब नज़रें उठाईं तो उनकी आंखों में आग-सी भभक रही थी और उनके होंठ स्फुरित हो रहे थे।

"किसी भद्र महिला को घर में लाकर उसपर सांप छोड़ देना कहां की सभ्यता है, ज़रा पूछ सकती हूं?"

"मैं आपसे माफी मांगता हूं, पर यकीन करें, सांप की मुझे बिलकुल याद ही नहीं थी। यह तो मैंने सोचा तक नहीं था कि वह निकल भी पड़ेगा।"

"सांप क्यों पाल रखा है?"

"इसपर मैं एक प्रयोग कर रहा हूं। इसे टाइफायड होता है या नहीं, यह देखने के लिए इसे टाइफायड के कीटाणुओं का इंजेक्शन दे रखा है।"

कुंज एक सूटकेस लेकर आ पहुंचा। चाभी हिरण्यगर्भ के हाथ में देते हुए बोला, "दीदी पूछ रही हैं कि क्या ये अभी खाना खाएंगी?"

"ज़रूर खाएंगी। हम अभी आ रहे हैं, तुम खाना लगाने के लिए कह दो।"

कुंज चला गया।

हरण्यग र्भ तुंगश्री की ओर देखते हुए बोले, "मुझे भी बहुत भूख लगी है, आप पांच मिनट रुक जाइए, मैं अपना खाना खा लूं, फिर आपको ले जाऊंगा।"

"आप खाना भी यहीं खाते हैं?"

"हां, खुद ही बनाकर खाता हूं। कोई खास चीज नहीं बनाता। दो अंडे उबाल लेता हूं, दो पीस रोटी और एक गिलास दूध। बगल के कमरे में ही मेरा सारा इंतजाम है, आप चलेंगी?"

तुंगश्री ने तिरछी नज़र से एक बार सांप के डिब्बे की ओर देखकर

दूसरे कमरे में जाने का निश्चय कर लिया।

बगल के कमरे में जाते ही हिरण्यगर्भ ने दूसरा बुनसेन बर्नर जला दिया, फिर दीवार की जाली खोलकर दूध और अलमोनियम का छोटा-सा पैन निकाला। पैन में दूध डालकर एक छोटी-सी लोहे की तिपाई पर रखा और उसीके नीचे बर्नर रख दिया।

"आप इस कुर्सी पर बैठिए। तब तक गाना सुनिए, शायद दिल्ली मिल जाए।"

कोने में एक छोटा-सा रेडियो रखा था। दिल्ली से एक अच्छा-सा गीत आ रहा था।

"बैठिए, मुझे ज़्यादा देर नहीं लगेगी, सिर्फ पांच मिनट। अंडे उबले हुए हैं।"

वे उबले हुए अंडों को तोड़ने ही जा रहे थे कि तुंगश्री बोल पड़ीं, "पहले हाथ धो लीजिए।"

"हां, आपने ठीक कहा।"

एक तरफ दीवार में चीनी मिट्टी का बेसिन रखा था। नल भी लगा था। साबुन से हाथ धोते हुए हिरण्यगर्भ ने कहा, "यह गैस वगैरह बनाने में मेरा बहुत रुपया खर्च हो गया।"

तुंगश्री कुछ बोली नहीं। दूध में उबाल आ गया था। उसे उतारकर और बर्नर बुझाकर हिरण्यगर्भ अंडा छीलने लगे। स्तब्ध बैठीं तुंगश्री यह देखती रहीं।

दूर दिल्ली से आनेवाला गीत वातावरण को आकुल करने लगा। पांच मिनट के अन्दर ही हिरण्यगर्भ का खाना खत्म हो गया। और इसी बीच तुंगश्री ने अपने को कुछ संभाल लिया। अप्रत्याशित रूप से फिसलकर गिर जाने पर लोगों में जैसा दैहिक विपर्यय हो जाता है, उनके मन में भी वैसा ही कुछ हुआ तो वे न झेंपी थीं, बल्कि कोई अवलम्बन पाकर दिग्भ्रमित-सी रह गई थीं। सांप मानकर अंधेरे में जिसे मारने के लिए उन्होंने डंडा उठाया था, एकाएक जैसे हवा के झोंके से वह केवल हट ही नहीं गया,

अप्रत्याशित रूप से एक रोशनी भी उसपर आ पड़ी, तो देखा कि वह सांप नहीं है बल्कि फूलों की एक माला है। शायद कोई सोचे कि इसपर उन्हें खुश होना चाहिए था, पर वैसा नहीं हुआ। एक असहाय आक्रोश उनके सारे मन को कड़वा कर गया। वे सोचने लगीं कि उन्होंने गलत देखा है, गलत समझा है, वह फूलों की माला नहीं है, सांप ही छद्मवेश में माला बना हुआ है, जिसे वे पहचान नहीं पा रही हैं। उनकी सारी बुद्धि उस छद्मवेश की कृत्रिमता को दूर करने के लिए एकाग्र हो उठी। एक के बाद एक विस्मय की चकाचौंध से उनका स्तरी अस्तित्व अभिभूत ही उठा था। अब धीरे-धीरे उसकी तीव्रता घटने लगी। पांच मिनट चुपचाप बैठने के बाद वे प्रकृतिस्थ हो गईं, कम से कम उन्हें तो ऐसा ही लगा।

"चलिए, अब चलें।"

प्रयोगशाला से निकलते ही हिरण्यगर्भ फिर रुक गए···"ओह, ज़रा रुकिए, आपका सामान तो मंगा लूं। कुंज, ओ कुंज !"

कुंज निकल आया।

"इनका सूटकेस, बिस्तर और नया सूटकेस इनके कमरे में पहुंचा दो।"

कुंज के जाते ही नरेन आया।

"इस बार मुझे माफ कर दीजिए, अब से मैं आंकड़े अच्छी तरह संभाल-कर रखूंगा। मेज़ पर ही कागज़ रखा था, शायद हवा में उड़ गया हो।"

"पेपरवेट की कमी तो नहीं है। कुछ पहले तुमने कहा था कि दराज़ में रखे थे।"

उत्तर में नरेन हाथ मलता रहा।

"वह ग्राफ जब तक तैयार न हो, तब तक आज तुम्हें छुट्टी नहीं मिलेगी।"

"आंकड़े मिलते ही पूरा कर दूंगा। युरिपर तो हो गया है, शुगर के आंकड़े मिलते ही ग्राफ तैयार कर दूंगा।"

आग्नेय दृष्टि से हिरण्यगर्भ थोड़ी देर उसकी ओर देखते रहे, फिर तुंगश्री की ओर देखकर बोले, "एक मिनट रुक जाइए, इसे आंकड़े देकर

आ जाता हूं।"

नरेन के साथ-साथ वे अन्दर चले गए। बाहर खड़ी तुंगश्री को सुनाई पड़ा—"ये भद्र महिला आई हैं, इसीसे आज तुम बच गए, नहीं तो आज तुम्हें बता देता। यह लो मेरी कापी, फिर मत खो देना।"

क्षण-भर में ही वे बाहर निकल आए।

"अब चलिए, मैंने बहुत देर कर दी।"

हिरण्यगर्भ की आवाज़ में क्रोध का चिह्न-मात्र न था।

फिर दोनों बगीचे के बीच से चलने लगे। कुछ देर चुप रहने के बाद तुंगश्री ने कहा, "आप कहते हैं कि आपकी सारी सम्पत्ति प्रजा के कल्याण में ही खर्च होती है, तो वह सम्पत्ति प्रजा को ही क्यों नहीं दे देते?"

"जो चीज़ मेरी नहीं है, उसे दूसरों को दान कैसे कर सकता हूं?"

"सम्पत्ति आपकी नहीं, तो किसकी है?"

"कह तो दिया, जगद्धात्रीदेवी की है। मैं उनका सेवक-मात्र हूं।"

"आप वैज्ञानिक होकर भी देवी-देवता में विश्वास रखते हैं?"

"क्या आप समझती हैं कि वैज्ञानिक को नास्तिक ही होना चाहिए? फिर इसमें विश्वास-अविश्वास का प्रश्न ही नहीं उठता। यह हमारे पुरखों की कमाई हुई सम्पत्ति है, वे इसे देवताओं के नाम पर छोड़ गए हैं। मैं उन देवताओं के सेवक की हैसियत से ही इसमें हस्तक्षेप कर सकता हूं। आश्चर्य है कि इतनी आसान-सी बात आपकी समझ में नहीं आती। उस सम्पत्ति को मैं बेच नहीं सकता, या दान नहीं कर सकता।"

मुस्कराकर तुंगश्री बोलीं, "आप चाहें तो अपने किसानों में से एक सेवक चुन सकते हैं।"

"कैसे?"

"वोट लेकर।"

"तब तो जगन्नाथ मारवाड़ी सारे वोट खरीद लेगा। अगर मैं कहूं तो यह कुछ आत्मप्रशंसा-सी लगेगी, पर मैं यह बात कहने के लिए मजबूर हूं, कि मैं जगन्नाथ मारवाड़ी से अच्छा आदमी हूं।"

"तो प्रजातंत्र में आपकी कोई आस्था नहीं है ?"

"कागज़ी रूप में तो है, पर कार्यक्षेत्र में नहीं। मानव-समाज अभी तक इतना उन्नत नहीं हुआ है, इसीलिए लोकतंत्र के नाम पर तानाशाही चल रही है। चरित्रवान तथा प्रतिभावान नहीं, बुद्धिमान और धनी ही प्रभुत्व चाहते हैं और पा भी रहे हैं। माफ कीजिएगा, आप जिन मज़दूरों के लिए लड़ने आई हैं, वे इतने मूर्ख हैं कि किस बात में अपनी भलाई है, इसका ज्ञान भी उन्हें नहीं है। लालची जानवरों की तरह ये भी बड़ी आसानी से मज़दूर नेता कहलानेवाले मतलबी लोगों के फन्दे में फंस जाते हैं। ये मतलबी नेता सर्वहारा मजदूरों के कोई नहीं हैं, ये तो सर्वग्रासी धनिकों के ही एजेण्ट हैं। मैं सबकी बात तो नहीं कह सकता, पर मैं जिन्हें जानता हूं उन्हींके बारे में कह रहा हूं। व्यक्तिगत रूप से आप शायद किसी आदर्श से ही प्रेरित होकर आई हैं, जिस दल ने आपके इस आदर्श को चारा बनाकर आपको फंसाया है, उसका असली रूप शायद आपको मालूम नहीं।"

उनकी अन्तिम बात सुनकर तुंगश्री का सारा शरीर गुस्से से जल उठा। पर आत्मसंवरण करके उन्होंने शांत स्वर में ही कहा, "आपने जो कुछ कहा शायद वह ठीक हो, पर यही ज़माने की हवा है, इसे आप कैसे रोक सकते हैं ?"

"बाहुबल या बुद्धिबल से। आप यहां कैसे लाई गई हैं ?" एक तीखी व्यंग्य-भरी हंसी हिरण्यगर्भ के होंठों पर उभर आई। उनकी भौहें ऊपर चढ़ गईं।

"मैं आपकी बुद्धि की प्रशंसा तो कर रही हूं, पर आपकी युक्ति को नहीं मान सकती। आपको अगर पूंजीपति···"

"दुहाई है ! ऐसा मत कीजिए। आप जिसे पूंजीपति समझती हैं, मैं उनमें से नहीं हूं। उलटे आप मुझे उनका विरोधी कह सकती हैं। पर आप लोग जिस तरह से पूंजीवादी समस्या को हल करना चाहते है, मैं उसका भी विरोधी हूं। मैं कहता हूं, आप लोग पूंजीपतियों का विरोध करके एक तरह से उन्हें खामखाह सम्मान दे रहे हैं। लगता है, आप लोग भी उसी

श्रेणी के हैं। उनके हिस्से में ज़्यादा पड़ा है, इसीपर आपको आपत्ति है। रुपयों का हिस्सा बराबर हो जाने पर आप लोगों के बीच कोई झगड़ा नहीं रह जाएगा।"

"तो आप किस तरह इस समस्या को हल करना चाहते हैं?"

"मैं चाहता हूं, यह कहना गलत होगा। हमारी प्राचीन सभ्यता जिस तरह से समस्या को हल करना चाहती थी, मैं भी उसी तरह से सोचने की कोशिश करता हूं। हमारे देश में अच्छी राह पर रहकर पैसा कमाने में कोई रुकावट नहीं थी। किसीकी कमाई हुई सम्पत्ति को कोई छीनने की चेष्टा नहीं करता था। पर एक बात थी, वह यह कि केवल अमीर होने से ही सम्मान नहीं मिलता था। आज साहित्य, कला, धर्म सबमें धनियों का ही बोलबाला है। प्राचीन समाज में मानवता ही सम्मान का मानदंड थी। उस समाज में त्यागी के लिए ही श्रेष्ठ आसन था, भोगी के लिए नहीं। दरिद्र ब्राह्मण समाज के शिरोमणि होते थे। राजा जनक जब महर्षि जनक हुए, तभी उन्हें सम्मान मिला। कान्यकुब्ज के राजा गाधिनन्दन का इतना सम्मान तो नहीं था, पर जब वह तपस्या करने के बाद विश्वामित्र बने तभी उन्हें सम्मान मिला। सुन्दरी गणिका आम्रपाली तभी श्रद्धेया बन सकी जब वह भिक्षुणी बनी। ऐसे असंख्य दृष्टान्त आपको मिलेंगे। उन्हें यह बात मालूम थी कि केवल धन से ही मनुष्य तृप्त नहीं हो सकता। मान भी सभी चाहते हैं, समाज में दूसरे से श्रद्धा-सम्मान पाने के लिए सभी उत्सुक रहते हैं और इसमें भी काफी कठोरता थी। जब तक मनुष्यत्व न हो, ब्राह्मणत्व न हो, तब तक सम्मान मिलना सम्भव नहीं था। इस सत्कार के लालच से ही उस ज़माने में बहुत-से लोग महान बन जाते थे। हां, ढोंगी भी कुछ होते थे..."

तुंगश्री मुस्कराकर बोलीं, "आपकी क्या धारणा है कि इस समय सम्मान का लालच दिखाने से समस्या हल हो जाएगी; और तब अमीर गरीबों का शोषण नहीं करेंगे?"

"यह परिवर्तन एकाएक कैसे हो सकता है? शिक्षा में ही आमूल परिवर्तन करना पड़ेगा। दृष्टिकोण को ही बदल देना पड़ेगा। ऐहिक ऐश्वर्य

कुछ भी नहीं है। राजा-प्रजा, धनी-दरिद्र, मूर्ख-विद्वान सभी अपने-अपने कर्मफल के अनुसार सुख और दुःख भोगते हैं। इस ज़िन्दगी में सत्कार्य करता रहे तो हरेक उन्नति के स्तर पर पहुंच सकता है, यही विश्वास लोगों में सुदृढ़ करना पड़ेगा। धनी-दरिद्र सभी मुक्तिपथ के यात्री हैं, यह केवल कहने को ही नहीं, अन्तर से अनुभव करना पड़ेगा। पर वह सब एक दिन में होने-वाली बात नहीं है।"

"इन कुसंस्कारों को आप देशवासियों के मन में जमाना चाहते हैं? इनका कोई वैज्ञानिक आधार भी है?"

"अगर आप खुद वैज्ञानिक होतीं तो यह बात इतनी आसानी से नहीं कह पातीं। थोड़े दिन पहले की ही बात लीजिए। वैज्ञानिक ही कहा करते थे कि हवा खराब होने की वजह से मलेरिया होता है; और तब वही वैज्ञानिक सत्य था। जब रास साहब ने मच्छरवाले तथ्य का आविष्कार किया तो पहली धारणा कुसंस्कार मान ली गई। अब मुझे ऐसा लगता है कि शायद मच्छर के तथ्य भी कुसंस्कार ही हैं। कीटाणु ही सचमुच रोगों के कारण हैं या नहीं, मुझे इसपर ही सन्देह है। विज्ञान की आलोचना करने पर आप देखेंगी कि हरेक विषय में वैज्ञानिक सिद्धान्त रोज़ ही बदल जाया करते हैं, पर आप जिन वस्तुओं को कुसंस्कार कहकर उड़ा देना चाहती हैं, उन्हींके सहारे कई महान सभ्यताएं अब तक टिकी हुई हैं।"

"अफीम भी तो अभी तक टिकी हुई है", हंसकर तुंगश्री ने कहा, "धर्म की अफीम खिलाकर, हौआ दिखाकर मेहनतकशों को शक्तिलोभी पुरोहितों ने अपाहिज बनाकर रख दिया, इतिहास पढ़ने पर तो यही मालूम होता है।"

"इस ज़माने में पुरोहितों ने उन्हें रुपये की अफीम खिलाकर अपा-हिज बना रखा है। खुद ही सोच लीजिए, कौन-सी अफीम अच्छी है? श्रमिकों के जिक्र से मुझे एक बात याद आ गई, आजकल 'डिग्निटी ऑफ़ लेबर' या 'श्रम का सम्मान' की बात अक्सर सुनने में आती है, पर क्या सचमुच इस ज़माने में श्रम का कोई सम्मान है? श्रमजीवियों की मज़दूरी

बढ़ाने पर क्या उनका सम्मान बढ़ता गया है ?"

"मज़दूरी बढ़ाकर देखिए, सम्मान बढ़ता है या नहीं।"

"चाचाजी की मिल में मैंने एक बार यह कोशिश भी कर देखी थी। चाचाजी से लड़-झगड़कर मैंने मज़दूरी तीन गुनी कर दी थी। नतीजा क्या हुआ, जानती हैं ? उनका सम्मान तो बढ़ा नहीं; हां, उनके आसपास ताड़ी की कई नई दुकानें बढ़ गईं। चार मील दूर जो चकला था, उसकी कमाई भी खूब बढ़ गई।"

"आप अमीर लोग अगर शराब पी सकते हैं, गुलछर्रे उड़ा सकते हैं, तो वे लोग ही इससे क्यों वंचित रहें ?"

"ठीक, आपने शायद अनजान में ही मेरी बात मान ली है। मैं भी ऐसा ही समझता हूं कि इस ज़माने में मज़दूर और पूंजीपति दोनों की जाति एक ही है। उनमें अन्तर केवल आर्थिक है। दोनों ही उलझन में पड़े हैं। आप यह न सोचें कि पूंजीपति बहुत सुखी हैं। अगर आप मेरे चाचाजी को देखें तो आपको मेरी बात का यकीन हो जाएगा। वे एक टिपिकल अमीर हैं।"

"अभी तो आपने कहा कि आपकी सम्पत्ति की स्वामिनी जगद्धात्रीदेवी हैं। तो फिर आपके चाचाजी को टिपिकल अमीर होने का मौका कैसे मिला ?"

"हमारे पुरखों की सम्पत्ति के दो हिस्से हुए थे। मेरा हिस्सा जगद्धात्री-देवी का है, पर चाचाजी का हिस्सा नहीं। चाचाजी मेरे पिताजी के सगे भाई नहीं हैं। हमारे परदादा दो भाई थे। उन्हीं दिनों सम्पत्ति का बंटवारा हो गया था। एक ने तो सम्पत्ति देवी को अर्पित की थी, मैं उसीका सेवक हूं। बाकी आधे के उत्तराधिकारी हमारे निस्सन्तान चाचाजी हैं।"

"ओह !"

"चाचाजी से मिलेंगी ? वे एक दर्शनीय व्यक्ति हैं।"

"मिल सकती हूं।"

"तो पहले खाना खा लीजिए।"

बड़े महल के नज़दीक पहुंचते ही बिजली की तेज़ बत्ती जल उठी।

उनके रास्ते पर उजाला हो गया।

"ऐसी छोटी जगह में आप लोगों को बिजली कहां से मिलती है? डायनमो लगवाया है क्या?"

"चाचाजी ने लगवाया है, पर इससे मेरी प्रयोगशाला के लिए बड़ी सुविधा हो गई है। रुपये खर्च करके जो कुछ हो सकता है, चाचाजी ने सब कुछ करवाया। उन्होंने अपने कमरे में फोन भी लगवाया है।"

दरवाज़े पर हंसमुख शिखरिणी आ खड़ी हुई। सब भीतर चले गए।

खाना खत्म होने के बाद भी हिरण्यगर्भ तुंगश्री के साथ बातें करते रहे। तुंगश्री के प्रति वे जैसे कुछ आकर्षण-सा अनुभव कर रहे थे। और किसी कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि तुंगश्री विद्रोहिणी थीं। वे परम्परा का उल्लंघन करके देश की सेवा में लगी थीं, इसीलिए वे जैसे उनपर मुग्ध थे। रास्ता चाहे जितना भिन्न हो, पर वे दोनों एक ही जाति के थे, इसमें सन्देह नहीं। इसीलिए वे खुद उन्हें स्टेशन से लाने गए थे और उन्होंने अचानक जो अजीब-सी तरकीब अपनाई थी, वह उनकी बालसुलभ प्रकृति का ही एक रूप था। कोई अद्भुत प्रकार की बात करने पर उन्हें जितनी खुशी होती थी उतनी और किसी बात से नहीं होती थी। इसीलिए आज उनका मन आनन्द के स्वर्गलोक में जैसे पंख फैलाकर उड़ा जा रहा था। वे बहुत उच्छ्वसित होकर बातें करते जा रहे थे। बातचीत का जो विषय खाने के पहले शुरू हुआ था, अब तक वही चल रहा था।

"देखिए, इस ज़माने में श्रम का सम्मान बिलकुल है ही नहीं। मनुष्य का मूल्य आपने रुपयों से आंका है। पर पहले ऐसा नहीं था, हर मनुष्य के अन्दर उसका जो व्यक्तित्व रहता है, हम उसपर ही श्रद्धा रखते थे। सोचने पर आप देखेंगी कि हर मनुष्य अपनी विशेषता के कारण अपने दायरे में एक सम्राट बनकर ही जन्मा है। उस सम्राट को अगर हम उसका उचित मूल्य न दें तो उसका सम्मान भी नहीं होता, और उसे मर्यादा भी नहीं मिलती। अब हम एक-दूसरे को एक सांचे में ढालने की कोशिश करते हैं। किसी महान कलाकार या एक प्रतिभाशाली कारीगर को हम फैक्टरी में

नौकरी देकर उससे लगातार बोल्ट बनवाते हैं, या हैंडिल घुमाने का काम करवाते हैं। हम उसे कितना ही पैसा क्यों न दें, वह तृप्त नहीं हो सकता; क्योंकि उसके अन्दर जो सम्राट है, उसे हम उचित सम्मान नहीं दे पाते। यह तो वही बात हुई, 'हर धान बाईस पसेरी।' हम छोटे-बड़े किसीका भी महत्त्व नहीं समझ पा रहे हैं। हम केवल उसे लिफाफे में डालकर उसपर दाम का लेबल चिपकाने की कोशिश कर रहे हैं। अभी आपने नरेन को देखा, उसके बाप की हम बचपन में क्या कम खुशामद करते थे। वे लोग जुलाहे हैं। उसके बाप का करवा था, हमारे सारे कपड़े वही बुनता था। पिताजी मिल के कपड़ों के विरोधी थे। मैं और शिखरिणी दोनों अक्सर जाकर जीवन जुलाहे के घर पर धरना देते थे कि धोतियों की किनारी कुछ मन-पसन्द बन सके। उसके साथ हम लोगों का केवल पैसे का ही नहीं, बल्कि हृदय का सम्बन्ध भी था। उसीके लड़के नरेन ने बी० ए० पास किया। क्लर्क या स्कूल-मास्टर बनने के लिए वह भटकता रहा। कहीं एक नौकरी भी मिली थी, पर हड़ताल में शामिल होने से पत्ता कट गया। वह अपने को कहीं भी खपा नहीं पा रहा है। क्योंकि उसके अन्दर जो सम्राट है, उसे मर्यादा नहीं मिल पा रही है। वह विज्ञान का छात्र रहा है। इसीलिए उसे मैंने अपनी प्रयोगशाला में आत्माविष्कार करने का मौका दिया है, पर देख रहा हूं कि वह बहुत आलसी है और अनमना-सा रहता है। हमारी सारी शिक्षा ही गलत रास्ते पर जा रही है।"

तुंगश्री चुपचाप सुन रही थीं। वे भी हिरण्यगर्भ को अपनी ही जाति का मान रही थीं। वे भी चुपचाप सोच रही थीं कि किस प्रकार इस गुमराह को लौटा कर ठीक रास्ते पर लाया जाए।

शिखरिणी ने पर्दा हटाकर अन्दर झांका, "चाचाजी तुम्हें आने के लिए कह रहे हैं। अभी महफिल जमनेवाली है।"

"चलिए, चला जाए। गाना सुनने में आपको कोई आपत्ति तो नहीं है?"

"कैसा गाना ?"

"बाईजी का गाना !"

"तुंगश्री स्तब्ध रह गईं। वे इसके लिए एकदम तैयार नहीं थीं। उनके चेहरे पर अनजाने ही ऐसी कठोरता उभर आई कि उनका मनोभाव हिरण्यगर्भ से छिपा नहीं रहा।

"बाईजी का नाम सुनकर आप अप्रसन्न क्यों हो रही हैं ? बाईजी-रूपी उस मज़दूरिन को चाचाजी अच्छी ही मज़दूरी देते हैं। आप देखते ही यह समझ जाएंगी कि उसके साथ बर्ताव भी अच्छा होता है।"

"चलिए।"

जो शब्द उनकी ज़बान पर आ गए थे उनपर रोक लगाकर तुंगश्री उठ खड़ी हुई, क्योंकि जो सम्भावना थोड़ी देर पहले उनके मन में झांक रही थी, वाद-विवाद से उसे वे नष्ट नहीं करना चाहती थीं। जिस तरह शेरनी अकारण और असमय गरजकर अपने शिकार को चौंकाती नहीं है, उसी तरह हिरण्यगर्भ को व्यर्थ ही चौंका देना उन्होंने ठीक नहीं समझा।

शिखरिणी का अनुसरण करते हुए दोनों कई कमरे और बरामदे पार करते रहे। सभी कमरे तस्वीरों और तरह-तरह के सामान से भरे थे, पर ऐसा लगा कि वहां कोई नहीं रहता है। बरामदे लम्बे-चौड़े थे। उनमें कतार लगाकर रखे हुए पिंजड़ों में खरगोश, गिनीपिग, कबूतर, सफेद चूहे आदि बन्द थे। एक बन्दर भी था।

"ये हमारी प्रयोगशाला के जानवर हैं।"

अचानक एक विकट आवाज़ सुनकर तुंगश्री चौंक पड़ीं।

"चाचाजी ठीक कह रहे हैं।" मुस्कराकर शिखरिणी बोली।

"अच्छा हुआ, आपकी किस्मत अच्छी है। शाम के समय चाचाजी को बिना कई छींकों के आए आराम नहीं मिलता।"

एक बड़े-से दालान के अन्तिम छोर पर पर्देवाले दरवाज़े के सामने सशस्त्र दरबान को देखकर तुंगश्री समझ गईं कि अब चाचाजी का महल शुरू हुआ। हिरण्यगर्भ को देखकर दरबान अदब के साथ खड़ा हो गया और सैनिक सलामी दी—खटाक्।

"आइए।" शिखरिणी ने कहा। सब लोग अन्दर चले गए।

३

एक बहुत बड़े हाल में एक तरफ मेघसुन्दर वर्मन बैठे थे। लम्बे-तगड़े, सुन्दर-व्यक्ति। उजला गोरा रंग, बहुत सुन्दर ढंग से कढ़े हुए सफेद बाल, तोते की चोंच जैसी नाक, नथुनों पर घुमाव की रेखा, आंखें बहुत बड़ी नहीं, पर अत्यन्त जीवन्त। दाढ़ी-मूंछ साफ। उनकी सशक्त ठुड्डी, मज़बूत जबड़े, आंखों की दीप्त दृष्टि, भाषामय पतले होंठ, ये सब मिलकर उनके व्यक्तित्व का जो परिचय दे रहे थे, उसका मूल तत्त्व था चरित्र की अनमनीयता। वह जैसे नीरव भाषा में घोषित कर रहा है कि तुम्हारी मर्जी चाहे जो हो, तुम चाहे जो हो, मैं तुम्हारी परवाह नहीं करता, मैं तुम्हारी निन्दा और स्तुति से कहीं ऊपर हूं। शिखरिणी आगे बढ़कर बोली, "चाचाजी, ये ही हैं तुंगश्रीदेवी।"

तुंगश्री के नमस्कार करते ही वे बोले, "बैठो बैठो, हिरण्य, तुम अपना अमूल्य समय आज इस तरह खराब कर रहे हो, क्या बात है?"

"इन्हें आपके पास ले आया हूं!" मुस्कराते हुए हिरण्यगर्भ ने कहा और कुर्सी खींचकर एक तरफ बैठ गए। तुंगश्री भी बैठ गईं। मखमल की गद्दीदार कुर्सी जैसे चुभने लगी। जाने कैसा नरम-नरम-सा···

मेघसुन्दर भौंहें सिकोड़कर तुंगश्री की ओर देख रहे थे। थोड़ी देर तक घूरते रहने के बाद उन्होंने कहा, "नाम जैसा अटपटा है, शक्ल तो वैसी नहीं है। शक्ल तो हमारी शिखु जैसी ही है।"

शिखरिणी एक कोने में खड़ी मुस्करा रही थी; उसने कहा, "मैं अब जा रही हूं, काकू!"

"गाना नहीं सुनोगी?"

"थोड़ी देर में फिर आ जाऊंगी।"

"तुम्हारे पतिदेव इतनी जल्दी आ गए ? जगन्नाथपुर गया था न ?"

"हाथी पर गए हैं, आते ही शायद खाना मांगें।"

"उसे टमाटर के रस में हार्लिक्स बनाकर दिया था कभी ?"

"अभी तक तो नहीं दे पाई।"

"यही तो तुम्हारी खराबी है। जो कहा जाए, उसे कभी नहीं करोगी। वह कागज़ी नींबू वगैरह के शर्बत से कहीं अच्छी चीज़ है। हिरण्य क्या कहते हैं ?"

"अच्छा तो होना ही चाहिए।"

"सुन लिया ? आज ही बना देना।"

"अच्छा।"

शिखरिणी जाने लगी तो मेघसुन्दर ने फिर बुलाया।

"विनू हरामज़ादी क्या कर रही है ? ज़रा देख तो, अभी तक कम्प्रेस नहीं लाई। तू ज़रा जाकर देख तो।"

शिखरिणी बगल के दरवाज़े से चली गई।

मेघसुन्दर हिरण्यगर्भ की ओर देखकर बोले, "गठिया पर किसी तरह से काबू नहीं आ रहा है। कुछ कर सकते हो ? रामचन्द्र डाक्टर तो हार गया। कुछ हुआ-हुवाया नहीं, दर्द भी बढ़ रहा है और उसका बिल भी।"

"देखूं।" हिरण्यगर्भ खड़े हो गए।

"ठहरो ठहरो, ज्यादा दबाना नहीं, तुम्हें दिखाने में तो डर-सा लगता है।"

हिरण्यगर्भ आगे बढ़कर उनका घुटना देखने लगे।

"एक जुलाब लीजिए और अण्डा, मांस एकदम बन्द कर दीजिए।"

"इसे इलाज कहते हो। इससे अच्छा तो यह कहते कि आप चित पड़े रहिए और मैं पैर लगाकर गला घोंट दूं, बला ही खतम हो जाए। इतना खर्च करके तुम लोगों ने क्या पढ़ाई की, मुझे तो कुछ समझ में नहीं आता। कहां बीमार आदमी को थोड़ा आराम दो, सो नहीं, उसे और भी तंग कर रहे हो। रामचन्द्र बोरिक-कम्प्रेस की राय दे गया। दवा की ऐसी

तेज़ बदबू आती है कि···"

विनू उर्फ विनोदिनी गरम कम्प्रेस लेकर अन्दर आई। विनोदिनी की उम्र पन्द्रह-सोलह साल से ज़्यादा नहीं थी। काफी खूबसूरत लड़की थी। पीठ पर बहुत सुन्दर चोटी लहरा रही थी। भौंहें कुछ ऊपर की ओर खिंची हुई। क्षोभ से उसका सारा चेहरा तमतमा रहा था।

"अरे बाप रे, चेहरे पर बादल और बिजली दोनों मौजूद हैं। क्या हो गया? शिखु की डांट पड़ी है क्या?"

विनू उत्तर दिए बिना ही घुटने टेककर सेंक करने के लिए बैठ गई।

"अच्छी तरह इत्र डाल लिया है न?"

"हूं।"

गुलाब के बहुत बढ़िया इत्र की खुशबू चारों ओर फैल गई। सिर झुकाकर विनू सेंक करने लगी। विनू की चोटी हाथ में लेकर मेघसुन्दर गुनगुनाने लगे—

गुंथी हुई वेणी की मनोहारी शोभा देख,
नागिन भी लजाकर विवर में समा जाए!

विनू तुनककर बोल उठी, "उफ छोड़ो न! दर्द होता है।"

विनू मेघसुन्दर की नातिन है। उनकी भांजी की बेटी। मातृ-पितृहीन बालिका। मेघसुन्दर ने ही उसका पालन-पोषण किया है।

तुंगश्री स्तब्ध बैठी थीं। उनकी आंखों के सामने अकाल के भयानक चित्र घूम रहे थे। जिस देश में झुंड के झुंड लोगों को मांड़ के लिए हाहाकार करते हुए दर-दर भटकना पड़ा, जिस देश में मध्यम वर्ग की औरतों को केवल पेट भरने के लिए अपनी अस्मत बेचनी पड़ी, शिक्षित व्यक्तियों को अपने सब आदर्शों को तिलांजलि देकर पेट के लिए कोई भी तुच्छ वृत्ति अपना लेनी पड़ी उसी देश में ये सब धनी पूंजीपति विलासिता में डूबे पड़े हैं। षोडशी सुन्दरी से अपने घुटनों पर गुलाब के इत्र से सुगन्धित सेंक करवा रहे हैं।

सेंक खत्म होने पर विनू जाने लगी, मेघसुन्दर ने कहा, "आज तुम्हें

अपना नाच हीराबाई को दिखाना पड़ेगा।" विनू तेज़ी से भाग गई। उसी ओर देखकर मुस्कराते हुए मेघसुन्दर गुनगुनाए—

गोरी धीरे चल, गगरी छलक न जाए।
पतरी कमर तेरी लचक न जाए।

फिर तुंगश्री की ओर देखकर उन्होंने कहा अरे, "यह अन्याय हो रहा है। मैं अपनी ही बातों में मस्त हूं। तुम्हारी तरफ तो ध्यान ही नहीं दे सका। तुंगश्री! हूं, हिरण्य के साथ मित्रता है क्या? इस जैसे आदमी के साथ किसीकी मित्रता सम्भव हो, ऐसा तो नहीं लगता। सांप, मेढक, चूहे, कछुए इन्हींके साथ रात-दिन इसका वास्ता रहता है। तो, हिरण्य, तुम्हारी इस स्वदेशकल्याणकारी मिल का क्या हो रहा है?"

"मिल बन्द कर दी।"

"बन्द करना ही पड़ेगा, यह तो मुझे मालूम था! मैंने तो पहले ही बता दिया था कि ज़बर्दस्ती किसीका कल्याण नहीं किया जा सकता। दसेक दिन पहले केशवसामन्त का आदमी हमारे पास आया था, वे अगर ज़मीन इजारे पर लेना चाहें तो उन्हें दे दो। तुम्हारी मिल का सामान भी वे ही खरीद लेंगे। पूर्वी बंगाल में वे अपनी एक मिल खोलना चाहते हैं, इसके अलावा तुम्हारी उस ज़मीन पर वे..."

"गांजे की खेती करना चाहते हैं", हंसकर हिरण्यगर्भ बोले, "हमारे पास वह आया था।"

"करे तो करने दो, तुम्हारा क्या जाता है? वे किस चीज़ की खेती करेंगे, इसपर तुम्हें माथापच्ची करने की क्या ज़रूरत है? वे तुम्हें नकद रकम दे रहे हैं, ले लो।"

"नहीं मैं गांजे की खेती नहीं करने दूंगा।"

"यह भी कैसा पागलपन है? आदमी धान भी खाता है और गांजा भी पीता है। तुम अगर ज़मीन नहीं दोगे तो क्या गांजे की खेती मुल्क से उठ जाएगी?"

हिरण्यगर्भ चुपचाप बैठे रहे, कोई उत्तर नहीं दिया। हां, एक बार

कनखी से तुंगश्री की ओर देख लिया।

केशवसामन्त का नाम सुनते ही तुंगश्री की सारी सत्ता उद्ग्रीव हो उठी। केशवसामन्त भी धनी ज़मींदार के लड़के हैं, यह बात तुंगश्री को मालूम थी; पर केशवसामन्त का जो दूसरा परिचय मिला था उसीपर वे मुग्ध थीं। ज़मींदार के बेटे होने पर भी केशवसामन्त ज़मींदारी प्रथा के विरोधी हैं, इनकी पार्टी का सारा खर्च केशवसामन्त ही देते हैं, स्वतन्त्रता मिलने के बाद कांग्रेसी नेता पूंजीपतियों को अपने हाथ में रखकर फॉसिस्ट मनोवृत्ति का ही परिचय दे रहे हैं, आदि के सम्बन्ध में उसका ज़ोरदार भाषण कई बार सुनकर तुंगश्री के मन में केशवसामन्त पर श्रद्धा हो गई थी। जेल से छूटकर जब वे बेसहारा रास्ते पर भटक रही थीं, उस समय केवल मौखिक सहानुभूति प्रकट करने के अलावा किसीने कुछ भी नहीं किया था। एक केशवसामन्त के अलावा और कोई सहायता वे देने के लिए आगे नहीं बढ़ा था। देश के लिए अपना प्राण तुच्छ मानकर वे आगे बढ़ी थीं, देश के लिए ही जेल गई थीं; पर देशवासियों ने उनके लिए क्या किया? उनकी मां को मुट्ठी-भर चावल भी किसीने नहीं दिया था और वे भूखों मर गई थीं। नाबालिग भाई तपेदिक का शिकार हो गया है। केशवसामन्त ने ही कहा था कि उसे किसी सैनेटोरियम में जगह दिला देंगे और ज़रूरत पड़ने पर उसका सारा खर्च खुद उठाएंगे। पूर्वी बंगाल में ही वे पैदा हुईं, वहीं पढ़ी-लिखीं और शायद वहीं उनकी ज़िन्दगी भी बीत जाती, पर वहां रहा नहीं गया। मुसलमान गुंडों के अत्याचार से भागना पड़ा। उन्होंने अपनी सारी शक्ति मुसलमानों के विरुद्ध क्यों न लगा दी? ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ फेंकने के लिए वे अपने प्राणों को छोटा समझकर जिस तरह आगे बढ़ी थीं, पाकिस्तान के विरुद्ध वैसे ही क्यों न आगे बढ़ सकीं? बहुतों ने यह प्रश्न उनसे किया है, उन्होंने जो उत्तर दिया उसका मर्म एक केशवसामन्त के अलावा और किसीकी समझ में नहीं आया। वे समझती हैं कि मुसलमानों का पाकिस्तान का दावा न्यायसंगत है। उनके विचार सुनते ही लोग नाराज़ हो जाते थे। पाकिस्तान में आज गुंडों की ऐसी

भरमार है, इसका यह कारण है कि इतने दिनों तक उनपर हिन्दुओं की छाया पड़ी रही और वे शिक्षित और सभ्य नहीं बन पाए। अब इतने दिनों के बाद उन्हें आत्मनियंत्रण का सुयोग मिला है। उम्मीद है कि वे थोड़े ही दिन में सभ्य बन जाएंगे। इसीलिए पाकिस्तान का बनना ज़रूरी था। केवल केशवसामन्त ही उनकी युक्ति को समझ सके थे, और उनको उन्होंने देश भक्तों के हाथ से बचाया था। पूर्वी बंगाल से जब ये छोटे भाई को बेसहारा हालत में लेकर भाग आई थीं, तब केवल केशवसामन्त ने ही उन्हें कलकत्ता के अपने मकान में आश्रय दिया था। उनके मन, उनके सिद्धान्त सभीको केशवसामन्त का सहारा मिला। कलकत्ता आकर वे जिस राजनीतिक गोष्ठी का गठन कर सकी थीं, उसके प्राण केशव सामन्त ही थे। उस राजनीतिक गोष्ठी का आदर्श मजदूरों के अधिकार की प्रतिष्ठा और देश के दुश्मन पूंजीवादियों का नाश करना था। इस बीच बहुत-सी मिलों में उन्होंने हड़ताल करवाई। अनेक धनिकों का घमंड चूर किया। कलकत्ता में ही वे हिरण्यगर्भ के विषय में बहुत कुछ सुन चुकी थीं। केशवसामन्त को लिखी हुई हिरण्यगर्भ की चिट्ठी भी उन्होंने देखी थी। चिट्ठी पढ़कर उनका सारा शरीर गुस्से से जल उठा था। पर उनका क्रोध तभी सीमा से बाहर हो गया, जब उन्हें इसका अकाट्य प्रमाण मिला कि हिरण्यगर्भ ने केशवसामन्त का अपमान किया है। उसी दिन उन्होंने निश्चय किया कि कुछ ऐसा अप्रत्याशित करना पड़ेगा जिससे हिरण्यगर्भ को न सिर्फ सबक ही मिले बल्कि केशवसामन्त भी चकित रह जाएं। डाइनामाइट से हिरण्यगर्भ की मिल उड़ा देने का प्रस्ताव सुनकर सचमुच ही केशवसामन्त हर्षचकित रह गए थे। तुंगश्री ने कल्पना भी नहीं की थी कि वे इस तरह से पकड़ी जाएंगी, पर वे हिरण्यगर्भ का जो रूप कहां देख रही हैं, वह उससे भी अधिक अप्रत्याशित था। ऐसे अद्भुत व्यक्ति से पाला पड़ेगा, यह उन्होंने सोचा तक न था। केशवसामन्त का प्रसंग सुनकर उनका मन सजग हो उठा।

हिरण्यगर्भ की ओर देखते हुए मेघसुन्दर बोले, "मिल तो तुमने बन्द

कर दी, अब क्या होगा ? इतने कल-पुर्ज़े, इतनी बड़ी इमारत, सौ बीघे ज़मीन, सब कुछ बेकार पड़ा रहेगा ?"

"अभी पड़ा रहे, फिर सोच-समझकर कुछ किया जाएगा।"

"तो फिर आजकल कोई प्लान नहीं है ?"

"कुछ खास तो नहीं है, पर मैंने सोचा है कि मुरारीपुर में जो बुनियादी पाठशाला स्थापित की है, वहां के छात्रों को कपड़े की मिल के सम्बन्ध में कुछ रचनात्मक शिक्षा दी जाए तो अच्छा रहेगा। मशीन चलाकर वे लोग खुद समझ जाएंगे कि मिल ज्यादा अच्छी है या चर्खा !"

"कैसी विचित्र अक्ल तुम्हारे दिमाग में आती है ! छि: छि:, लाल या काली जिस स्याही से कहो, मैं लिखे देता हूं कि इससे कुछ होने-जाने का नहीं। पांच भूत मिलकर सब कुछ लूटकर खा जाएंगे। पहले तो कल-पुर्ज़ों में ज़ंग लगेगा, फिर सबके सब चोरी चले जाएंगे। केशव को थमा देते तो घर का पैसा घर में आ जाता। हमारा भी कुछ फायदा···"

"आपका क्या फायदा होता ?"

"इसे खरीदने के लिए केशव सुनरिधारा के अपने सारे महल गिरवी रखकर रुपया मांग रहा था। तुम राज़ी होते तो सारा काम बन जाता। वह छ: परसेण्ट सूद देता। तुम्हारे ज़ोर डालने पर मैंने सैनेटोरियम में जो रकम देने का वादा किया है, वह बहुत आसानी से इसीमें से निकल आती। मछली के तेल से ही मछली भुन जाती।"

हिरण्यगर्भ मुस्कराते हुए देखते रहे, कोई उत्तर नहीं दिया। मेघसुन्दर तुंगश्री की ओर देखकर बोले, "ओह, देखो हम फिर घरेलू बात में ही उलझ गए। तुम्हारे साथ बात ही नहीं कर पाए। तुम किस स्वभाव और किस मिज़ाज की हो, यह भी तो मालूम नहीं है, बातें करें तो किस विषय पर, राजनीति, साहित्य, कालाबाज़ार या ट्रेन की भीड़ पर, किस विषय की आलोचना तुम्हें भाएगी, यह भी तो नहीं मालूम है मुझे।"

"अच्छा तो राजनीति पर ही बातें हों।"

"अरे बाप रे, अखबार तो हम अपने नज़दीक फटकने नहीं देते।

"कुछ खास घटा तो नहीं हैं।"

"दवा ले रहे हैं?"

"हां।"

"धीरे-धीरे घट जाएगा। कोई खास तकलीफ तो नहीं है?"

"कुछ तो है। कनपटी बराबर सनसनाती रहती है।"

प्रश्न का उत्तर न मिलने पर पुराने ज़माने में गुरूजी जिस तरह छात्र की ओर घूरा करते थे, ठीक उसी तरह मेघसुन्दर डाक्टर को घूरने लगे। जैसे कह रहे हों, किया तो बहुत कुछ, पर काम ज़रा भी नहीं बना। डाक्टर मेघसुन्दर की नज़र बचाकर अपना सामान समेटने लगे। जल्दी-जल्दी समेटकर चले जाते तो बेहतर था, पर एक और अनिवार्य प्रश्न उन्हें करना ही पड़ा, "आपके घुटने का दर्द कैसा है?"

उसके जवाब में मेघसुन्दर जो कुछ कर बैठे उसपर तुंगश्री को बहुत आश्चर्य हुआ। एकाएक वे दोनों हाथ के अंगूठे हिला-हिलाकर कीर्तन की धुन में गाने लगे—

कुछ नहीं हुआ, हाय, कुछ नहीं हुआ !
हे डिगरी की दुमवाले, तुमने की कितनी तरकीबें,
कितना बोले, कितना तड़पे,
पर कुछ नहीं हुआ, हाय, कुछ नहीं हुआ !
बलि-बलि जाऊं
हे विलायती पुच्छवाले
पेटेंट दवा के सागर में
हो तुम होशियार खेवैया
(पर) कुछ नहीं हुआ, हाय, कुछ नहीं हुआ !

रामचन्द्र इन सबके आदी हो चुके थे, अतः वे नाराज़ तो हुए ही नहीं, ऊपर से कुछ गद्गद होने का भाव दिखाने की कोशिश करने लगे, और बोले, "गीत तो बड़ा अच्छा रहा!"

"तुम्हें पसन्द आया?"

"बहुत अच्छा रहा, आपने ही बनाया है क्या ?"

"भला मैं क्यों बनाऊं ? तुम्हारा वह कम्पाउंडर जो चिपचिपा मरहम बनाता है न, वही आकर बना गया है।"

कुछ और मुस्कराकर डाक्टरसाहब विदा हो गए। मेघसुन्दर हिरण्यगर्भ की ओर देखते हुए बोले, "बड़े मजेदार आदमी हो तुम। डाक्टर से एकबार पूछा तक नहीं कि कैसी सुई दे रहा है, क्या दवा दे रहा है। मूरत की तरह बैठे रह गए।"

"पूछने से क्या फायदा होता ? उसके साथ मतभेद होने पर सिर्फ़ बखेड़ा ही होता। आप तो उसे छोड़ेंगे नहीं।"

"तो क्या एकबार पूछा भी नहीं जा सकता ? उस बन्दर का बुखार नापने तो हर तीसरे घंटे आते हो और अपने चाचा की खोज-खबर भी नहीं ले सकते !" फिर तुंगश्री की ओर देखते हुए बोले, "ये सब मेरे वारिस बनना चाहते हैं।"

"मैं तो नहीं चाहता।" विस्मित होकर हिरण्यगर्भ बोले।

"नहीं चाहते तो खाओगे क्या ? बिलकुल डोमों जैसा हाल हो जाएगा। एक न एक सनक के पीछे बैंकों का सारा रुपया तो उड़ा रहे हो !"

"मैं अपना कमाया हुआ पैसा खर्च करता हूं, ज़मींदारी का तो एक पैसा भी मैंने नहीं लिया।"

"तुम्हारा वह मुरारीपुर का स्कूल ! उसका खर्च तो ज़मींदारी से ही चलता है।"

"रिआया की भलाई के लिए उसे खोला गया है ! इसीलिए उसका खर्च ज़मींदारी से चलता है।"

"सुना है, मालगुज़ारी भी ठीक से वसूल नहीं होती। जो मर्ज़ी हो करो......" फिर तुंगश्री की ओर देखते हुए बोले, "ऐसे आदमी से तुम्हारी मित्रता हुई ही कैसे ? यह क्या आदमी है ? जर्मनी से डाक्टरी पास करके आया, किसी अच्छी जगह प्रैक्टिस जमाता, सो नहीं ; कभी सांप, तो कभी मेढक, चूहे और बन्दर लेकर पड़ा रहता है। खानाबदोश है,

खानाबदोश !"

तुंगश्री के मन में कई विचित्र भावों का द्वन्द्व चल रहा था। वे तुरन्त कुछ उत्तर नहीं दे सकीं। हिरण्यगर्भ की ओर देखकर एक बार मुस्करा-भर दीं। उनका अब यहां मन नहीं लग रहा था। कहीं एकांत में जाकर सोच-विचारकर कुछ निर्णय करने के लिए वे व्यग्र हो उठी थीं ; पर किस बहाने उठें, यह समझ में नहीं आ रहा था। एकाएक एक अप्रत्याशित बात हो गई। बाहर बरामदे में हिरण्यगर्भ का बन्दर चीख़ उठा।

"उसे क्या हो गया ?" हिरण्यगर्भ उठ खड़े हुए।

तुंगश्री भी खड़ी हो गईं।

"चल पड़े क्या ? अभी आलाप तो खत्म ही नहीं हुआ ?"

"मैं अभी आ रहा हूं। बन्दर चिल्ला क्यों रहा है, ज़रा देख लं।" फिर उन्होंने तुंगश्री की ओर देखकर कहा, "आप बैठिए न !"

"चलिए, मैं भी ज़रा देख आऊं।"

दोनों बाहर चले गए। उसी ओर व्याकुल नेत्रों से मेघसुन्दर देखते रह गए। उनकी आंखें जैसे कह रही थीं—तुम मत जाओ, कुछ और रुक जाओ। श्री राग का आलाप सुन लो, बन्दर की चीख-पुकार से वह कहीं बेहतर है। मेघसुन्दर की सारी ज़िन्दगी ऐसी रही। किसी भी तरह गाने की महफिल जमा नहीं पाए। कद्रदां ही कहां हैं ? कितना खर्च करके अच्छे-अच्छे उस्तादों को बुलवाते हैं, कितनी बाईजी को बुलवाते हैं ; पर वे लोग अपनी करामात दिखाने में ही व्यस्त रहते हैं। मेघसुन्दर का आलाप सुनने का आग्रह किसीको नहीं है। ज़बर्दस्ती किसीको सुनाने में उन्हें शर्म मालूम होती है, उनके आत्मसम्मान को ठेस लगती है। कभी-कभी डाक्टर रामचन्द्र को बुलाकर सुनाते हैं, वह दाद भी देता है, पर उसके चेहरे से यह नहीं लगता कि वह समझ रहा है। ऐसा लगता है जैसे बिल्ली को ज़बर्दस्ती गुलाब का फूल सुंघाया जा रहा हो।

हिरण्यगर्भ बाहर चले गए। जाकर देखा कि बन्दर के पिंजड़े के सामने उनका अल्सेशियन कुत्ता घात लगाकर बैठा है। वह एकाग्र होकर बन्दर

की ओर घूर रहा था। हिरण्यगर्भ चिल्लाए, "दुष्ट !"

नाम सुनकर दुष्ट ने गर्दन मोड़कर देखा। उसने सन्देह-भरी दृष्टि से तुंगश्री की ओर भी देखा। फिर एकाकर उठकर घूम-घूमकर तुंगश्री के कपड़े सूंघने लगा। तुंगश्री काठ-सी खड़ी रहीं।

"दुष्ट !......अन्दर जाओ !"

आज्ञाकारी बालक की तरह दुष्ट अन्दर चला गया।

हिरण्यगर्भ हंसकर बोले, "बन्दर से वह बहुत जलता है। ऐसे पाजी जानवर को इतना आराम देकर पाला जा रहा है, यह उसकी समझ में नहीं आता। आदमी नहीं समझते तो कुत्ते का क्या कहना। चाचाजी, खरिणी, घर के और सभी इस बन्दर पर नाराज़ हैं। मैं उसे इतना अच्छा खाना खिलाता हूं, यह किसीको बर्दाश्त नहीं होता।"

"क्यों खिलाते हैं ?" तुंगश्री ने प्रश्न किया।

"उसकी शक्ति बढ़ाने के लिए। मैं यह दिखाना चाहता हूं कि बीमारी का कारण कीटाणु नहीं हैं, बल्कि वाइटेलिटी की कमी ही बीमारी का कारण है।" बन्दर आंखें मटकाकर हिरण्यगर्भ की ओर देख रहा था। अभी उसका खाने का समय नहीं हुआ था। फिर भी हिरण्यगर्भ ने बगल के बक्स से एक अमरूद निकालकर उसे पकड़ा दिया। फिर उन्होंने तुंगश्री की ओर देखकर कहा, "चलिए, चाचाजी शायद इन्तज़ार कर रहे हैं।"

"और बैठने का मन नहीं करता, हिरण्यबाबू, नींद-सी लग रही है।"

"तो चलिए, यही कहकर चले आएंगे।"

दोनों फिर लौट आए। आकर देखा, हीराबाई आ पहुंची थीं। तबलची भी आ गया था। तानपूरा मिलाया जा रहा था। तबलची तबला मिला रहा था। मेघसुन्दर भौंहें कुछ सिकोड़कर आंख मूंदे बैठे थे। दो बिलकुल भिन्न यंत्रों के स्वर दो भिन्न हाथों की ताड़ना से किस प्रकार शून्य में मिले जा रहे थे, वे होकर इसी रहस्य को समझने में तन्मय थे। तुंगश्री और हिरण्यगर्भ कब कमरे में आए, यह उन्हें मालूम भी न हो सका। कालीन से ढंके हुए कमरे के फर्श पर आहट भी नहीं हुई। हीराबाई को देखकर तुंगश्री

चौंक गईं। अरे, यह तो अलका है ! वह स्कूल में उनकी सहपाठिनी थी। तो अलका ही हीराबाई हैं ? हां, अलका को गाने-बजाने का शौक तो था। अलका तुंगश्री की ओर पीठ करके बैठी तानपूरा छेड़ रही थी। तुंगश्री को देख नहीं पाई। तुंगश्री अपलक दृष्टि से उसकी ओर देखती रहीं। हिरण्य-गर्भ तुंगश्री के कान में धीरे से बोले, "आप चाहती हों, तो अभी चाचाजी से कहकर खिसक चलें, नहीं तो एक बार शुरू होने पर उठना मुश्किल हो जाएगा।"

"कुछ देर सुन ही लिया जाए।" धीरे से तुंगश्री ने उत्तर दिया।

"ठीक है, तो मैं ज़रा प्रयोगशाला तक हो आऊं। वह चीज़ बर्नर पर उबल रही है, देख आऊं, कहां तक बना। अगर चाचाजी पूछें, तो उन्हें बता दीजिएगा।"

हिरण्यगर्भ चुपके से निकल गए।

तबले के साथ तानपूरे का सुर मिल गया। मेघसुन्दर की सिकुड़ी हुई भौंहें सीधी हो गईं। उनके चेहरे पर तृप्ति की मुस्कराहट उभर आई। स्नेह-भरी निगाह से उन्होंने बाईजी की ओर देखा। बाईजी भी आंख उठाकर देख रही थीं।

"आज क्या सुनाऊं ?"

"तुम्हारी जो मर्ज़ी हो।"

दो-तीन बार खांसकर हीराबाई धीरे-धीरे तानपूरे के तारों पर अंगुली चलाती रहीं। एक गम्भीर सुर मूर्त होने लगा; जैसे किसी महान आविर्भाव की पूर्वसूचना हो। एकाएक हीराबाई मानो उसी महान का स्वागत कर उठीं—

ताना ना देरे देरे त्‌म, देरे देरे त्‌म
द्रे द्रे ना देरे देरे ना, देरे ना ता दिम्।
ता ना देरेना देरेना दिम्
ना द्रे द्रे त्‌म द्रे द्रे दिम्
ता दिम तादारे दिम्, देरे ना ता दिम्।

तुंगश्री को कुछ समझ में नहीं आया, और इस गाने में कोई शब्द भी तो नहीं था, फिर भी वे तन्मय होकर सुनती रहीं। अलका के कृतित्व पर वे चमत्कृत हो गईं। इस तरह के वातावरण की सृष्टि केवल सुर से ही सम्भव हो सकती है, इसकी धारणा पहले तुंगश्री को नहीं थी। गरीब घर की लड़की थीं, इस तरह की संगीत-सभा में प्रवेश करने की सुविधा उन्हें ज़िन्दगी में मिली ही नहीं थी। वे इस तरह तन्मय होकर सुन रही थीं कि कब विशु आकर उनकी बगल में बैठ गया, उन्हें इसका भी पता न चला। एकाएक मुड़कर एक बलिष्ठ और सुन्दर युवक को देखकर वे विस्मित हो गईं। विशु उर्फ विश्वेश्वर विनोदिनी का नृत्य-शिक्षक है। विनोदिनी भी इस बीच कब मेघसुन्दर की बगल में आ बैठी, यह भी तुंगश्री नहीं जान पाईं। वह एक अच्छी-सी साड़ी को कुछ कसकर पहने थी। बड़ी खूबसूरत दिखाई पड़ रही थी। महफिल खूब जम गई थी। इसी बीच एक घटना हो गई। मेघसुन्दर के सामनेवाला दरवाज़ा खुला था। दरबान आकर सलामी देकर खड़ा हो गया। प्रश्नसूचक दृष्टि से मेघसुन्दर ने उसकी ओर देखा।

"हुज़ूर, एक बाबू आपसे मिलना चाहते हैं, कह रहे हैं, ज़रूरी काम है।"

"यह क्या बला आ पड़ी। खैर, बुला ला।"

पेशावरी चप्पल पहने एक युवक वहां आ खड़ा हुआ। उसके शरीर पर आधी बांह की खाकी कमीज़ थी। बाल बहुत महीन कटे हुए थे। उसने आकर बिना किसी भूमिका के ही मेघसुन्दर की ओर देखकर कहा, "मैं आपकी युगलगंजवाली मिल से आया हूं।"

"क्या चाहते हो ?"

"आज तीसरे पहर हमारी यूनियन की एक मीटिंग हुई है। उसीके प्रस्ताव की कापी मैं आपके पास लाया हूं।"

"जाकर मैनेजर मन्मथबाबू को दे दीजिए।"

"हम आपको ही देना चाहते हैं।"

"अच्छी बात है, दीजिए !" कहकर हाथ बढ़ाकर मेघसुन्दर ने कागज़ ले लिया, फिर उस पर नज़र डालते हुए कहा, "इसमें क्या है ?"

"पढ़ने पर मालूम हो जाएगा।"

"वह तो होगा ही, आपसे भी तो सुनूं।"

"हमारी सात मांगें हैं, उन्हें पूरा किया जाए। पहली है, मज़दूरी कम से कम तिगुनी करनी पड़ेगी; दूसरी…"

"क्या आप उसी मिल में काम करते हैं ?"

"जी नहीं, मैं कलकत्ता से आया हूं।"

"ओह !" मेघसुन्दर की आखें जैसे एकबारगी जल उठीं। फिर उन्होंने अपने को संभाल कर कहा, "जिनको दुःख है, अगर उन्हींसे सुनते तो ठीक नहीं रहता ?"

"मैं उनका प्रतिनिधि बनकर आया हूं। आपको जो कहना है, मुझसे ही कह दीजिए।"

कागज़ खोलकर देखते हुए मेघसुन्दर बोले, "यह क्या अल्टीमेटम है ?"

"हां।"

"एकाएक अल्टीमेटम देने का अर्थ समझ में नहीं आ रहा है।"

"इस तरह तकिए के सहारे बैठकर बाईजी के गाने सुनते समय इसका अर्थ आपको ठीक से समझ में नहीं आएगा। अगर समझना चाहें तो…"

बातें खतम नहीं हो पाईं कि मेघसुन्दर ने गनपतसिंह को इतनी ज़ोर से आवाज़ दी कि वह युवक घबराकर चुप हो गया। गनपत नामक भीम-काय सशस्त्र दरबान दरवाज़े पर आकर खड़ा हो गया।

"इसे गर्दन पकड़कर निकाल बाहर करो।"

"चलिए बाबू !" कुछ हिचकिचाकर दरबान ने कहा।

"कान पकड़कर निकाल दो !" फिर से रोबीली आवाज़ में मेघसुन्दर ने हुक्म दिया। गनपतसिंह शायद उसका कान पकड़कर खींचने जा रहा था, पर युवक ने इसका मौका नहीं दिया। गनपत के पास आते ही वह उसके गाल पर तड़ाक से एक चांटा लगा बैठा। नतीजा यह हुआ कि

गनपतसिंह भी गरम हो गया। उत्तेजित शेर के पंजे में पड़कर मेमने की जो दुर्दशा होती है, क्षण-भर में उस युवक की भी वही दशा हुई। घूंसे, चांटे, लातें मारते-मारते उसे घसीटकर गनपतसिंह बाहर ले चला।

"असभ्य, जानवर कहीं का ! भले आदमियों से बात करना भी नहीं जानता !" अस्फुट स्वर में कहकर मेघसुन्दर थोड़ी देर सिर झुकाए बैठे रहे, फिर धीरे-धीरे अपने सफेद बालों में उंगली फेरने लगे। उन्हें ऐसा लगा, जैसे कोई और अदृश्य गनपतसिंह आकर उन्हें भी घसीट ले गया है। उन्होंने जब मुंह ऊपर उठाया तो उनका सारा चेहरा भयातुर हो गया था। एक शिशु के हाथ से किसी रंगीन खिलौने के गिरकर टूट जाने पर उसके चेहरे का भाव जैसा हो जाता है, मेघसुन्दर का चेहरा भी वैसा ही दिखाई पड़ा। फिर भी टूटे खिलौने की ओर उन्होंने फिर हाथ बढ़ाया। बाईजी की ओर देखते हुए बोले, "ऐसा जमा-जमाया चमन खत्म कर दिया। जम सकेगा ? देखो कोशिश करो !"

फिर से शुरू हो गया—"ताना ना देरे देरे तूम···"

तुंगश्री पत्थर की तरह निश्चल बैठी थीं। पर उस पत्थर के नीचे, जैसे लावा उबल रहा था। अब उनके कानों में संगीत प्रवेश नहीं कर रहा था। मेघसुन्दर का बज्रकण्ठ का आदेश बार-बार उनके कानों में प्रतिध्वनित हो रहा था—"गर्दन पकड़कर निकाल बाहर करो"—उसे मार कर अपमानित करके निकाल दिया गया। क्रोध और अपमान से तुंगश्री का चेहरा तमतमा उठा। उन्हें ऐसा लगा कि उसके पहले उस युवक को कहीं देखा हो। उन्हींकी पार्टी का है क्या ? असम्भव नहीं है। सबको तो वे पहचानती नहीं हैं। इस इलाके में केशवबाबू के आदमी ही तो काम करते हैं। धीरे-धीरे उनके मन में एक अवसाद-भर रह गया। उन्होंने सोचा, उफ, अगर इस काम की ज़िम्मेदारी भी उन्हींपर होती तो वह दिखा देतीं कि मज़दूरों का खून चूसने का प्रायश्चित किस तरह करना पड़ता है। रिवाल्वर की एक गोली से वे उस सफेद बालोंवाली खोपड़ी को उड़ा देतीं। उसका घमंडी सिर खून से लथपथ होकर ज़मीन पर लोटता होता।

यह बात सोचने के साथ ही उन्हें याद आया कि रिवाल्वर चोरी हो गया है। हिरण्यगर्भ का चेहरा याद आया। उन्होंने एक बार दरवाज़े की ओर मुड़कर देखा, नहीं, वे अब तक मुड़कर नहीं लौटे हैं। प्रयोगशाला के काम में मगन हैं शायद। उस सांप की भी याद आ गई। पल-भर अनमनी हो रहीं। उतना समय उनको अनन्त काल-सा लगा। उन्हें प्रतीत हुआ कि भूत, भविष्य, वर्तमान सभीको लांघकर एक बहुत ही धुंधली-सी नाव में बैठकर वे जैसे समुद्र में बही जा रही हों। किधर जा रही हैं, कुछ पता नहीं। जिसे वे द्वीप समझ बैठी थीं, अब एकाएक सन्देह होने लगा कि वह द्वीप कुंडली मारे कोई बड़ा भारी सर्प है। पास पहुंचते ही उन्हें ग्रस लेगा।

मेघसुन्दर के व्यवहार से उनके तनमन में आग-सी लग गई थी। ये निकम्मे पूंजीपति ही देश की दुर्दशा के मूल कारण हैं। इसका एक और प्रत्यक्ष प्रमाण पाकर वे अपने संकल्प को मन ही मन दृढ़ कर रही थीं कि वे जीवन-भर इनके विरुद्ध ही लड़ेंगी। पर संशय की जो छोटी-सी दरार क्रमश: बड़ी होती जा रही थी, अचानक उसे देखकर वे अपने को असहाय-सा पाने लगीं। सहसा उनके मन में आया कि सचमुच केशव-सामन्त के विषय में उन्हें जानकारी ही कितनी है। जेल से बाहर आकर नितान्त निस्सहाय अवस्था में कलकत्ता में आकर जब वे सबकी सहानुभूति मांग रही थीं, तब केशवसामन्त ने ही उन्हें आश्रय दिया था। इसीलिए कृतज्ञता से वे इतनी अभिभूत हो उठी थीं कि केशव के गुण-अवगुण की जांच-परख का अवसर ही नहीं रह गया था। उनका और भी निकट से परिचय पाकर जब यह पता चला कि वे साम्यवादी हैं, तो वे और भी मुग्ध हो गईं। जब उन्होंने सुना कि ज़मींदार के लड़के होने पर भी वे रूसी साम्यवाद को चाहते हैं तो वे विस्मित हो गई थीं, और अभिभूत भी।

पर अब उन्हें ऐसा लगा कि केशवसामन्त की अंतरंग बातों और उनके पारिवारिक सम्बन्धों के बारे में उन्हें कुछ भी मालूम नहीं है। उनके

भाषण तो वे सुन चुकी हैं, पर व्यक्ति का वास्तविक परिचय तो उन्हें मालूम ही नहीं है। हिरण्यबाबू की ज़मीन लेकर वे गांजे की खेती करना चाहते हैं। क्या उन्होंने इसीलिए डाइनामाइट से मिल उड़ा देने का प्रस्ताव इतने आग्रह के साथ मान लिया था ? पूर्वी बंगाल में वे एक मिल खड़ी करने की योजना भी बना रहे थे···थोड़ी देर में ही इस तरह की तमाम बातें उनके मन में कौंध गईं। केशवसामन्त को घेरकर उनका नवजागरित यौवन चुपचाप जो स्वप्न रच रहा था, उसको अपने आचरण से और इशारे से केशवसामन्त ने स्वयं और भी रंगीन बना दिया है। वह स्वप्न क्या स्वप्न की भांति ही विलीन हो जाएगा ? बहुत ही युक्तिहीन रूप से तुंगश्री का मन इसके विरुद्ध सीना तानकर खड़ा हो गया। सब झूठा है, ये लोग दुश्मन हैं, मनगढ़न्त झूठी बातें बना रहे हैं···पर मेघसुन्दर को तो यह बात मालूम नहीं है कि तुंगश्री के साथ केशवसामन्त का कोई सम्बन्ध भी है। फिर वे बेकार झूठ क्यों गढ़ेंगे ? पर नहीं···युक्ति से परे होकर उनका मन बोल उठा—झूठ है, ये लोग जो कुछ कह रहे हैं, सब झूठ है।

एकाएक संगीत सम पर आकर समाप्त हो गया। तुंगश्री आपे में लौट आईं। उन्होंने बाईजी की ओर देखा। अलका को देखकर उनके मन में फिर से विस्मय का भाव पैदा हो गया। क्या अब वह मुझे पहचान सकेगी ?

"वाह, बहुत खूब ! जीती रहो ! लम्बी उमर हो !" उच्छ्वास-भरी आवाज़ में मेघसुन्दर बोले।

मेघसुन्दर के प्रति तुंगश्री का समग्र मन प्रतिकूल हो उठा था। उनकी ओर वह आग्नेय दृष्टि से थोड़ी देर घूरती रह गईं। इस आदमी का घमण्ड किस प्रकार चूर किया जा सकता है ? केशवसामन्त की सहायता से शायद यह सम्भव होता, पर यदि वह···अपने मन को ओर देखकर तुंगश्री स्तब्ध रह गई। इतने ही समय में वे भी केशवसामन्त पर अविश्वास करने लगीं ? नहीं नहीं, यह सब गलत हो रहा है।

"विनू का नाच आज देखेंगी क्या ?"

तुंगश्री मेघसुन्दर की बातों पर ध्यान देने की कोशिश करने लगीं।

"अच्छा रहेगा, मैं सितार बजाऊंगी।" हंसकर बाईजी ने जवाब दिया।

"तो शुरू हो जाए। तू घुंघरू लाई है ? विशू कहां गया ?"

विशु, विनू दोनों खड़े हो गए। दोनों तैयार होकर आए थे। नृत्य शुरू हो गया। बहुत ही सुन्दर नृत्य। घुंघरू की रुनझुन, तबले के बोल और सितार की झंकार के साथ विनोदिनी और विश्वेश्वर की ललित मुद्राएं जिस स्वर लोक की सृष्टि करने लगीं, उसमें तुंगश्री भी खो गईं। उनका हृदय जैसे इस आनन्दस्रोत से अंजलि भर-भरकर अमृत पीने लगा। उनको लगा कि ज़िन्दगी-भर वे अनजाने ही जिस वस्तु को खोजती रही हैं, इस समय अप्रत्याशित रूप से वही इस किशोरी के युगलनृत्य में मूर्त में हो उठी है। सुर, ताल, छन्द की मूर्च्छना में वे भी अपने प्रियतम के साथ अपने जीवन का उपभोग करना चाहती हैं। वे दान से और ग्रहण से आनन्द का सृजन करके और उसे प्रियतम के हाथों सौंपकर सार्थक होना चाहती हैं। एक आदर्श जीवन का यही तो रूप है। मेघसुन्दर बालकों की तरह उच्छ्वसित हो उठे थे। उनकी दृष्टि से आनन्द उफनकर बाहर छलक रहा था। सर्वांग आनन्द से झूम रहा था। वे जैसे आनन्दसागर में तैर रहे थे। फिर रस भंग हो गया। पीछे के दरवाज़े से बिना आहट किए शिखरिणी आई और मेघसुन्दर के कानों में कुछ बोली। सुनते ही उनका चेहरा अप्रसन्न हो गया।

"मन्मथ अभी जाना चाहता है। क्यों ?"

"जगन्नाथपुर के उस बांध के मामले में आज रात फिर दंगा होने की सम्भावना है। केशवबाबू के आदमी ज़बर्दस्ती उसे काटना चाहते हैं।"

"केशव ने तो बहुत तंग कर रखा है। अच्छा, तू जाकर मन्मथ को यहां भेज दे।"

शिखरिणी चली गई और लगभग उसके जाने के साथ ही हिरण्यगर्भ ने दूसरी तरफ से प्रवेश किया। बाधा खड़ी होने पर नृत्य रुक गया था।

हीराबाई ने कहा, "आपकी नातिन तो बहुत अच्छा नाचती है।"

"मास्टर अच्छा जो मिल गया है।"

हीराबाई हंसती हुई विश्वेश्वर की ओर देखने लगीं, "आपने कहां सीखा था?"

"काशी में। कुछ दिन शांतिनिकेतन में भी था। उदयशंकर के पास भी रहा।"

"यह तो यहीं का लड़का है। इसका बाप बढ़ई था। हमारे इस इलाके में नौटंकी की एक मंडली थी। वहीं एक दिन मैंने इसका नाच देखा था। सोचा कि लड़का अच्छा नाचता है। अगर अच्छी तालीम मिली तो एक दिन यह बड़ा नर्तक बनेगा। सो मैंने ही अपने ही खर्चे से इसे काशी भिजवा दिया।"

"बहुत अच्छा सीखा है आपने!" थोड़ी देर चुप रहने के बाद हीराबाई बोलीं, "तो आज इजाज़त हो।"

"जाओगी? अच्छा! मन्मथ ने आज फिर कोई बखेड़ा खड़ा कर लिया है।"

विश्वेश्वर ने कहा, "मैं भी चलूं?"

"अच्छा, तू यहीं रह रहा है?"

"जी हां, मैं उधर कर्मचारियोंवाले घर में एक सिरे पर ठहरा हूं।"

"अच्छी बात है, थोड़े दिन चलने दे, फिर मैं तेरा घर बनवा दूंगा।"

बाईजी, तबलची, विश्वेश्वर सभी चले गए।

विनोदिनी को देखते हुए मेघसुन्दर बोले, "मेरा वसन्तकुसुमाकर तो अब ले आ।"

विनोदिनी भी चली गई।

हिरण्यगर्भ तुंगश्री की तरफ देखकर बोले, "चलिए, तब हम भी चलें!" फिर मेघसुन्दर से बोले, "तो चाचाजी, अब हम भी चलें।"

"ज़रा रुक जाओ। मन्मथ ने जगन्नाथपुर के बांध का कोई बखेड़ा खड़ा किया है, उसे भी सुनकर ही जाओ। उफ, परेशानी ही परेशानी है।"

"क्या बखेड़ा है ?"

"कौन जाने !..."

उसी समय मन्मथ अन्दर आए। लम्बा तगड़ा बलिष्ठ पुरुष, ब्रीचेज़, मिलेट्री कोट और मिलेट्री बूट से लैस। कन्धे पर बरसाती कोट और हाथ में बन्दूक।

"बाप रे, तुम तो एक दम फौजी वर्दी में आ गए।"

मन्मथसिंह कम बात करनेवाले आदमी हैं। बहुत ज़रूरत पड़ने पर ही बोलते हैं। बिना कुछ कहे ही वे बगल में पड़ी कुर्सी पर बैठ गए।

"हो क्या गया ?"

"केशवसामन्त ने अपने सारे मछुए असामियों को बहका दिया है। सुना है आज वे जबर्दस्ती बांध काट देंगे। उन्हें रोकने के लिए मैंने भी आदमी मुकर्रर किए हैं। मुझे खुद भी वहां जाकर मौजूद रहना पड़ेगा।"

"केशव खुद आया है ?"

"नहीं। बाहर से किसी अनुसूचित जाति की लड़की को भेजा है, उसका नाम वीरा है। कई दिन से उसकी ज़मींदारी में घूम रही है। मछुओं के दिमाग में उसने ऐसा ख्याल बैठा दिया है कि उनका पेशा बरबाद करने के लिए ही हम बांध नहीं काट रहे हैं। बांध अगर न काटें तो उनके ताल में पानी नहीं जाएगा, मछलियां नहीं होंगी और उनका पेशा बरबाद हो जाएगा।"

"पर बांध काटने पर हमारे असामियों की हज़ारों बीघे फसल बरबाद नहीं होगी ?"

"इससे उनका क्या जाता है ! वे तो जबर्दस्ती काटना चाहते हैं।"

"फिर उपाय ?"

"ज़बर्दस्ती ही रोकना पड़ेगा।"

"औरत का मामला है। कहीं फसाद में न पड़ जाना। तुम्हारी क्या राय है, हिरण्य ?"

हिरण्यगर्भ बोले, "ज़बर्दस्ती हो, या चालाकी से, जैसे भी हो, उन्हें

रोकना पड़ेगा। और चारा ही क्या है ?"

मन्मथ हिरण्यगर्भ की ओर देखकर बोले, "तुम हमारे साथ चलोगे ?"

"अभी ठीक-ठीक नहीं कह सकता। जेल्डहाल बर्नर पर उबल रहा है, कुछ घण्टे बाद चल सकता हूं।"

"अच्छी बात है, अगर ज़रूरत पड़ी तो हाथी भेजूंगा।"

"अच्छा।"

"तो मैं अब चलूं ?"

मन्मथसिंह चले गए। उनके जाते ही मेघसुन्दर की आंखें हास्य से प्रदीप्त हो उठीं।

"अब जगतसिंह और उस्मान[1] की छिड़ गई। हिरण्य, अगर तुम अपनी ज़मीन उसे दे देते तो सारा झंझट दूर हो जाता। बड़ी ही बुद्धिमानी का काम होता।"

"आपने भी शिखरिणी का ब्याह उसीसे क्यों नहीं कर दिया ? कर देते तो कुछ नहीं होता।"

"जात दूसरी है न ! नहीं तो मैं एतराज़ क्यों करता ?"

कुछ मुस्कराकर हिरण्यगर्भ चुप रह गए। जाति-भेद के कुसंस्कार पर अब चाचाजी से बहस करने की इच्छा उन्हें नहीं थी। वे उनके साथ इसपर कई बार व्यर्थ बहस कर चुके थे। मेघसुन्दर अपने पुराने ज़माने के ख्यालात छोड़ ही नहीं सकते। अगर छोड़ सकते तो केशवसामन्त के साथ उनके सम्बन्ध कड़वे न होते, बल्कि मधुर होते।

"अच्छा, तो हम चलते हैं।"

"अच्छा।"

तुंगश्री और हिरण्यगर्भ उठकर चले गए। हिरण्यगर्भ बाहर आकर फिर उस कुछ देर उस बन्दर के पास खड़े रह गए। तुंगश्री इतनी देर कुछ नहीं बोली थीं। उनके मन में केवल एक प्रश्न उभर रहा था—'वीरा ? अनुसूचित वर्ग की वीरा। मैंने केशवबाबू से यह नाम तो कभी नहीं

१. बंकिमचन्द्र के उपन्यास 'राजसिंह' के दो प्रतिद्वन्द्वी पात्र।

सुना था।···कलकत्ता की लड़की है क्या?'

जब सब चले गए तो मेघसुन्दर थोड़ी देर स्तब्ध बैठे रहे। बहुत ही असहाय की तरह वे बैठे थे। जैसे वह बार-बार जो कुछ बनाते हैं वह हर बार टूट जाता है। कोई उनको अपने ईप्सित लोक में किसी भी हालत में रहने नहीं दे रहा है। बार-बार वहां से नीचे खींच लाता है···बहुत देर तक चुपचाप बैठने के बाद उन्होंने फिर से अपना वेला उठा लिया। थोड़ी देर उसे बजाकर अपना ही तैयार किया हुआ एक गीत उसके साथ गुन-गुनाने लगे, जिसका अर्थ था—

'कैसी मिट्टी है इस देश की, जो भी बनाता हूं, टूट जाता है। कितना ही यत्न करूं, हाय, वह सब व्यर्थ। फिर भी न जाने क्यों, हृदय में ऐसी ही चाह है कि जो सौ बार टूट चुका, उसे ही फिर बनाएं। जीवनसागर के तट पर रेत का यह कैसा खेल, जबकि संध्या आ रही है और खेल खत्म होने जा रहा है, पानी छल छला रहा है, पवन बुला रहा है और मैं केवल इस गढ़ने-तोड़ने में असहाय-सा डूबा हूं।'

"दादू।" विनोदिनी खरल लेकर आ खड़ी हुई।

"उफ, एक क्षण भी तुम लोग मुझे शान्ति नहीं दोगे।" मेघसुन्दर आर्तस्वर में चीख उठे।

"वाह, तुम्हींने तो वसन्तकुसुमाकर मांगा था!" मान से विनोदिनी का मन फूल गया।

"कहां है, ला।"

खरल हाथ में लिए मेघसुन्दर उस स्निग्ध दवा को चाटने लगे।

४

बगीचा पार करते समय हिरण्यगर्भ तंगश्री की ओर देखकर बोले, "चाचाजी कैसे लगे?"

"ऐसे ही, आमतौर से पैसेवाले जैसे होते हैं।"

"खैर, यह तो है ही, पर साधारण धनी होने के लिए उन्हें क्या सज़ा भुगतनी पड़ती है, यह भी आपने देखा? रुपया बहुत है उनके पास, पर उनके दुःख का भी पार नहीं है। रुपया ज़्यादा है, फलस्वरूप व्याधियां भी खूब आ जुटी हैं। गठिया, बहुमूत्र, रक्तचाप, रुपयों के लालच से डाक्टर भी ऐसा मिला है, जिसका मकसद उन्हें खुश रखना है, इलाज करना नहीं। गाली खाकर भी वह नहीं छोड़ता। पैसे के लालच से कुत्ते की तरह पांव चाटता रहता है। इलाज कुछ भी नहीं हो रहा है। यह जानते हुए भी चाचाजी उसे छोड़ते नहीं, क्योंकि उन्हें एक मुसाहिब चाहिए। और वास्तविक इलाज उनके बस का है भी नहीं। बीमारी भी नहीं ठीक हो रही है, रुपया भी पानी की तरह बह रहा है, इसके अलावा छोटी-मोटी कई दिक्कतें लगी रहती हैं। दस बार कलकत्ता से फोन आ रहा है, ज़मींदारी में एक न एक बखेड़ा खड़ा ही रहता है। भांति-भांति के आदमी आकर उनके मगज़ में नये-नये फन्दे ठूंस देते हैं। कहां, कैसे, रुपया लगाने पर फायदा ज़्यादा रहेगा। उन्हींके फन्दे में पड़कर वे खामख्वाह अपना बोझा बढ़ाते जा रहे हैं। जबकि वस्तुतः वे एक कलाकार हैं, एक सच्चे संगीत-शिल्पी हैं। पर वे…"

बीच में ही तुंगश्री एक प्रश्न कर बैठीं, प्रश्न अवान्तर था, फिर भी वे अपने को रोक न पाईं, "अच्छा, केशवसामन्त से आपका कितने दिन का परिचय है?"

"हम बचपन में साथ-साथ स्कूल में पढ़ते थे। उसका घर भी तो इसी इलाके में है। हमारी सरहद पर ही उसकी ज़मींदारी है। उसके पिताजी के साथ मेरे पिताजी की मित्रता भी थी। हमारे ही घर पर तो उसकी महफिल जमती थी।"

"तो, अब इतनी दुश्मनी क्यों?"

"इसके कई कारण हैं। बचपन से ही उसे मुझसे बड़ी ईर्ष्या रही है। क्योंकि क्लास में वह कभी अव्वल नहीं आता था। स्कूल के हर शिक्षक

को अपने यहां ट्युटर रखा, पर फिर भी सफल नहीं हुआ। उसके बाद...पर यह सब कहना हमारे लिए ठीक नहीं। आप शायद सोचें कि मैं मुफ्त में उसकी शिकायत कर रहा हूं। आपसे उसकी मित्रता है। फिर उसके बारे में कहूं तो एक बात ऐसी होगी जिसके लिए मैं तैयार नहीं हूं।"

"वह क्या ?"

"अपने लोगों की प्रशंसा।"

"अच्छा शिखरिणी से क्या उसके ब्याह की बात उठी थी ?"

"बातें तो नहीं हुई थीं। पहले से ही उसका हमारे यहां आना-जाना था, उसे शिखरिणी बहुत भायी थी। पिताजी की मृत्यु के बाद उसने चाचाजी के पास विवाह का प्रस्ताव भेजा था, पर चाचाजी राज़ी नहीं हुए। उसीके बाद से वह जैसे बौखला उठा। हमेशा हमारा अनिष्ट करने की चेष्टा में रहता है।"

"किस तरह की चेष्टा ? ज़मींदारी के बखेड़े ?"

"ज़मींदारी का बखेड़ा तो नहीं कहा जा सकता, पर जिस तरह की चेष्टा के फलस्वरूप आप यहां आई हैं, वीरादेवी नाम की भी कोई आई हैं। सुना है, जमींदारी का नाश हो, पूंजीवाद नष्ट हो, मुनाफखोर देश को बरबाद कर रहे हैं, ये सब नारे जो आजकल बुलन्द हो रहे हैं। इन्हींका फायदा उठाकर वह हम लोगों को आफत में डालने की कोशिश कर रहा है। पर यहां तो सभी हम लोगों को जानते हैं, इसीलिए उसे कोई खास सुविधा नहीं मिल पाती। उसकी अपनी ज़मींदारी में यानी अपने दल में भी बहुत से ऐसे लोग हैं, जो उससे बेहद नाराज़ हैं और जो हमारी मदद के लिए भी तैयार हैं। उन्हींके ज़रिये उसके बहुत-से षड्यन्त्र हमारे सामने खुल जाते हैं। देखिए न, आपके आने से पहले ही आपके आने के बारे में मुझे मालूम हो गया था। कोई नुकसान नहीं कर पा रहा है, इसीलिए वह और भी बौखला उठा है। अब बाहर से भी लोगों को बुलवा रहा है।"

तिरछी हंसी हंसकर तुंगश्री बोलीं, "पर यह भी तो हो सकता है कि यह उनका व्यक्तिगत विरोध न हो, सिद्धांत का विरोध हो। वे

पूंजीवाद नहीं चाहते, इसीलिए आप लोगों के साथ उनका विरोध चल रहा है। इतना तो आप मानेंगे ही कि वे ज़मींदार बनकर नहीं रहना चाहते। अखबारों में उनके भाषण आपने पढ़े ही होंगे।"

"नहीं, मैंने पढ़ा नहीं, पर वह अगर चाहे भी तो ज़मींदार होकर नहीं रह सकता, क्योंकि ज़मींदारी को रेहन रखकर उसने इतनी मोटी रकम ली है कि अधिक दिन तक ज़मींदारी उसके हाथ में रह भी नहीं सकती। सो ज़मींदारी-प्रथा के विरोध में भाषण देने से उसका कुछ बिगड़नेवाला नहीं है। ऐसी हालत में ज़मींदारी का दामन पकड़कर बैठे रहना बुद्धिमानी भी नहीं है...तो ज़मींदारी से बड़ी से बड़ी रकम नकद खरी करके खिसक जाना ही बेहतर है। और केशव कर भी यही रहा है।"

"इतना नकद रुपया लेकर वे क्या करेंगे ?"

"यह तो मुझे मालूम नहीं।"

फिर थोड़ी देर दोनों ही चुपचाप चलते रहे।

एकाएक तुंगश्री फिर बोल उठीं, "आप जो भी कहें, मैंने उनके बारे में जितना भी देखा-सुना है, मेरी यह धारणा है कि वे एक महान देशप्रेमी हैं। आप लोग पूंजीवादी हैं, इसीलिए..."

इतना कहकर उन्हें खुद ही ऐसा लगा कि जैसे वे अपने-आपको ही जवाब दे रही हों। बातें बनाकर अपने सन्देही मन को तसल्ली दे रही हों।

हिरण्यगर्भ ने हंसकर जवाब दिया, "मैं पूंजीवादी नहीं हूं, यह तो मैं आपको पहले ही बता चुका हूं, पर आप लोगों के साथ भी मैं सहमत नहीं हूं। हर यहूदी बुरा है, यह समझकर हिटलर ने जो गलती की, हर मुसलमान खराब है, यह समझकर बहुतों ने जो गलती की है, आप लोग भी यह सोचकर उसी गलती को दुहरा रहे हैं कि हर पूंजीवादी बुरा है।...अरे, यह क्या हो गया, आप भूलकर हमारे यहां चली आईं ! आप तो उस मकान में सोएंगी। अकेली लौट सकेंगी आप ? चलिए, फिर आपको पहुंचा दूं।"

"जब आ ही गए, तो आपकी प्रयोगशाला को फिर से देख लूं।

जेल्डहाल क्या बना रहे हैं, वह क्या चीज़ है?" कुछ मुस्कराकर तुंगश्री ने कौतूहल का बहाना किया। उनका असली उद्देश्य यह था कि केशव-सामन्त के संबंध में कुछ और आलोचना हो।

"जेल्डहाल नाइट्रोजन एस्टीमेशन है।"

"इसे बनाने का उद्देश्य क्या है?"

"यह बताने के लिए तो पूरा लेक्चर देना पड़ेगा। जो न आपको पसन्द आएगा न मुझे।"

प्रयोगशाला में पहुंचते ही खर्राटों की आवाज़ आई। हिरण्यगर्भ ने मुड़कर देखा तो स्तम्भित रह गए। तुंगश्री ने भी देख लिया था। नरेन मेज़ पर पांव रखे कुर्सी में पीठ टेककर खर्राटें भर रहा था।

"नरेन!"

नरेन हड़बड़ाकर खड़ा हो गया। मेज़ पर रखी दवात उसके पैर से लगकर उलट गई। बोला, "मेरा ग्राफ बन गया है।"

"देखूं।"

पर ग्राफ की ओर देखकर नरेन के मुंह से बोल नहीं फूटा। दवात की सारी स्याही उसपर फैली हुई थी।

"क्या हुआ?"

"स्याही गिर पड़ी।"

हिरण्यगर्भ ने आगे बढ़कर देखा, नरेन का चेहरा पीला पड़ गया था। थोड़ी देर चुप रहने के बाद हिरण्यगर्भ ने कहा, "आज साइत खराब है। कल करना, जाओ, आज सो जाओ। हां, पहले एक काम करो, इन्हें पहुंचा आओ। कापी मेरी दराज़ में रख दो।"

नरेन कापी लेकर बगल के कमरे में चला गया। तुंगश्री ने अनुभव किया कि अब हिरण्यगर्भ उनके साथ बातचीत करने को तैयार नहीं हैं।

"आप नरेन के साथ चली जाइए, रात काफी हो गई है।"

"आप क्या अब सोएंगे?"

"सोऊंगा, पर कुछ पढ़ना है। हां, एक बात! आप क्या कल सवेरे

ही लौट जाएंगी ?"

"आप छोड़ दें तो जा सकती हूं।"

हिरण्यगर्भ का चेहरा हंसी से चमक उठा, बोले, "मेरा काम तो हो गया, अब आपको रोकने से क्या फायदा है, पर आप रहना चाहें तो मैं बहुत खुश होऊंगा।"

"आ गई हूं तो इस इलाके को देख ही लूं।"

"ठीक है, तो कल सुबह भेंट होगी। सवेरे यहीं चाय पीजिए।" और फिर हंसकर बोले, "सांप को मैं संभाल कर रखूंगा।"

"पर कल सवेरे आप रहेंगे ? मन्मथबाबू कह गए हैं, शायद आपको जगन्नाथपुर जाना हो।"

"हां, सच तो है। हाथी आने पर मुझे जाना पड़ेगा।"

लेकिन तुंगश्री उनसे जो अनुरोध कर बैठीं, उसके लिए हिरण्यगर्भ तो तैयार थे ही नहीं, तुंगश्री स्वयं भी नहीं तैयार थीं। उनके अवचेतन मानस में अनजाने ही जो इच्छा जग उठी थी, एकाएक वह मुखर हो उठी, तो वे खुद ही लज्जित हो गईं।

"आप जाएं तो मुझे भी साथ ले चलेंगे ?"

"कहां ? जगन्नाथपुर ? वहां दंगे में आपका जाना ठीक होगा ? गोली भी चल सकती है।"

"गोली से इतना डर नहीं है मुझे।" तुंगश्री ने मुस्कराकर जवाब दिया।

"हां, आप तो क्रांतिकारी हैं, यह तो मैं भूल ही रहा था।"

"मेरा रिवाल्वर नहीं लौटाएंगे ?"

"ज़रूर लौटाऊंगा। अभी चाहिए ?"

"नहीं, कल ही दे दीजिएगा।"

हिरण्यगर्भ भौंहें सिकोड़कर कुछ सोच रहे थे, बोले, "क्या सचमुच आप चलना चाहती हैं ?"

"अगर आपको एतराज़ न हो तो।"

"अच्छा, तो चलिएगा।"

नरेन बगलवाले कमरे से लौट आया। हिरण्यगर्भ ने पूछा, "तुम्हारी साइकिल यहां है?"

"जी हां।"

"तुम इन्हें पहुंचाकर जल्दी से एक बार महावीर मछुए को मेरे पास बुला लाना।"

"अच्छा।"

"तो आप इसके साथ चली जाइए।"

हिरण्यगर्भ अपनी प्रयोगशाला में चले गए। नरेन का अनुसरण करते हुए तुंगश्री फिर उस बगीचे को पार करने लगीं। लगभग एक मिनट चुप रहने के बाद फिर तुंगश्री से रहा नहीं गया। वे एक अशोभन प्रश्न कर बैठीं, "अच्छा, हिरण्यबाबू आदमी कैसे हैं?"

"देवतुल्य आदमी हैं। मैंने अपनी ज़िन्दगी में ऐसा आदमी कभी नहीं देखा था।"

इस उत्तर के बाद तुंगश्री को और किसी प्रश्न का प्रयोजन ही नहीं रह गया। जिस आदमी को थोड़ी देर पहले हिरण्यगर्भ ने इतना तिरस्कृत किया, उसीके मुंह से यह जवाब सुनकर उनके मन में कोई संशय नहीं रह गया। उन्हें आशा थी कि यह युवक उनके बिरुद्ध कुछ न कुछ कहेगा ही। जब और आगे बढ़े तो देखा कि एक झुका हुआ बूढ़ा व्यक्ति लाठी ठकठकाता आ रहा है। नरेन को देखते ही वह रुक गया।

"कौन है, बेटा नरेन? बन्द करके घर चल पड़े। मुझे आज कुछ देर हो गई, बेटा, क्या लौट जाऊं?"

"नहीं, आप चलकर बैठिए, मैं अभी आता हूं।"

वृद्ध प्रयोगशाला की ओर बढ़ गया। तुंगश्री ने पूछा, यह कोई मरीज़ है क्या?"

"नहीं, ये केशवसामन्त के ससुर हैं। गुज़ारा लेने आए हैं।"

"केशबसामन्त के ससुर!······क्या उनकी शादी हो चुकी है? यह

तो हम नहीं जानते थे ?"

"उन्होंने अपनी पत्नी को त्याग दिया है।"

"क्यों ?"

"यह तो मुझे ठीक-ठीक नहीं मालूम। बड़े ही कष्ट से इनका घर चलता है। हिरण्यदादा महीने में पचास रुपये देते हैं, उसीसे गुजारा होता है।"

"हिरण्यबाबू रुपये क्यों देते हैं ?"

"इनका लड़का यानी केशवबाबू का साला हिरण्यबाबू के साथ पढ़ता था, वह गुज़र गया है।"

बाकी रास्ते में तुंगश्री कुछ नहीं बोलीं। मकान के पास पहुंचकर एक कमरे में रोशनी देखकर उन्होंने नरेन से कहा, "अब आप जाइए, वही कमरा है न ?"

"नहीं, वह नहीं, उसमें तो हीराबाई हैं। आपका कमरा कौन-सा है, यह तो कुंज से पूछना पड़ेगा।"

इतने बड़े महल के किस सिरे पर अपना कमरा है, इसे ढूंढ़ना उन्होंने कितना आसान समझा था, अब पता चला कि वह इतना आसान नहीं है।

गेट के पास ही कुंज खड़ा था। वह तुंगश्री को अंदर ले गया।

"हीराबाई का कमरा मेरे पास ही है क्या ?"

"हां, इस बरामदे से मुड़ते ही उनका कमरा है।"

"ओह !"

कुंज चला गया। तुंगश्री ने चारों ओर निगाह डाली। व्यवस्था में ज़रा भी त्रुटि न थी। सिरहाने की तरफ गिलास-भर पानी तक ढका रखा था। जब सब चले गए तो वे स्तब्ध होकर वहीं खड़ी रहीं। फिर दरवाज़ा बन्द कर दिया। दरवाज़ा बन्द करके थोड़ी देर कमरे के बीच में खड़ी रहीं, फिर बिस्तर पर जा बैठीं। वे अपने को बड़ा हल्का महसूस करने लगीं। इतने दिनों से हृदय में जो कुछ संचित था, एक तूफान के साथ ही सब उड़ गया। वह संचय क्या था, क्षुद्र अभिमान का तुच्छ जंजाल। क्षुद्र ! तुच्छ !

उन्होंने देश के लिए इतने दिनों से जो कुछ सोचा है, जो सहा है, वह कुछ भी नहीं है। नहीं, यह बात वे कभी नहीं मानेंगी। वे यह कभी नहीं मानेंगी कि उनका इतने दिनों का त्याग एक मिथ्या पर ही प्रतिष्ठित था। यह वे कभी नहीं मान सकतीं कि पूंजीवाद अच्छा है। उन्होंने खुद देखा है कि बच्चे, बूढ़े और स्त्रियां भूख की ज्वाला से जब रास्ते में छटपटाकर हाहाकार कर रहे थे तो मुनाफाखोरों ने गोदाम में चावल की बोरियां भर रखी थीं। सड़ जाने दिया, फिर भी नहीं निकला।···फिर उन्हें एकाएक याद आया, हिरण्यगर्भ ने भी तो स्वीकार किया है कि वे पूंजीवाद के विरोधी हैं। तो? फिर से सब गड़बड़ा गया।

तो फिर क्या······केशवसामन्त ने उनसे छल किया है। यह कठिन सत्य सहसा उसके सामने स्पष्ट हो गया। समाज ने उनसे प्रवंचना की है, विदेशी शासकों ने उनसे प्रवंचना की है। उनके निष्ठुर घिनौने हृदयहीन अत्याचारों के विरुद्ध लड़ते-लड़ते जब वे क्षत-विक्षत और ध्वस्त होकर गिर पड़ी थीं तब जिस व्यक्ति ने उन्हें उठाया था, जिसे वे देवता मानती थीं, उसने भी उनसे प्रवंचना की है! फिर इसके साथ ही वे सोचने लगीं, क्या सचमुच केशवसामन्त ने प्रवंचना की है? वह देवता उनकी अपनी ही अतृप्त कामना का सृजन तो नहीं था। प्यासा हिरण रेगिस्तान में भटक-भटककर जिस मरीचिका का सृजन करता है, क्या यह भी वैसा ही कुछ था? केशवसामन्त ने ऐसा कुछ भी नहीं किया, जिसके बल पर निस्संशय भरोसा किया जा सके। उसने रुपये खर्च किए हैं, लम्बी चौड़ी बातें की हैं, और तो कुछ भी नहीं किया। देवत्व के अर्जन के लिए बस इतना ही काफी है क्या? वे जानती हैं कि यह काफी नहीं है। उन्होंने मास्टरदादा की जीवन-कहानी सुनी है। इस युग के वीर बादल, चौदह साल के किशोर टेगरा की वीरत्व-भरी गाथा का अर्थ वे समझ चुकी हैं। उन्होंने धलघाट की वृद्धा, अशिक्षिता सावित्रीदेवी को भी देखा है, जो पुलिस के अत्याचार, अर्थलोभ सब कुछ को तुच्छ करके अपनी महिमा अक्षुण्ण रख सकी थीं। इतना सब देखती हुई भी वे केशवसामन्त के पाखण्ड को कैसे सच मान बैठीं? यह

गलती कैसे हुई ? जब वे सोचने लगीं तो उन्हें एक अद्भुत बात याद आई। वे भूल गई थीं, क्योंकि वे भूलने के लिए व्यग्र थीं। हरेक मनुष्य के मन में जो सत्ता मोहित होने के लिए उत्सुक रहती है और जिसके मोहित हुए बिना जीवन का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता, अपनी उस अन्तरतम सत्ता को वे ऐसा कुछ भी नहीं दे सकी थीं जिससे वह तन्मय होकर रह जाए। रोज़मर्रा के वैचित्र्यहीन जीवन की पुनरावृत्ति से वे इतनी थक गई थीं कि उनमें सोचने-विचारने की शक्ति भी नहीं रह गई थी। शून्य हृदय के हाहाकार को दबाने के लिए उन्हें हाथ के पास जो भी मिला उसे ही वेदी पर स्थापित कर लिया। उसमें उस वेदी पर बैठने की योग्यता है भी, यह उन्होंने अच्छी तरह नहीं जांचा। जांचने का धीरज ही नहीं था।

उन्हें उन दिनों के जीवन की एकरसता की याद आई। कलकत्ता के रास्ते का प्रवाह, पर वह कितना वैचित्र्यहीन था। ट्राम, टैक्सी, रिक्शा, हर दीवार पर एक जैसे विज्ञापन, रोज़ मकानों के एक जैसे दृश्य, गली के मोड़ पर परिचित चेहरों के बार-बार दर्शन, बगल के मकान में ग्रामोफोन के एक ही रिकार्ड की पुनरावृत्ति, रेडियो में रोज़ एक ही ढंग के गीत और निर्दिष्ट वार्ताएं। भीड़ की कमी नहीं, पर वैचित्र्य कहीं भी नहीं था। साम्यवाद, पूंजीवाद की एक जैसी बहस, और बहस करनेवाले भी एक ही जैसे। वे यन्त्रचालित इन्हींके बीच प्रतिदिन घूमा करती थीं। अकृतज्ञ समाज पर एक आक्रोश दिल में लिए, तपेदिक के मरीज़ भाई का बोझ ढोते उनके दिन बीतते थे। जेल के बाहर और भीतर उन्हें कोई खास फर्क नहीं मालूम होता था।

ठीक ऐसे ही समय में केशवसामन्त सामने आए थे। उनके साथ प्रबल उत्साह और बलिष्ठ स्वास्थ्य था और उन्होंने तुंगश्री के सामने एक आदर्श-उज्जवल कर्मधारा का मार्ग खोल दिया था। उनके रोज़मर्रा के अभावों की ग्लानि को दूर कर दिया था······। नहीं, विचार करने का मौका उन्हें मिला ही कहां। वे स्वप्न रचने लगी थीं। उस आदमी को केन्द्र बनाकर उन्होंने बहुत-से सपने देखे थे।···

एकाएक वे फिर सचेत हो उठीं। केशवसामन्त ने उनके साथ छल किया है। वीरादेवी ? कौन है वह युवती ? उसका नाम भी तो कभी सुनने में नहीं आया। केशवसामन्त विवाहित हैं, यह बात भी तो उन्होंने कभी नहीं बताई थी। पत्नी को त्याग दिया है, क्यों ? अपने पारिवारिक जीवन के सम्बन्ध में उन्होंने कुछ भी नहीं बताया था। इसपर तुंगश्री को क्षोभ हुआ। क्षण-भर बाद ही फिर मन में आया कि वे बताते ही क्यों ? परिचय ही कितने दिन का था ?

उन्होंने एक लम्बी सांस खींची। जूते खोल दिए। नया सूटकेस पास ही पड़ा था। उन्होंने पास जाकर देखा कि उसीमें उनके कपड़े-लत्ते सजाकर रखे हुए हैं। टूटा सूटकेस भी उसके पास पड़ा था।

अनजाने ही एक मुस्कान की आभा उनके चेहरे पर बिखर गई। सूटकेस से निकालकर उन्होंने कपड़े बदले। कपड़े बदले बिना उन्हें नींद नहीं आती। इस कारण जेल में उन्हें बहुत दिक्कत उठानी पड़ी थी। बत्ती बुझाकर वे लेट गईं, पर नींद नहीं आई। मन में एक शून्यता की अनुभूति हुई। वे अपने को एक खाली पटाखे के बाण की तरह महसूस करने लगीं, जिसकी क्षणस्थायी ज्योति का स्फुरण समाप्त हो गया था और जो अंधेरे में गुरुत्वाकर्षण के कारण अकेले ज़ोर से अपनी उत्सवहीन शून्यता लेकर नीचे गिर रहा था। क्या वे फिर अपने को भर नहीं सकतीं ? काम ! काम ही लेकर तो वे हैं, जो कार्य आदर्श लगता है, उसे ही कर रही हूं, फिर भी मन कहां भरता है ? क्यों नहीं भरता, यह वे बता नहीं सकतीं। मज़दूर-सभाओं में मज़दूरों का पक्ष लेकर पूंजीवादियों के खिलाफ ज़हर उगलना और हड़तालों के वही बखेड़े। नहीं, इससे मन कहां भरता है ? जिस जोश के साथ वे क्रांतिकारी दल में शामिल हुई थीं, इसमें वह चीज़ नहीं है। देश के लिए किसी भी क्षण वे मरने को तैयार हैं···यह सर्वत्यागी निष्ठा हृदय को जिस तरह परिपूर्ण रखती थी, अब मज़दूरों को हड़ताल के लिए उत्तेजित करके वह वैसा परिपूर्ण नहीं हो पाता। पहले के मूल में त्याग था और दूसरे के मूल में भोग है। पर भोग न करें, क्यों ? सब भोग

कर रहे हैं, वे भी क्यों न करें ? उन्हें मेघसुन्दर की याद आई। दम्भी आदमी, गरीबों का खून चूसकर भोग के शिखर पर आसीन है, पर ऐश्वर्य से क्या उसे सुख मिला है ? उलटे उसे तो दुःख ही मिल रहा है। उसे संगीत से ही आनन्द मिलता है, वह संगीत में ही मस्त रहना चाहता है। हिरण्यगर्भ ठीक कह रहे हैं।

उनकी आंखों के सामने हिरण्यगर्भ का चेहरा उभर आया। उनकी बुद्धिदीप्त शरारत से भरी आंखें, जो पल-पल में अनमनी-सी हो जाती हैं और फिर दूसरे ही क्षण बहुत सजग हो उठती हैं। वे भी अपने प्रयोगों में मस्त हैं। तुंगश्री का मन वैसे ही कुछ लेकर व्यस्त हो जाने को व्यग्र हो उठा। पर वह क्या चीज़ थी ? कब वे सो गईं, वे कह नहीं सकती थीं। जब उनकी नींद टूटी तो एक अपूर्व स्वर से सारा अन्धकार व्याकुल हो रहा था। कोई तानपूरे के साथ आलाप भर रहा था। उन्हें तुरन्त याद आया कि अलका पास ही है। संगीत-सभा में अलका जब उन्हें पहचान नहीं पाई तो फिर उनके सामने आत्मप्रकाश की इच्छा तुंगश्री में नहीं रह गई थी, पर इस निर्जन अंधकार में सुर के अनोखे परिवेश में सारा संकोच दूर हो गया। निशीथ की निविड़ता में बीते दिनों की बालसंगिनी से मिलने के लिए उनका मन ललक उठा। उन्हें याद आया एक अंधेरी संकरी गली से होकर अलका के घर जाना पड़ता था, अब लगा मानो वही संकरी गली आज अंधेरी रात के रूप में साकार हो उठी है।...बत्ती जलाकर वे खड़ी हुईं। फिर सावधानी से बाहर निकल पड़ीं—नंगे पांव।

पर कमरे से निकलते ही वे एक मुसीबत में पड़ गईं। उनके कमरे के सामने जो बरामदा है, वह दाहिने और बाएं दोनों ही ओर मुड़ गया है, परन्तु तानपूरे की आवाज़ उनके शयनकक्ष के पीछे से आ रही थी। दाहिने या बाएं, किस ओर से जाने पर अलका का कमरा मिलेगा, यह उनकी समझ में नहीं आया। थोड़ी देर दुविधा में पड़े रहकर वे दक्षिण की ओर बढ़ने लगीं, पर दक्षिण की ओर घूमते ही एक बहुत बड़ा-सा दालान दिखाई पड़ा, दालान की दीवारों पर बड़े-बड़े तैलचित्र शोभायमान थे, झाड़फानूस

टंगे थे। दालान के एक छोर पर बहुत बड़े सफेद डोम से आच्छादित धीमी रोशनी जल रही थी। उस स्वप्निल प्रकाश में अभी-अभी जगी हुई तुंगश्री की आंखों में दालान बड़ा अजीब-सा लग रहा था। दोनों ओर तैलचित्र टंगे हुए थे, शायद हिरण्यगर्भ के पूर्वजों की तस्वीरें थीं। बीच-बीच में बहुत-सी शाखाओं-प्रशाखाओंवाले झाड़फानूस झूल रहे थे। उनके बीच उस गहरी अंधेरी रात में वे अकेली चल रही थीं। चारों ओर लोककथाओं के संसार जैसा एक रहस्य छाया हुआ था। इस अपूर्व अनुभव में वे इतनी तन्मय हो गई थीं कि तानपूरे की ध्वनि धीमी और धीमी होती हुई जाने कब खो गई, उन्हें कुछ पता ही न लगा। वे स्वप्नाविष्ट-सी आगे बढ़ती रहीं, पर दालान के एक छोर पर सहसा उन्हें रुकना पड़ा। कहीं से रोने की दबी हुई आवाज़ आ रही थी। मुड़कर उन्होंने जो दृश्य देखा वह इतना अप्रत्याशित था कि एकाएक उनकी धड़कन रुक-सी गई। बगल के कमरे की अधखुली खिड़की से उन्होंने देखा कि एक बिस्तर पर नृत्य-शिक्षक विशु बैठा है और जमीन पर घुटने के बल बैठी विनोदिनी उसकी गोद में मुंह रखकर रो रही है। तुंगश्री थोड़ी देर स्तब्ध खड़ी रहीं, फिर धीरे-धीरे खिड़की के निकट बढ़ गईं। वे किसी भी तरह अपने को रोक नहीं सकीं। उन्हें विशु की आवाज़ सुनाई पड़ी, "मैं तुम्हारे नानाजी को किसी भी तरह यह बात नहीं बता सकूंगा। यह तो असम्भव है, वे कभी राज़ी नहीं होंगे। केशवबाबू ने जब शिखुदीदी से विवाह करना चाहा था तो कितनी हलचल हुई थी, तुम्हें याद नहीं?"

विनोदिनी ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसकी सारी देह कई बार कांप उठी। उसने विश्वेश्वर के घुटने और भी ज़ोर से पकड़ लिए। तुंगश्री शायद कुछ देर और ठहर कर चली जातीं, पर दालान के एक छोर पर उस अल्सेशियन कुत्ते को खड़ा देखकर वे सिर से पैर तक सिहर उठीं। पल-भर में ही वह कमरे के भीतर चली गईं। भाग्यवश दरवाज़ा खुला था, अगर खुला न होता तो उन्हें आवाज़ देनी पड़ती। स्तम्भित विशु जल्दी से खड़ा हो गया, विनोदिनी भी एक तरफ खड़ी हो गई। अप्रत्याशित रूप से ऐसे

आविर्भाव के लिए दोनों में से कोई भी तैयार नहीं था।

तुंगश्री बोलीं, "जो बाईजी आई हैं, वे किस कमरे में रहती हैं? वे मेरी परिचित हैं, उनके पास जाने के लिए ही मैं निकली थी, पर शायद रास्ता भूल गई।"

"वे तो उस तरफ रहती हैं," यथासम्भव संभलकर विशु ने जवाब दिया, "आप तो उलटी तरफ आ गई।"

"ओह, बाहर आपका वह कुत्ता घूम रहा है। उसे ही देखकर मैं जल्दी से कमरे में चली आई।"

विनू सिर झुकाकर एक तरफ खड़ी थी। विशु ने उसकी ओर देखकर कहा, "विनू तुम दुष्ट को हटा ले जाओ।"

विनू जाने लगी, पर उसके लज्जाकातर अप्रतिभ चेहरे की ओर देखकर अचानक तुंगश्री के मन में एक हलचल-सी मच गई। संध्या से ही मेघसुन्दर के विरुद्ध जो क्रोध उनके मन में व्यर्थ आक्रोश से फंसे हुए सांप की तरह फुफकार मार रहा था, उनके अत्याचार का एक और नमूना देखकर वह सांप की तरह फनफना कर खड़ा हो गया। अत्याचारी ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध जीवन-मृत्यु का प्रण लेकर खड़े होने की जो प्रेरणा उन्हें तब मिली थी, एकाएक अब इस प्रणयी-युगल की भीत-चकित असहाय अवस्था देखकर उन्हें जैसे वही प्रेरणा फिर से मिली हो। उनके मानस-पटल पर अतीत का एक निर्दय चित्र उभर आया। स्पर्द्धित धनी असहाय दास पर चाबुक फटकार रहा है····'अंकिल टाम्स् केबिन' का साइमन लेगरी एकाएक उनकी आंखों के सामने मूर्त हो उठा। इसके अलावा इस अप्रत्याशित आविष्कार के बीच मेघसुन्दर को चोट पहुंचाने का एक अवसर भी उन्हें दिखाई पड़ा। मेघसुन्दर पर चोट करने की आकांक्षा उनके मन में प्रबल हो उठी थी। जाती हुई विनू को रोककर वे बोलीं, "सुनिए!"

विनू रुक गई। तुंगश्री आगे बढ़कर उसके सिर और कन्धे पर हाथ फेरती हुई स्निग्ध स्वर से बोलीं, "देखिए, मैंने अचानक जो कुछ देख लिया है, इसके लिए आप लोगों को कुण्ठित होने की ज़रूरत नहीं है। एक बात

अभिभूत-सा होकर विशु चुप हो गया। तुंगश्री भी अभिभूत हो गई थीं। उनका वंचित हृदय भी जैसे आंख बचाकर चुपके से उसी अमृत को पीने लगा था।

उन्होंने कहा, "मैं समझ गई हूं, पर यह बात सही है कि दोनों को बचाना सम्भव नहीं होगा। अगर आप विनू को चाहते हैं तो उन्हें आघात पहुंचाना ही पड़ेगा।"

"पर उनकी मदद के बिना मैं विनू को लेकर कहां रहूंगा?"

"अगर हिरण्येबाबू से कहा जाए तो कैसा रहेगा?"

"हिरण्यदादा चाहें तो हमें आश्रय दे सकते हैं, पर वे देंगे नहीं।"

"क्यों?"

"दें तो मेघूबाबू की सम्पत्ति से वंचित हो जाएंगे। मेघूबाबू के पास अपार सम्पत्ति है, पर बाल-बच्चा कोई नहीं है। सब कुछ शिखुदीदी और हिरण्यदादा को मिलेगा। मन्मथबाबू यानी शिखुदीदी के पति अभी ज़मींदारी के सर्वेसर्वा मैनेजर हैं, पर हिरण्यदादा का भी सम्पत्ति में हिस्सा है। कई लोगों का कहना है कि अगर हिरण्यदादा शादी कर लें तो मेघू-बाबू अपनी सारी सम्पत्ति हिरण्यदादा को ही दे जाएंगे। पर वे हमें आश्रय दें तो मेघूबाबू निश्चय ही उन्हें सम्पत्ति से वंचित कर देंगे। वे बहुत हठी आदमी हैं, हमारे लिए हिरण्यदादा भला इतनी बड़ी जायदाद छोड़ना चाहेंगे?"

तुंगश्री थोड़ी देर चुप रहकर बोलीं, "अगर वे राज़ी हों तो आप तैयार हैं न?"

"हिरण्यदादा अगर आश्रय दें तो······पर वे भी कुछ वैसे ही हैं, यह सुनकर कहीं वे भी······"

"यह आप मुझपर छोड़ दीजिए। अगर इनमें से कोई भी सहारा नहीं देगा तो भी इसके लिए आपको दिक्कत नहीं होगी क्योंकि आप दोनों ने जिस विद्या को सीखा है उसका मूल्य थोड़ा नहीं है। जो भी हो मैं कोशिश कर देखूं कि क्या कर सकती हूं······आप निश्चिन्त रहें। चलिए ज़रा मुझे

"हम दोनों शायद एक ही काम कर रहे हैं। हां, ढंग कुछ अलग है। तेरे मिल-मज़दूर पूंजीवादियों के मुनाफे में हिस्सा बंटाना चाहते हैं, मैं भी वही चाहती हूं; फर्क सिर्फ इतना है कि तुम लोग उसे छीनकर लेना चाहते हो और हमें वे खुशी के साथ दे रहे हैं।"

मुस्कराकर तुंगश्री ने पूछा, "तू खूब रुपये कमा रही है न ?"

"खूब कहां ? महीने में तीन हज़ार भी तो नहीं होता।"

"तू तीन हज़ार से भी ज़्यादा चाहती है ?"

"क्यों नहीं ?" हीराबाई की आंखों में एक दर्प-भरा प्रश्न झलक उठा।

तुंगश्री भी हंसती हुई थोड़ी देर उसकी ओर देखती रहीं, फिर बोलीं, "हमारे मुल्क में लोगों की सालाना औसत आमदनी कितनी है, जानती हो ? सिर्फ पैंसठ रुपये।"

"उसे जानकर मुझे क्या करना है ? मैं तो बस अपनी कमाई बढ़ा सकती हूं। दूसरों की कमाई बढ़ाने को मेरे पास न तो ताकत ही है, न समय ही।"

बात बहुत युक्तियुक्त थी, तुंगश्री कुछ भी नहीं कह सकीं। जैसे भी हो वे मज़दूरों की आमदनी बढ़ाना चाहती हैं, अलका भी तो मज़दूरिन ही है, वह अगर किसी कौशल से अपनी कमाई बढ़ा सकी है तो इसमें एतराज़ ही क्या हो सकता है ? इसके साथ ही एक और प्रश्न उनके मन में उठा— क्या मज़दूरों की आमदनी की भी एक हद होनी चाहिए। यह हद कहां तक हो सकती है, ज़िन्दा रहने का अधिकार हर किसीको है, स्वच्छन्द रहकर ज़िन्दगी बिताने के लिए जितने धन की ज़रूरत पड़ती है, उतना तो सबको मिलना ही चाहिए। पर सुख और स्वच्छन्दता का मानदण्ड सबका एक जैसा नहीं है। एक के लिए जो ज़रूरी है, दूसरे के लिए वह विलासिता-मात्र है, संगीत-चर्चा मेघसुन्दर के लिए तो ज़रूरी चीज़ है। साथ ही उनके मन में यह भी आया कि सोवियत व्यवस्था में सिर्फ संगीत ही नहीं, हर प्रकार की कला-चर्चा का भी बेहतरीन इन्तज़ाम है, लेकिन वह सिर्फ मेघसुन्दर जैसों के लिए ही नहीं, सबके लिए है। अलका को साम्यवाद के बारे में कुछ मालूम है क्या ? कौन जाने ? सीधे यह बात पूछना सम्भव

नहीं था । एकाएक उन्होंने यह अनुभव किया कि बचपन में वे जिस अलका को जानती थीं, यह वह नहीं है । हो सकता है कि परिभाषा के अनुसार अलका भी एक मज़दूरिन ही हो, पर उसके श्रम से होनेवाली आमदनी का परिमाण यहां तक आ पहुंचा है कि अब उसे पूंजीपतियों की श्रेणी में रखा जा सकता है । एक और चिन्ता उसके मन में लहरा उठी । मज़दूर ही बाद को चलकर क्या पूंजीपति में परिणत नहीं हो जाता है ? पर इसे उन्होंने प्रश्रय नहीं दिया । सालों के बाद बालसंगिनी से भेंट होने पर जिस तरह बात करनी चाहिए, तुंगश्री मुस्कराकर फिर उसी ढंग से बात करने लगीं ।

"इतने दिन बाद तुझसे भेंट होने पर सचमुच बड़ी खुशी हो रही है ।"

"मुझे भी । अच्छा तू तो देशसेवा कर रही है, शादी-ब्याह नहीं किया ?"

"शादी का समय ही कहां मिला ? जेल की चहारदीवारी के अन्दर ही तो ज़िन्दगी बीती ।"

"मां कहां है ? गांव में ही हैं ?"

"मैं जब जेल थी तभी मां चल बसीं । सन् '५० के अकाल में भूखों मर गईं । रत्ती-भर मांड़ तक पीने को नहीं मिला ।"

"और वह, छोटा भाई ?"

"उसे तपेदिक हो गया है, शायद न बचे ।"

थोड़ी देर दोनों चुप रहीं । तुंगश्री की आंखों से ज्वाला-सी उठ रही थी । अलका शान्त बैठी रही ।

फिर मृदु स्वर में अलका बोली, "ईश्वर की मर्ज़ी···"

"तू ईश्वर में विश्वास करती है ?"

"करती हूं ।"

"तेरी आर्थिक स्थिति अच्छी है, इसीलिए तू मानती है । मैं विश्वास नहीं करती । बचपन से ही मुझपर जो अन्याय, अत्याचार होता आ रहा है, उसकी सारी जिम्मेदारी मैं किसी अज्ञात ईश्वर के माथे मढ़कर निश्चिन्त

नहीं बैठ सकती। जब तक मैं उन अत्याचारी पिशाचों को निर्मूल नहीं कर लूंगी तब तक चैन नहीं लूंगी।"

"बदला लेने की कोशिश करने से तुझे शान्ति नहीं मिलेगी। सबको प्यार करने की चेष्टा करने से ही शान्ति मिल सकती है।"

"इस तरह की बातें करना आसान है, तू अगर मेरी जैसी हालत में पड़ती तो..."

"पड़ी तो थी, तुझसे भी खराब हालत में आ पड़ी थी, गरीबी के भंवर में पड़कर मैं भी डूब रही थी, केवल प्यार के सहारे ही वहां से उठ पाई।"

तंगश्री अवाक् होकर उसकी ओर देखती रहीं।

अलका ने इससे अधिक नहीं कहा, चुप रह गई।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद तुंगश्री ने कहा, "तुझे शायद मिला हो, पर मुझे अभी तक प्यार करने के लिए कोई भी नहीं मिला। ऐसा आदमी तो मेरी आंखों के सामने अब तक नहीं पड़ा।"

"आदमी को ही प्यार करना पड़े, ऐसा नहीं है। अगर किसी काम से प्यार करें तो भी वही फल होता है, पर वह प्यार निष्काम आत्म-समर्पण होना चाहिए।"

"तूने किसी आदमी से प्यार नहीं किया है ?"

"नहीं, मैं संगीत से प्यार करती हूं, और इसी प्यार के रास्ते में मैं संगीतकारों को प्यार कर पाई हूं। मेरी दुनिया प्यार के रास्ते से ही मेरी मुट्ठी में आ गई है। जिस मेघसुन्दर के ऊपर तू इतनी नाराज़ है, मुझे उन-पर श्रद्धा है। और किसी वजह से नहीं, बस इसलिए कि वे संगीतशास्त्र के गुणी हैं।"

तुंगश्री तर्कशास्त्र में अपटु नहीं थीं, बोलीं, "पर जो तुम्हारे संगीत के कद्रदान नहीं है, क्या उनपर तुम्हें गुस्सा नहीं आता ?"

"वैसे लोग तो हमारे पास ही नहीं फटकते, फिर उनके बारे में प्यार और नफरत का सवाल ही नहीं उठता, वे मुझे नहीं पहचानते, मैं उन्हें नहीं पहचानती। पहचानने का आग्रह भी नहीं है, ज़रूरत भी नहीं। मुझे जो

मिले हैं, उनसे ही मेरी दुनिया ग्राबाद है, इससे ज़्यादा लेकर मुझे करना भी क्या है।"

एकाएक तुंगश्री ने सोचा कि इस तरह समय गंवाना बेकार है। बाल-संगिनी को देखने का कौतूहल अब मिट चुका था। तानपूरा लेकर निश्चिन्त कमाई के सहारे निःशंक विश्राम के बीच जो महिला यहां बैठकर हितोपदेश के बंधे हुए बोल दुहरा रही है उसके साथ उनकी बालसंगिनी के चेहरे के अलावा और कुछ भी मेल नहीं खाता। उस कलकंठी स्वतःस्फूर्त प्राणचंचला किशोरी की लास्य-लीला—जिसने उन्हें बचपन में अपनी ओर आकृष्ट किया था उसका लेश-मात्र नहीं रहा। वह बदलकर ऐसे रूप में परिणत हो गई है जो केवल भारतवर्ष की मिट्टी में ही सम्भव था। यह अब शास्त्रों के वचन दुहरानेवाला एक यन्त्र-मात्र रह गई है। इसी यन्त्र के सहारे मेघसुन्दर जैसे लोग अपनी संचित सम्पत्ति को पीढ़ियों से अगोरते आ रहे हैं। लोग सुर के मोह से गीत की भाषा पर भी विश्वास कर रहे हैं। भूखों, वंचितों ने भी इस निष्काम प्रेम के छल में आकर युग-युग से आत्मसमर्पण किया है। खुद अपनी कामनाओं को सोलह आने की जगह अठारह आने पूर्ण करने के बाद और भविष्य में उसे पूर्ण करने की सारी सुविधाओं को निश्चिन्त बनाए रखकर निष्काम धर्म के बोल दुहराते जाना बहुत आसान है। तुंगश्री उठ खड़ी हुई।

"अब मैं चलूं भई, कल शायद कलकत्ता चले जाना पड़े, इसीलिए इतनी रात को आकर तुझे तंग किया। तू ही हीराबाई है, एकाएक यह यह जानकर तुझसे बिना भेंट किए रहा नहीं गया। तेरी संगीत-चर्चा में भी रुकावट डाल दी…"

"तुझे देखकर मुझे भी बड़ा आनन्द हुआ, और भी होता अगर तुझे सुखी देखती। कलकत्ता में तू कहां रहती है, तेरा पता क्या है ? मैं भी तो बीच-बीच में कलकत्ता जाती हूं।"

अलका ने उठकर एक छोटी-सी अटैची खोली और उसमें से एक नोट-बुक और कलम निकालकर तुंगश्री को देते हुए बोली, "इसपर अपना पता

लिख दे, कलकत्ता आने पर भेंट करूंगी।

तुंगश्री ने क्षण-भर सोचकर पता लिख दिया, "अच्छा तो अब चलूं।"

"अच्छा।"

तुंगश्री ने बाहर निकल आईं। विशु के कमरे में जाकर देखा, वह अब तक जाग रहा था। उसीने फिर तुंगश्री को उनके कमरे तक पहुंचा दिया। चलते समय उन्होंने फिर पूछा, "तो क्या राय है, मैं कोशिश करूं?"

"कीजिए, पर देखिए अगर मेघूबाबू···"

"मेघूबाबू तो अपनी भरसक बाधा डालेंगे ही इसे ध्यान में रखकर ही कोशिश करनी पड़ेगी। अगर आप सम्मति दें तो मैं यथासाध्य प्रयास करूंगी।"

"हिरण्यदादा से कहेंगी? अगर वह भी···"

तुंगश्री ने मुड़कर विशु के चेहरे पर नज़र डाली—आर्त, असहाय! फिर उन्हें साइमन लेगरी की याद आई। साइमन लेगरी जैसे लोगों ने वेश बदल लिया है, पर तुंगश्री की आंखें उन्हें पहचान ही लेती हैं।

"किससे कहूंगी, क्या करूंगी, यह सब आप मुझपर ही छोड़ दीजिए। आप लोगों की शादी हो जाए, मैं इसके लिए जी-जान से कोशिश करूंगी। पर इससे पहले आपकी सम्मति लेनी ज़रूरी है।"

थोड़ी देर चुप रहकर अस्फुट स्वर में विशु ने जवाब दिया, "कीजिए···"

अपने कमरे में पहुंचकर तुंगश्री ने देखा कि वे बत्ती जली ही छोड़ गई थीं। दरवाज़ा बन्द करके वे थोड़ी देर खड़ी रहीं, फिर बिस्तर पर जा बैठीं। आज संध्या से एक के बाद एक कितनी विचित्र घटनाएं हो चुकीं। एक केलाइडोस्कोप पर जैसे वे आंखें न टिकाकर खड़ी हों। हाथ हिला और एक नई तस्वीर सामने आ गई। हिरण्यगर्भ, शिखरिणी, मेघसुन्दर, हीराबाई, विशु, विनू—हर चित्र अनूठा! मन ही मन कुछ मुस्कराकर उन्होंने बेड-स्विच दबाकर बत्ती बुझा दी, फिर लेट गईं। आंख मूंदते ही याद आई कि केशवसामन्त ने उन्हें ठगा है, उन्होंने फिर आंखें खोलीं तो अंधेरा दिखाई पड़ा। उन्हें लगा कि उनकी आंखों के सामने सारी ज़िन्दगी ही अंधेरे पर्दे

की तरह फैली पड़ी है। उन्हें उम्मीद थी कि केशवसामन्त शायद उसे हटा देंगे, पर उन्होंने ऐसी आशा की ही क्यों ? मन में भी भिखारिन की तरह वे हाथ पसारकर खड़ी थीं। उन्होंने दांतों से अपने होंठ ज़ोर से दबा लिए, मानो मन की दुर्बलता का गला घोंट रही हों, फिर करवट लेकर बगल के तकिए को ज़ोर से अपनी ओर भींच लिया। टन्-टन् घड़ी में दो बज गए। उन्होंने आंखें मूंदकर सोने की कोशिश की। एक···दो···तीन···चार··· पांच···छः···वे एकाग्र होकर गिनती रहीं···

सो गई थीं क्या ? फिर से सारा अन्धकार तानपूरे के सुख से परिपूर्ण हो गया था, जैसे कांप रहा हो। मुग्ध, उत्कर्ण होकर वे सुनने लगीं···एकाएक मन में आया, तो अलका ने जो कहा, क्या वह सच है, क्या सचमुच ही वह संगीत के प्रेम में आत्मसमर्पण कर चुकी है। भैरव राग के आलाप में तल्लीन अलका को अगर वे इस समय देख पातीं तो उन्हें इसमें कोई सन्देह नहीं रह जाता।

एकाएक बाहर आहट सुनकर वे उठ बैठीं, बत्ती जला दी। दरवाज़े पर हल्की थपकी सुनाई पड़ी।

"कौन है ?"

"मैं कुंज हूं।"

तुंगश्री ने उठकर दरवाज़ा खोल दिया।

"बाबूजी कह रहे हैं कि हाथी आ गया है, अगर आप चलना चाहती हैं तो अभी चलिए।"

"चलो।"

एकाएक तुंगश्री यह देखकर अवाक् रह गईं, क्योंकि वह मन ही मन इस बुलावे की ही प्रतीक्षा कर रही थीं।

हिरण्यगर्भ अभी तक प्रयोगशाला का काम नहीं खत्म कर पाए थे, थोड़ा-सा घी लेकर वे कुछ कर रहे थे, तुंगश्री की ओर मुड़कर बोले, "आप बैठिए, मेरा काम हो ही गया है।"

तुंगश्री बैठी नहीं, उनके पास ही जा खड़ी हुईं।

"घी की जांच कर रहे हैं क्या ?"

"नहीं, कई किस्मों के घी से एक मीडिया तैयार कर रहा हूं।"

"मीडिया क्या चीज़ है ?"

"मीडियम का बहुवचन। सरल भाषा में खेती के लिए घी से खाद की तैयारी की जा रही है।"

"खेती ?"

"हां, बैक्टीरिया बोऊंगा।"

तुंगश्री विस्मय से देखती रहीं।

हिरण्यगर्भ हंसकर बोले, "बैक्टीरिया सुनकर आपको कुछ अजीब-सा लगता होगा। पर बैक्टीरिया भी एक उद्‌भिद पदार्थ है। गेहूं, जौ, धान, आम, जामुन, कटहल, गुलाब, चमेली, रजनीगंधा ये सब जैसे उद्‌भिद हैं, बैक्टीरिया भी वैसे ही उद्‌भिद हैं, फर्क सिर्फ इतना है कि वे सूक्ष्मतम हैं···"

हिरण्यगर्भ ने कई टेस्टट्यूब उठा-उठाकर देख लिए, फिर उनके मुंह को रुई से बन्द करने लगे।

"बस अब नरेन्द्रनाथ के लिए एक स्लिप लिखकर हम चले चलेंगे। उस मेज़ पर मेरा पैड है, ज़रा दीजिए तो! लाल-नीली पेंसिल भी वहीं पर है।"

बगलवाली मेज़ पर से तुंगश्री ने पैड और पेंसिल ला दी।

हिरण्यगर्भ ने बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा, "नरेन, मैं जा रहा हूं, लौटने में देर हो सकती है। आठ बजे के अन्दर न लौटूं तो तुम इन्हें आटोक्लेव कर रखना। पन्द्रह पौंड प्रेशर में पन्द्रह मिनट तक। आफ भी तैयार रहना चाहिए।"

"आठ बजे के अन्दर ही क्या हम लौट पाएंगे ?" तुंगश्री ने पूछा।

"आशा तो है। देखिए···चलिए अब चलें। हां, देखिए एक अनुरोध है, आप बुरा तो नहीं मानेंगी ?"

"कहिए।"

"दंगा करने की इच्छा मुझे नहीं है। आप अगर ज़रा मदद करें तो बेकार की खूनखराबी रुक जाए। मन्मथ अवश्य बांध पर अपना लाव-लश्कर लेकर तैयार होगा। मुझे घायलों की देखभाल के लिए बुलवाया है। सर्जिकल औज़ार भी साथ लाने को लिखा है, पर आप थोड़ी-सी मदद करें तो दंगा टल जाएगा।"

"मैं क्या मदद कर सकती हूं ?"

"वे कोई वीरादेवी आई हैं न, आपको उन्हींका अभिनय करना पड़ेगा।"

हिरण्यगर्भ की हास्यदीप्त आंखें चमकने लगीं।

"अभिनय ! क्या मतलब ?"

"कुछ भी नहीं, रुष्ट मछुओं का झुंड जब भैरवपुर के मैदान से होते हुए बांध की ओर बढ़ आएगा, तो हाथी के ऊपर से ग्रामोफोन का एक चोंगा मुंह से लगाकर आपको कहना पड़ेगा, तुम लोग बांध मत काटो, मन्मथबाबू ने खुद ही बांध काट देने का वादा किया है, अब तुम लोग लौट जाओ।"

"आपकी बात ठीक समझ में नहीं आ रही है। वीरादेवी के नाम से अपने को कैसे चलाऊं ? वे शायद उन लोगों के साथ ही हों।"

"नहीं, वे साथ नहीं रहेंगी, यह खबर मुझे मिल चुकी है। आपके जाने के बाद मैंने महावीर मछुए को बुलवा भेजा था। उन मछुओं के बारे में महा-वीर को सारी बात मालूम है। उसने बताया है कि वीरादेवी आज रात महिमगंज गई हैं, वहां आज वे हरिजनों के सामने भाषण देंगी, तो अब रास्ता साफ है। आप बड़ी आसानी से वीरादेवी बन सकती हैं।"

"वे लोग मुझे पहचान नहीं लेंगे ?"

"पहचान न सकें, इसका इन्तज़ाम करना पड़ेगा। आपको धूप का काला चश्मा लगाना पड़ेगा, सुना है वीरादेवी भी लगाती हैं, अगर एक काली साड़ी भी आप पहन सकें तो और भी अच्छा होगा। महावीर उनका भाषण सुनने के लिए गया था, उसीने बताया कि वे काली साड़ी पहने थीं और

काला चश्मा लगाए हुए थीं। उनका रंग भी आप जैसा ही गोरा है फिर आप हाथी पर सवार रहेंगी, इसके अलावा उस समय बहुत ज्यादा रोशनी भी नहीं होगी क्योंकि मामला भोर में ही होनेवाला है।"

"काली साड़ी कौर काला चश्मा कहां से लाऊं ?"

"इसका इन्तज़ाम मैंने कर रखा है। ठहरिए, इस स्लिप को ज़रा टेस्ट-ट्यूबों पर रख दूं। यह रहा अपना काला चश्मा।"

दराज़ खींचकर हिरण्यगर्भ ने एक धूप का चश्मा निकाला।

"कुंज !"

कुंज दरवाज़े के पास आ खड़ा हुआ।

"खरिणी जो साड़ी दे गई, उसे तूने कहां रखा है, ले आ। और नरेन-बाबू आएं तो उन्हें इस चिट्ठी को पढ़ लेने के लिए कह देना, यहीं रखी रहेगी।"

"अच्छा सरकार।"

कुंज साड़ी लाने चला गया। तुंगश्री विस्मय से थोड़ी देर के लिए अवाक् रह गईं। घटना का अप्रत्याशित रूप देखकर वे अचम्भे में पड़ गई थीं।

"माफ कीजिए हिरण्यबाबू, यह मुझसे नहीं होगा।"

"क्या नहीं होगा ? आपको तो कुछ भी नहीं करना है।"

"अभिनय तो कर सकती हूं, पर मछुओं के उचित अधिकार में बाधा नहीं डाल सकूंगी।"

"मछुओं की उचित मांग को तो हम पूरा करेंगे। उसके लिए भी मैंने सोच रखा है।"

"क्या ? बताइए।"

"केशव के जिस पोखरे को मछुओं ने ठेके पर लिया है और जिसमें पानी भरने के लिए वे बांध काटकर हज़ारों बीघा फसल बरबाद करने पर तुले हैं, उस पोखरे से कहीं बड़ा पोखरा मेरी ज़मींदारी में है, मैंने अभी तक उसका बन्दोबस्त नहीं किया, सोचता हूं उसे उन्हीं लोगों को दे डालूं।"

"दे देंगे ? सलामी नहीं लेंगे ?"

"केशव को वे जो रकम देते मैं भी उतनी ही लूंगा, उससे ज़्यादा नहीं। हांलाकि मेरा पोखरा केशव के पोखरे का चौगुना है, चाहूं तो मुझे चौगुना नज़राना भी मिल सकता है।"

"तो, आप इतना नुकसान क्यों सहेंगे ?"

"दंगा रोकने के लिए। बेकार की खूनखराबी से क्या फायदा ? ज़मींदारी तो प्रजा की ही है, इससे जो आमदनी होती है, मैं तो उसीपर खर्च करता हूं। इस साले उस पोखरे का बन्दोबस्त करने का मन नहीं था, सोचा था कि एक मत्स्य-विशेषज्ञ को लाकर मछली-पालन में उन्नति का प्रबन्ध कराऊंगा, अब इस साल छोड़ ही दूं।"

"इतने अभिनय वगैरह में न पड़कर वीरादेवी को ज़रा-सी खबर दे देने पर ही सब ठीक हो जाता।"

"उसका मौका ही कहां मिला ? वे तो महिमगंज चली गई हैं, ज़बर्दस्ती बांध काट देने का हुक्म देकर गई हैं। मन्मथ भी छोड़नेवाला आदमी नहीं है। बन्दूक वगैरह लेकर वह तैयार हो गया है। आप चाहें तो इस खूनखराबी को रोक सकती हैं, और कोई चारा नहीं है।"

कुंज दरवाज़े में दिखाई पड़ा। वह एक काली रेशमी साड़ी ले आया था।

"उस मेज़ पर रख दो। हाथी खा भी चुका कि नहीं। देखो, साढ़े तीन हो गया है, तुरन्त रवाना होना है।"

कुंज बाहर चला गया। हिरण्यगर्भ तुंगश्री की ओर देखकर बोले, "तो आप देर न करें, यह लीजिए चश्मा और यह आपका रिवाल्वर भी रहा।"

कहकर उन्होंने एक दराज़ खोलकर उनकी अटैची भी निकाल दी। फिर बोले, "उस कमरे में जाकर जल्दी से साड़ी बदल लीजिए···मैं तब तक कॉफ़ी बना लूं।"

तुंगश्री की ओर देखकर कुछ मुस्कराते हुए हिरण्यगर्भ उस कमरे में चले गए जिसमें उन्होंने रात को खाना खाया था।

तुंगश्री वज्राहत-सी थोड़ी देर खड़ी रह गई, फिर साड़ी उठाकर बगल के दूसरे कमरे में चली गईं।

५

भैरवी की बारी खत्म हुई तो टोड़ी शुरू हो गई। मेघसुन्दर एक-दम मस्त हो गए। जिस पिनाकधारी नीलकण्ठ अहिभूषण संन्यासी की प्रेमाग्नि में सती ने अपनी आहुति दी थी, जिसका स्वप्न पाकर राजकन्या उमा तपस्विनी बनी थी। इतनी देर तक भैरवी रागिनी अपने सारे अन्तर की आकुलता से उस चन्द्रमौलि भैरव की आराधना कर रही थी। गम्भीर सुर की ओर से मधुर विनती के साथ अनिवार्य हताशा, रात्रि के विरह के साथ प्रभात की प्रत्याशा का जो सूक्ष्म मिलन हो रहा था, जो अरूप किसी भी मुहूर्त में अपरूप होने की सम्भावना में कल्पना को अभिभूत कर रहा था, बस अभी-अभी उसका अवसान हुआ था। मेघसुन्दर तन्मय होकर भैरवी रागिनी का रूप ही अपनी आंखों के सामने देख रहे थे। स्वच्छ स्फटिकनिर्मित गृह में बैठकर सुनयना तन्वी जिस भैरव के लिए व्याकुल कण्ठ से गा रही थीं—वह भोला गंगाधर कहां है ? लीला-कमल मुरझाया जा रहा है, आकाश की नीलिमा से जिस नीलकण्ठ का आभास मिलता है, प्रकाश की प्रशान्त महिमा जिनकी प्रसन्नता की प्रतिच्छवि है, अभ्रभेदी हिमालय का शीर्ष जिनके गम्भीर रहस्य से विराट हो गया है, वे कहां हैं···कहां हैं ? दोनों बांहें प्रसारित किए भैरवी रागिनी अव-लुण्ठित हो रही थी—आओ आओ, प्रियतम, तुम आओ !

एकाएक स्वर खत्म हो गया, भैरवी समाप्त हो गई। हीराबाई चुप हो गईं। मेघसुन्दर आच्छन्न-से बैठे थे। बहुत देर से किसीने कुछ भी नहीं कहा था। भैरवी रागिनी की करुणा-भरी विनती ने निर्वाक् कुहासे की तरह मेघसुन्दर को बहुत देर तक स्तम्भित कर रखा था। तानपूरे की झंकार

से फिर उनकी आच्छन्नता टूट गई। धीरे-धीरे कुहासा छंट गया, और मन्दगति से टोड़ी रागिनी का अविर्भाव होने लगा, टोड़ी भी भैरव की ही उपासिका है, पर उसकी पूजा का ढंग कुछ भिन्न है। भैरवी की व्यर्थता जैसे वह समझ गई है। हाथ में कमल लिए इसीलिए वह महाकाल को पाने की चेष्टा नहीं करती है। उदासी को आकृष्ट करने की चेष्टा से आत्मसम्मान को ठेस लगती है, यह बात जैसे टोड़ी की समझ में आ गई थी, इसीलिए वह भैरव को संगीत नहीं सुना रही है। पर उनका सारा हृदय संगीत से भरपूर जो हो उठा है। उद्वेलित हृदय का आवेग वक्ष के बन्धन तोड़कर शतसहस्रधार से बाहर आने को व्याकुल हो रहा है। इसीलिए तन्वी टोड़ी निर्जन वन में चंचल होकर फिर रही है। और वह अपना संगीत भैरव को नहीं, बल्कि वन के हिरनों को सुना रही है। उसकी तुषारशुभ्र देह पर अनजाने ही महादेव के सिर पर सुशोभित बालचन्द्रमा की रजताभा और युगल-नेत्रों में बड़ी सावधानी से जैसे कोई शंकाविह्वल आशा झांक रही हो। मेघसुन्दर का मन धीरे-धीरे एक नये रस में डूब रहा है···एकाएक टेलीफोन घनघना उठा। स्वप्न का महल झनझनाकर बिखर गया।

"हां······हलो, हलो, सुन रहा हूं······क्या खबर है? अरे यह बात है?"

जो खबर मिली उससे उनका मुंह सूख गया। सट्टाबाज़ार के दलाल ने बहुत ही बुरी खबर सुनाई। फोन रखकर जब वे सीधे बैठने लगे तो उनके घुटने का दर्द टीस उठा।

"ओफ, मर गया! ···नारायण नारायण···"

ज़रा संभलकर दूसरे क्षण ही ज़ोर से आवाज़ दी, "गनपतसिंह! रामबाबू को बुलाओ!"

नेपथ्य से 'जी हुज़ूर' की आवाज़ सुनाई पड़ी।

खुद ही मेघसुन्दर बड़बड़ाते रहे, "कहां से हमारे नसीब में यह गया गुज़रा डाक्टर आ पड़ा। सुई लगा-लगाकर सारे बदन को कथरी कर दिया,

पर घुटने का दर्द ज़रा भी घटा नहीं सका।"

पर दूसरे ही पल दरवाज़े पर शिखरिणी को देखकर उन्हें घुटने का दर्द भुला देना पड़ा। उन्हें मालूम था कि मन्मथ अभी तक नहीं लौट पाया है। शिखरिणी को देखकर वे मन ही मन कुछ संकोच-सा अनुभव करने लगे। मन्मथ की ज़िद के लिए जैसे वे ही ज़िम्मेदार हैं। किसीने उन्हें इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं कहा है, पर मन ही मन जैसे उन्होंने स्वयं ही अपने को ज़िम्मेदार ठहरा लिया है। उनकी ज़मींदारी बचाने के लिए ही तो जब-तब अपने को खतरे में झोंक देता है। उनके कारण ही शिखरिणी को यहां रहना पड़ता है, सो मन्मथ को भी रहना पड़ता है। कलकत्ता में मन्मथ की जो सम्पत्ति है, उससे वह राजा की तरह वहां रह सकता था। उनके कारण ही तो उसे यहां रहना पड़ रहा है न। हिरण्य ने तो शादी-ब्याह किया ही नहीं। यह बात भी सच है कि उन्होंने मन्मथ को ज़मींदारी में सर्वेसर्वा बनाकर रखा है। कभी-कभी उनकी इच्छा होती है कि वसीयतनामा लिखकर मन्मथ को ही सब कुछ सौंप जाएं, फिर तुरन्त ही यह मन में आता है कि पूर्वपुरुषों की अर्जित सम्पत्ति दूसरे कुल में चली जाएगी। हिरण्य ऐसा फजूलखर्च है कि उसे भी सम्पत्ति देते डर-सा लगता है, न जाने क्या करे, शायद सारी सम्पत्ति बेचकर बड़े-बड़े चिड़ियाखाने बनवा डाले। फिर भी वंशधर तो वही है! मेघसुन्दर अभी तक कुछ तय नहीं कर पाए। शिखरिणी को देखकर वे अपने को मुसीबत में पाते हैं। मन्मथ अभी तक नहीं लौटा है। बड़ी परेशानी है। उन्हें मालूम है कि शिखरिणी कुछ भी नहीं बोलेगी, वह कभी कुछ नहीं बोलती, चुप रहती है, पर चुप रहकर ही वह अपना वक्तव्य बड़ी अच्छी तरह व्यक्त कर देती है। केशव ने जब उससे शादी करनी चाही थी, उस समय भी वह चुप रह गई थी और जब विवाह नहीं होने दिया गया तब भी वह चुप ही रही, पर उस चुप्पी से भी कम से कम मेघसुन्दर को मालूम हो गया था कि केशव से ब्याह करने में उसे कोई आपत्ति नहीं थी। फिर भी शिखरिणी ने कुछ नहीं कहा था। उसकी गहरी काली आंखों की एक अजीब-सी भाषा

है। मन्मथ के साथ विवाह होने से वह असन्तुष्ट नहीं है, पर बहुत सुखी भी नहीं है। अपनी कर्तव्यनिष्ठा का वह प्रदर्शन तो नहीं करती, पर जैसे उसीको ज़ोर से जकड़ रखा है। त्रुटि के किसी छिद्र से होकर अपने मन की बात प्रकट न हो जाए, इसके लिए वह सदा सजग रहती है। मुंह से तो वह कुछ भी नहीं बोलती, पर मेघसुन्दर समझ जाते हैं। और शायद इसीलिए उससे कुछ डरते भी हैं।

शिखरिणी आकर बोली, "काकू तुम्हारा खाना यहीं लाऊं ?"

"क्या बनाया है ?"

"तुमने ही तो अण्डे का हलवा कहा था।"

"ठीक है, ले आ।"

शिखरिणी तबलची की ओर देखकर बोली, "आपके लिए भी ला रही हूं ?"

तबलची मुसलमान था। उसने अदब के साथ स्वीकृति दे दी।

हीराबाई पूजा किए बिना नहीं खातीं, यह शिखरिणी को मालूम था, इसीलिए उनसे खाने के लिए नहीं कहा।

"विनू मुंहजली सवेरे से दिखाई नहीं पड़ी, मेरे घुटनों की सिंकाई अभी तक नहीं हो पाई।"

"विनू कहती है कि उसके सिर में दर्द है, सो रही है, मैं सिंकाई का इन्तज़ाम कर रही हूं।"

शिखरिणी अन्दर चली गई। मेघसुन्दर मन ही मन बोले, 'मन्मथ के बारे में एक बार पूछा तक नहीं। फिर भी एकाएक उन्होंने अपने को बहुत ही विपन्न अनुभव किया। इस अव्यक्त अभियोग का प्रतिकार भी क्या हो सकता है, यह उनको नहीं सूझा। करें भी तो क्या करें ? मन्मथ भी अभी तक क्यों नहीं लौट पाया। कल उस छोकरे ने जो अल्टीमेटम दिया था, वह सामने ही पड़ा था। उसे उठाकर उन्होंने एक बार उसपर निगाह डाली। युगलगंज की मिल में अब तक हड़ताल भी शुरू हो गई होगी, कैंडिल कम्पनी का शेयर भी इतना गिर गया ! उफ़··· ! उन्होंने फिर से

अल्टीमेटम देखा। मन्मथ को आते ही शायद फिर युगलगंज दौड़ना पड़े। शिखरिणी तब भी चुप रहेगी······सर्वरंजन आकर विनय से नमस्कार करके वहीं बैठ गया। सर्वरंजन डे स्थानीय वकील हैं। खुशामद करने के लिए रोज़ एक बार आता है, संगीत को वह समझता नहीं, फिर भी समझदारों की तरह सिर हिलाता है। उस आदमी को देखकर अकारण सिर से पांव तक गुस्सा लहरा उठा। रोज़ मुकद्दमे की खोज में आ पहुंचता है, आदमी नहीं बिल्ला है! आते ही तबलची के साथ फुसफुसाने लगा। दामोदर भट्टाचार्य भी आ जमे। ये भी एक खुशामदी है। संगीत के बारे में श्लोक रटकर उसे उन्हें यहां सुनाता है, पर गीत का 'ग' तक नहीं समझता। अचानक मेघसुन्दर को सूझा कि सर्वरंजन को किसी काम में लगा देना ठीक रहेगा। एक ढेले से दो शिकार होंगे। इससे छुटकारा भी मिलेगा और मन्मथ का काम भी कुछ हल्का होगा।'

"सर्वरंजन एक काम कर सकते हो?"

"क्यों नहीं? हुजूर के काम के लिए ही तो हम हाज़िर रहते हैं।" दामोदर ने छौंक लगाई।

मेघसुन्दर के मन में आया कि जाकर उस आदमी के गाल पर एक ज़ोर का थप्पड़ लगाएं, पर उसकी गुंजाइश नहीं थी, एक तो वह ब्राह्मण दूसरे वह उनके लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक भी था। जैसे अगल-बगल दो-चार तकिए होना ज़रूरी है, वैसे ही आस-पास दो-चार मुसाहबों का रहना भी ज़रूरी है। तकियों को दबाने मोड़ने से एक अजीब किस्म का मज़ा आता है। सर्वरंजन उत्सुकता से हुक्म की प्रतीक्षा कर रहा था।

"युगलगंज की मिल में कुछ गड़बड़ हो गई है। कल एक छोकरा आकर अल्टीमेटम दे गया है। मन्मथ यहां नहीं हैं, ज़रा तुम वहां जाकर पता तो लगाओ।"

"हां हां, चले जाओ!" दामोदर बोल पड़ा।

मेघसुन्दर की आंख बचाकर दामोदर की तरफ आग्नेय दृष्टि डालकर सर्वरंजन चल पड़ा। इस धूप में आठ मील का रास्ता साइकल पर पार करना

कोई आसान काम है ? पर जाना ही पड़ेगा और चारा ही क्या है ?

दिखावटी हंसी हंसकर दामोदर बोला, "हुजूर के घुटने का दर्द कैसा है ? मैं एक···"

यद्यपि उसने अपनी बात खत्म नहीं की, पर हीराबाई को बोलते देखकर वह रुक गया।

हीराबाई बोलीं, "कल जो लड़की आई थी, मैंने सुना, वह भी कोई मज़दूर-नेता है।"

"नेत्री कहिए !" दांतों की शोभा दिखाते हुए दामोदर ने व्याकरण की गलती सुधार दी।

"कौन ? तुंगश्री !" विस्मित मेघसुन्दर बोल उठे।

"हां।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

"कल रात को वह मुझसे मिली थी। हम बचपन में साथ-साथ पढ़ते थे।"

"हमारी मिल में हड़ताल करने आई है ?"

"यह तो उसने नहीं बताया।"

"यह कैसे कहती ?" आंखें मिचकाकर दामोदर ने फिर छौंक लगाई।

"पर उसे तो हिरण्य के साथ देखा। अगर ऐसी बात होती तो भला हिरण्य···"

"ओह, छोटे हुजूर के साथ थी, तब सब ठीक है···" टांग अड़ाते हुए दामोदर ने फिर मन्तव्य प्रकट किया, पर उसके चेहरे पर जो भाव प्रकट हो गया उसके साथ उसके मुंह की बात का कोई मेल नहीं दिखाई पड़ा। कहकर वह तिरछी नज़र से भीगी बिल्ली की तरह इस प्रकार मेघसुन्दर की ओर देखने लगा जैसे कह रहा हो कि इतने लोगों के बीच छोटे हुजूर की शिकायत कैसे की जाए, बड़े हुजूर को तो सब मालूम ही है।

दो नौकरों को साथ लिए शिखरिणी फिर आ पहुंची, उसने कहा, "खाना ले आई हूं।"

मेघसुन्दर और तबलची के सामने छोटी-छोटी तिपाइयों पर बड़े ढंग से खाना परसवाकर शिखरिणी दामोदर की ओर देखकर बोली, "भट्टाचार्य महाशय, आपके लिए भी कुछ फल वगैरह ले आऊं ?"

"ला सकती हो ! दो-चार मिठाई भी साथ हों तो कोई एतराज़ नहीं !"

मेघसुन्दर की ओर देखकर शिखरिणी बोली, "काकू, तुम्हारे सेंक के लिए पानी रखा है, नाश्ता कर लो, फिर सेंक दूंगी।"

शिखरिणी फिर भीतर चली गई।

"हुज़ूर के घुटने का दर्द ठीक नहीं हुआ ? तो फिर तावीज़ बांधकर ही जाऊंगा। यज्ञेश्वर का घुटना इसीसे अच्छा हुआ।"

"तावीज़ ? कैसा तावीज़ ?"

"यह एक टोटका है, सात लड़कों की मां से कुछ अदरक, बेल की छाल और चार एक गन्धी कीड़ों को पिसवाकर उसे तांबे की तावीज़ में भरकर धारण करने पर निश्चित फल मिलेगा। आखोंदेखी बात है। यज्ञेश्वर को बुलाकर पूछ देखिए। कहने से यकीन नहीं करेंगे, उसका घुटना आपके तानपूरे के तूम्बे की तरह फूल गया था, इसी तावीज़ से ठीक हुआ। कई दिन से मैं हुज़ूर के लिए भी इसके बारे में सोच रहा था। अदरक, बेल की छाल, कीड़े सब-कुछ जुटा रखा था, पर सात लड़कों की मां को ढूंढ़ना ही मुश्किल है न ! जिसे एक भी लड़की न हो, एक के बाद एक सात लड़के हों, आठ भी नहीं। इस इलाके में बस एक ही हैं, समर की मां। वे कल आई थीं तो उन्हींसे पिसवा लिया था। आज ही उसे पहन लीजिए।"

लाल धागे में लटकाया हुआ ढोलक की आकृति का एक काफी बड़ा तावीज़ निकालकर दामोदर उठ खड़े हुए।

"कहां पहनना है ?"

"गले में।"

"क्या तुम्हारा सिर फिर गया है ? यह ढोल गले में लटकाकर मैं

बैठा रहूंगा ?"

अधिक नहीं, बस तीन दिन। इस बूढ़े ब्राह्मण की विनती मान लीजिए, हुजूर !"

हाथ जोड़कर करुण स्वर में दामोदर ने इस तरह यह सब कहा कि मेघसुन्दर फिर आपत्ति नहीं कर पाए।

"पहना दो, तुम मानोगे नहीं।"

दामोदर ने श्रद्धापूर्वक तावीज़ को माथे से छुआकर मेघसुन्दर के गले पहना दिया।

"क्या मुसीबत है।" अस्फुट स्वर में मेघसुन्दर बोले।

दामोदर भट्टाचार्य के लिए भी एक नौकर नाश्ता ले आया, तो सबने खाना शुरू किया।

"तावीज़ पहनकर अण्डा वगैरह चलेगा न ?"

"सब चलेगा।"

भोजनपर्व चुपचाप समाप्त हुआ, तो शिखरिणी सेंक का सामान लेकर आ पहुंची।

"इत्र ठीक से डाला है न ? उफ़, इतनी बदबू है ये दवाएं !"

"डाल दिया है।"

"धीरे···उफ···धीरे···उठा ले न! मार डालेगी क्या ? ना ! ···इत्र डालने पर भी इसकी बदबू नहीं गई।"

शिखरिणी बिना कुछ बोले सेंक करके चली गई। इसी बीच डाक्टर रामचन्द्र आ पहुंचे। उनके आते ही मेघसुन्दर ने एक पद्य गाकर उनका स्वागत किया—

सारा वीरत्व तुम्हारा हो गया बेकार,
गन्धमादन तो उठा लाए।
संजीवनी कहां ?
कहो दर्द कहां घटा ?

"नहीं घटा ?" हंसमुख रामचन्द्र ने प्रश्न किया।
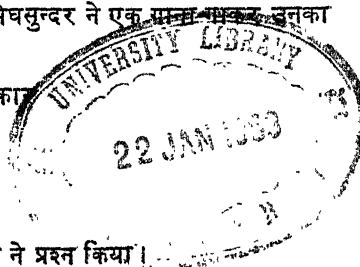
"बढ़ा है।"

"तो आप वह दवा खा लीजिए अब।"

"बाप रे, सुना है उस दवा से लीवर खराब होता है। अगर लीवर ही खराब करना है तो व्हिस्की की मात्रा ही कुछ बढ़ा दूं। दवा पीने की मुसीबत क्यों पालूं?"

"कल सैलिसिलेट मिक्सचर पिया था आपने?"

"एक खुराक! बहुत ही खराब स्वाद है!"

"सिरप तो मिलाया गया था!"

"उससे स्वाद और भी खराब हो गया।"

"अच्छा, तो आज दूसरी दवा की गोली बना दूं।"

"अब कौन-सी दवा? लीवर वगैरह को ज़ख्मी तो नहीं कर देगी?"

"नहीं। सैलिसिलेट मिक्सचर दो-एक बार ले लीजिएगा।"

"तुम्हीं पीना उसे।"

"ज़रा जीभ दिखाइए।"

नित्य नियम के अनुसार रामचन्द्र ने मेघसुन्दर की नाड़ी, जीभ, आंख, पेट, छाती सबका निरीक्षण किया। न करने पर मेघसुन्दर मन ही मन नाराज़ हो जाते। उन्होंने रक्तचाप भी देखा।

"कितना है?"

रामचन्द्र ने झूठ ही कह दिया, "आज तो कम देख रहा हूं १७० और १२०। अजीब काठी है आपकी!"

मेघसुन्दर खुश हुए, फिर भी आंखों में एक बनावटी आश्चर्य प्रकट करके प्रश्न किया, "क्यों? अजीब क्या देखा तुमने?"

"इतनी उम्र में भी प्रत्येक अंग बिलकुल सही है। वात या रक्तचाप कोई ऐसी बात नहीं है, फिर इस उम्र में पेशाब में थोड़ी शुगर, अल्बूमिन रहना तो स्वाभाविक है, जैसे बाल पकना स्वाभाविक होता है।"

यही रामचन्द्र की नौकरी थी। विचित्र छल और बहाने से इसी झूठ को एक डिग्रीधारी डाक्टर के मुंह से सुनने के लिए ही मेघसुन्दर ने उसे

तनखाह देकर नियुक्त किया है।

डाक्टरीपर्व समाप्त हुआ। रामचन्द्र चल दिए। फिर से फोन आया। दलाल कह रहा था कि आज के दर पर शेयर बेच दें तो केवल दस हज़ार का ही नुकसान होगा, अगर न छोड़ें तो और भी नुकसान होने की सम्भावना है। मेघसुन्दर ने अपने को कुछ कमज़ोर-सा पाया, कह दिया कि मन्मथ से सलाह करके कुछ देर में खबर देंगे।

हीराबाई धीरे-धीरे फिर से तानपूरे को छेड़ने लगीं, तो मेघसुन्दर मगन हो गए।

भौंहें नचाकर दमोदर ने प्रश्न किया, "अब क्या शुरू होगा ?"

"टोड़ी।"

"उफ़, टोड़ी बड़ी शानदार चीज़ है। प्राचीन संस्कृत-श्लोक है—टोड़ी नादादिरामक्री भैरवी वसन्ताश्च—"

"तुम लोग मुझे पल-भर के लिए भी छुटकारा नहीं दोगे ?" मेघसुन्दर सहसा ज़ोर से भड़क उठे। "तुम्हारे लंगड़े भतीजे को नौकरी दे दूंगा··· शपथ करता हूं, अब तुम घर जाओ !"

"जो आज्ञा, हुज़ूर !" बिलकुल अप्रतिभ हुए बिना ही दामोदर उठा और खिसक गया।

हीराबाई ने तानपूरा रखकर सितार पर एक गत शुरू कर दी। पांच मिनट में ही खूब जम गया। मेघसुन्दर की आंखें मुंद गईं। वे अस्फुट स्वर में "वाह-वाह, खूब···खूब···" कह उठे।

लेकिन फिर बाधा पड़ गई। जूता चरमराते हुए और राइफल कन्धे पर रखे मन्मथ अन्दर आए।

मेघसुन्दर ने उत्कण्ठा से प्रश्न किया, "वहां का क्या हाल है ?"

"दंगा नहीं हुआ।"

"ओह, जान बची ! तुम लोगों को देखकर वे खिसक गए क्या ?"

"नहीं, वे आए ही नहीं।"

"नहीं आए ! तो क्या खबर गलत थी ?"

"खबर तो ठीक ही थी, वे दंगे के लिए तैयार भी थे, पर जाने क्यों वे आए ही नहीं, मैं भी नहीं समझ पाया।"

"जाने दो, नहीं आए तो इसपर सोच करने की क्या बात है? जान बची, अब जाओ, तुम ज़रा आराम करो।"

"हिरण्यदादा कहां गए, यह भी समझ में नहीं आता। उन्हें लेने के लिए कल रात हाथी भेजा था। अब तक हाथी भी नहीं लौटा, हिरण्यदादा का भी कुछ पता नहीं, सवेरे एक आदमी आकर खबर दे गया कि हिरण्यबाबू ने सबको लौटने के लिए कहा है। दंगा अब नहीं होगा। वे हाथी लेकर बाहर जा रहे हैं, तीसरे पहर तक लौट आएंगे। कहां जा रहे हैं, क्या बात है, यह सब वह कुछ भी नहीं बता पाया। यहां आकर कुंज से सुना कि खूब भोर में हिरण्यदादा उस महिला को साथ लेकर रवाना हो गए थे।"

"कौन-सी महिला?"

"कल जो यहां बैठी थीं, तुंगश्री या क्या नाम है···"

"तुंगश्री को लेकर हाथी पर बाहर गया है? कह क्या रहे हो तुम? हीराबाई से जितना मालूम हुआ, उससे लगता है कि वह बड़ी खतरनाक औरत है। हां, हम लोगों की युगलगंज की मिल में हड़ताल कराने की कोशिश में है। कल एक बेहूदा-सा छोकरा आकर यह अल्टीमेटम दे गया है, यह लो!"

उन्होंने अल्टीमेटम मन्मथ के हाथ में दे दिया। मन्मथ भौंहें चढ़ाकर उसे पढ़ने लगा।

"खाना खाकर ही, लगता है, वहां भागना पड़ेगा।"

"सर्वरंजन को भेजा है, उसे लौटने दो, तुम ज़रा आराम कर लो। हां, तुमसे एक और सलाह लेनी है, सट्टाबाज़ार के घोषाल ने अभी-अभी फोन किया था, उस दिन उस आदमी के कहने में आ गए और इतने सारे शेयर खरीद लिए। सुनता हूं, भाव धड़ाधड़ गिरते जा रहे हैं। मिट्टी के तेल और कोयले का अकाल देखकर सोचा था कि मोमबत्ती की मांग बढ़ जाएगी, पर हुआ एकएम उलटा। तुम्हें ज्यादा नहीं रोकूंगा, चलो, मैं ही भीतर चलता

हूं। ज़रा वह लाठी तो पकड़ाओ। मुझे भी ज़रा पकड़ लो···हां ठीक है।"

मन्मथ के कन्धे पर हाथ रखकर मेघसुन्दर खड़े हो गए और हीराबाई की ओर देखकर दयनीय हंसी हंसकर बोले, "अभी तो एक के बाद एक झमेला खड़ा होता जा रहा है, अब नहीं जमेगा। उस जून फिर कोशिश की जाएगी। अब तुम भी जाकर पूजा-पाठ करके खाना खा लो।"

६

भोर में तैयार होकर तुंगश्री जब बाहर आईं तो एक विशाल हाथी पर उन्हें बड़ा-सा हौदा दिखाई पड़ा। वे थोड़ी देर स्तम्भित होकर खड़ी रह गईं। इससे पहले वह कभी हाथी पर नहीं चढ़ी थीं। चढ़ने में कोई तकलीफ नहीं हुई, क्योंकि सीढ़ी लगी थी। हौदे पर अच्छा गद्दा भी था, तुंगश्री के चढ़ जाने पर हिरण्यगर्भ चढ़े। हाथी गजगति से चलने लगा। थोड़ी देर दोनों चुपचाप बैठे रहे। हिरण्यगर्भ को उम्मीद थी कि तुंगश्री शायद दंगे के बारे में ही कुछ कहेंगी। पर तुंगश्री एकाएक अप्रत्याशित रूप से पूछ बैठीं, "अच्छा, केशवबाबू ने अपनी पत्नी को क्यों त्याग दिया है ?"

"ओह,यह बड़ी शोचनीय घटना है,उसकी पत्नी को कुष्ठ हो गया है।"

"कुष्ठ ?"

"हां।"

"उसे खर्च भी नहीं देते ?"

"यह सब आपको कैसे मालूम हुआ !"

"जैसे भी हो, पर सच है या नहीं, बताइए ?"

"नहीं देता। उसकी यह धारणा है कि सुषमा के बाप ने···केशव की पत्नी का नाम सुषमा है···जान-बूझकर रोग छिपाकर उसके साथ शादी कर दी, और इस षड्यन्त्र में मैं भी शामिल हूं।"

"आप भी शामिल हैं, ऐसा समझने का क्या कारण है ?"

"कारण यह है कि शादी की बातचीत मैंने ही की थी।"

"आपने की थी ?"

"हां, मैंने ही। शिखरिणी के साथ जब उसकी शादी नहीं हो पाई तो वह पागल हो गया था। सात दिन तक उसने नहाया-खाया नहीं, एक कमरे में कुण्डी लगाकर पड़ा रहा। फिर एकाएक कलकत्ता चला गया। सुना कि अपनी सम्पत्ति का कुछ हिस्सा बन्धक रखकर एक मारवाड़ी से पांच लाख रुपया कर्ज़ लिया है। वह रुपया लेकर यहीं लौट आया और अपनी ज़मींदारी में आकर मनमानी करने लगा। गृहस्थ घर की बहू-बेटियां भी शंकित हो उठीं। मुझे अवश्य मालूम था कि वह यह सब क्यों कर रहा था।"

"क्यों ?" तुंगश्री ने पूछा।

"रोग होने पर लोग जिस कारण प्रलाप करते हैं, उसी कारण; पागल कुत्ता जिस कारण सबको काटता फिरता है, उसी कारण।"

"फिर ?"

हिरण्यगर्भ कुछ हंसकर बोले, "लेकिन ये बातें आपसे कहना उचित नहीं है। क्या फायदा इस चर्चा से ? आपने देश की भलाई के लिए अपनी ज़िन्दगी सौंप दी है—आपसे और तमाम बातें करनी हैं। मैंने जो योजनाएं बनाई हैं, उनके लिए अच्छे आदमी नहीं मिल रहे हैं, आप लोग बहुत खबर रखते हैं, शायद अच्छे आदमी खोज सकें। इसके अलावा आपके मन में हमारे प्रति जो शत्रुता की भावना है, मेरी सारी बातें सुनने से वह भी दूर हो जाएगी। सुनकर आप समझ जाएंगी कि असल में हम दोनों एक ही जाति के हैं, हम लोगों को मिलकर ही काम करना चाहिए, खामख्वाह···"

"केशवबाबू की बात तो पहले खत्म कर दें, मेरे लिए उनकी असलियत जान लेना ज़रूरी है, क्योंकि उन्हें ही केन्द्र बनाकर अभी मैं काम कर रही हूं। हम उनसे सहमत भी हैं···"

हिरण्यगर्भ हंसकर बोले, "देखिए, किसीकी असलियत जानने के लिए उसे प्यार भी करना पड़ता है। उसके बारे में दो-चार घटनाएं मालूम करके

ही आप उसकी असलियत नहीं जान पाएंगी। मैं उसका बचपन का साथी हूं, मैं उसे प्यार करता हूं, इसीलिए उसके बारे में कुछ कड़ी बातें कहने का दिल नहीं करता, आप शायद उसे गलत समझें।"

"आप उनकी असलियत समझ गए हैं न ?"

"समझ गया हूं।"

"जो समझे हैं, वही मुझे बताइए।"

"वह रोगग्रस्त है।"

तुंगश्री थोड़ी देर के लिए चुप हो गईं, फिर बोलीं, "मित्र को रोग-ग्रस्त जानते भी आप उसके ब्याह का सम्बन्ध क्यों करने गए।"

"मैंने सोचा था कि ब्याह होने पर वह ठीक हो जाएगा। अवश्य उसके ब्याह की बात मेरे मन में उठती ही नहीं, यदि केशव सुषमा को पत्र न लिख बैठता। सुषमा के पिता नवीनबाबू केशव की जात के ही हैं। सुषमा सुन्दरी थी, पर गरीब होने के कारण उसकी शादी नहीं हो रही थी। एक दिन केशव अपनी चिट्ठी में एक भद्दा प्रस्ताव पेश कर बैठा। इसीसे आप समझ गई होंगी कि उसका दिमाग किस हद तक बिगड़ गया था। नवीनबाबू हम लोगों के असामी हैं, वे रोते-कांपते उस चिट्ठी को लेकर हमारे पास आए।"

फिर थोड़ी देर चुप रहने के बाद उन्होंने हंसकर कहा, "आपको इतनी देर में मेरे स्वभाव का भी कुछ आभास मिला गया होगा। कौशल से काम हासिल हो जाए तो मैं किसी बखेड़े में पड़ना पसन्द नहीं करता! मैंने सोचा था कि ढेला अगर ठीक से बैठे तो दो के बजाए तीन शिकार मारे जा सकते हैं। एक तो बदनामी न होने पाए, दूसरे गरीब नवीनबाबू की कन्या की शादी हो जाए, तीसरे केशव भी संभल जाए। मैंने खुद ही जाकर केशव से कहा, वह राज़ी हो गया। कुछ दिन तो ठीक भी रहा, पर किस्मत खराब थी, लड़की को कुष्ठ हो गया। किसीने केशव के दिमाग में यह बात भर दी कि मैंने ही षड्यन्त्र करके उस कुष्ठरोगिणी लड़की को उसके गले मढ़ दिया है। फिर क्या था, सब गड़बड़ हो गया। उसके बाद से जो कलकत्ता गया तो फिर नहीं लौटा।"

थोड़ी देर चुप रहकर हिरण्यगर्भ ने आगे कहा, "उसके जैसे साहसी ज़िन्दादिल आदमी बहुत कम मिलते हैं। शक्ति और उत्साह जैसे उसमें मूर्त है, पर एक ही ऐब से उसका सर्वनाश हो गया है। वह घोर दम्भी है, अंग्रेज़ी में जिसे 'पैशनेटली वेन ग्लोरियस' कहते हैं।"

हिरण्यगर्भ फिर चुप रह गए। कुछ देर बाद बोले, "मुझे ऐसा लगता है, शिखरिणी से उसका ब्याह हो जाता तो यह सब कुछ न होता। काकू के हठ के कारण ही यह बरबादी हो गई। इस ज़माने में ऐसी ज़िद नहीं चल सकती, यह उनकी समझ में किसी भी तरह नहीं आया।"

तुंगश्री यह मौका छोड़नेवाली नहीं थीं, बोलीं, "एक और सर्वनाश की शुरुआत हो गई है।"

"वह क्या ?"

तुंगश्री ने विशु और विनू की सारी कहानी उन्हें कह सुनाई।

हिरण्यगर्भ विस्मित नहीं हुए। उन्होंने कहा, "मुझे भी ऐसी ही किसी बात की आशंका थी, पर काकू से कुछ कहने का उपाय नहीं है, वे कट्टर आटोक्रेट हैं।"

"पर मैं उन लोगों को आश्वासन दे आई हूं।"

"ओह !" हिरण्यगर्भ की आंखों में एक विस्मययुक्त कौतुक किलमिलाने लगा। कुछ देर तक तुंगश्री के चेहरे की ओर देखते रहे, और फिर बोले, "आपने क्या योजना बनाई है ? ज़रा मुझे भी सुनाइए।"

"योजना-सोजना कुछ नहीं बनाई है, वह सब आपको ही करना पड़ेगा।"

"मेरे ही भरोसे आप उनको आश्वासन दे आईं ? वाह, खूब रहा ! मैं अगर प्लान न बना सकूं तो ?"

"वाह, यह कैसे हो सकता है ! आपको बनाना ही पड़ेगा।"

इस दावे में एक ऐसी घनिष्ठता तथा अपनापे की ध्वनि व्यक्त हो रही थी कि तंगश्री के अपने कानों में ही खटक गई।

कुछ देर चुप रहने के बाद हिरण्यगर्भ ने कहा, "किसी कौशल से यह काम नहीं बनने का, ज़बर्दस्ती करनी होगी, मुश्किल तो यह है, काकू ने ही विनू को पाला है न, उनके दिल पर बड़ी चोट लगेगी।"

"सामाजिक सुधार के किसी भी काम में कुछ लोगों को तो चोट लगेगी ही, तो क्या इसीलिए उसे न किया जाए ?"

हिरण्यगर्भ चुप रह गए। रात के आखिरी पहर के धुंधलके में एक अद्भुत सन्नाटा छा गया, एकाएक तीखे स्वर में तुंगश्री ने कहा, "आप लोग जो भारतीय आदर्शवाद के संरक्षक बनते हैं, असली काम पड़ने पर पीछे हट जाते हैं। चाचाजी के दिल पर चोट पहुंचानी पड़ेगी, शायद यही जानकर आपको रामायण के राम की कहानी याद आ रही होगी।"

कुछ हंसकर हिरण्यगर्भ बोले, "रामायण में केवल राम ही नहीं हैं, भरत भी हैं, परशुराम भी हैं। राम का चरित्र भी आपको बुरा क्यों लग रहा है ? जिस सिद्धान्त की रक्षा के लिए आप मुझे चाचाजी से विद्रोह करने के लिए कह रही हैं, राम ने तो उसी सिद्धान्त की रक्षा के लिए राज्य त्याग दिया था, पत्नी भी त्याग दी थी।"

"पर राम का वह सिद्धान्त क्या आज भी चलेगा या आपके ख्याल में चलाना उचित होगा ?"

"उचित क्यों नहीं होगा, यह तो समझ में नहीं आया कि उनके राज्य-त्याग में जो महत्त्व है, उसे समझने के लिए उस ज़माने के समाज की भी जानकारी होनी चाहिए। उस ज़माने में ब्राह्मण ही कानून बनानेवाले थे, क्षत्रियों का काम था उस कानून का पालन करना तथा औरों से भी पालन कराना। जिस तरह सीता रावण के घर में थी, उस तरह एक सामान्य स्त्री रहती तो स्वाभावतः समाज उसका परित्याग करता। कानून ही वैसा था, उस कानून को बदलने की सामर्थ्य राम में भी नहीं थी। राम ने सीता को ग्रहण किया था, पर जब अफवाह फैल गई कि राम खुद उस कानून को नहीं मान रहे हैं तो उन्होंने सोचकर देखा कि उनका अपना या सीता का व्यक्तिगत दुःख चाहे जितना भी गहरा हो, एक राजा के नाते उन्हें कानन

मानना ही पड़ेगा। वे सीता से कितना प्रेम करते थे, यह अगर याद रखा जाए तभी उनकी महानता समझ पाएंगी। समाज में रहने से समाज के प्रचलित कानून मानने ही पड़ेंगे। कानून की इस पाबन्दी में कितना पौरुष है, वह केवल युद्धक्षेत्र में ही पता लग सकता है, जबकि प्राण को तुच्छ करके गोली के सामने केवल कानून के लिए ही आगे बढ़ जाना पड़ता है।"

"पर पत्नी को त्याग देने का यह कानून क्या ठीक है? यही मेरा प्रश्न है।"

"आप और हम यह प्रश्न कर सकते हैं, राम को यह प्रश्न करने का अधिकार भी नहीं था। आजकल तो बहुत-से लोग पत्नी को त्याग देते हैं। जिस योरोप के आदर्श पर आप लोग विमुग्ध हैं, उनके पत्नी-त्याग का कानून भी क्या त्रुटिहीन है? फिर भी वहां उसे सब मानते हैं। एडवर्ड अष्टम् को कानून मानकर ही सिंहासन छोड़ना पड़ा। वह अगर पुराने ज़माने में पैदा हुए होते तो शायद उन्हें भी पत्नी ही त्याग देनी पड़ती। हमारे यहां उस समय 'पंचाशोऽर्द्धे वनं व्रजेत्' का नियम था। समाज में जिसका जितना कर्तव्य है, पचास साल तक उसे करना ही पड़ता था। जैसे आजकल दस से पांच तक दफ्तर करना पड़ता है लगभग वैसा ही···पर अब मुझे उतरना पड़ेगा, हम भैरवपुर के मैदान के करीब आ पहुंचे।"

"आप उतर जाएंगे! क्यों?"

"मुझे शायद वे पहचान लें। आप अकेली ही जाइए। बस बैठे रहना है, जो कुछ बोलना है, रहमान बोलेगा, मैंने उसे सब समझा दिया है।"

महावत रहमान पीछे की ओर मुड़कर बोला, "जी हां, मांजी, आप चुपचाप बैठी रहें, जो कहना है, मैं ही कह दूंगा।"

रहमान एक ज़माने से उनके यहां महावत था, वह लगभग मेघसुन्दर की उम्र का था।

"उतर कर आप कहां रहेंगे?"

"मैं आकाश-विहार जा रहा हूं, आप काम खत्म करके वहीं चली आइएगा।"

"आकाश-विहार का मतलब ?"

"वह रहा, देखिए न !"

तुंगश्री ने इतनी देर तक ध्यान नहीं दिया था, अब मुड़कर देखा, मैदान के बीच में एक विशाल मीनार-सी खड़ी थी।

"वह क्या है ?"

"आकाश-विहार देखने पर आप समझ जाएंगी। रहमान हाथी को यहीं बैठा दे। उतनी दूर जाने की ज़रूरत नहीं, मैं पैदल ही चला जाऊंगा।"

विशालकाय हाथी, जब महावत के आदेशानुसार बैठ रहा था तो तुंगश्री हड़बड़ाकर हिरण्यगर्भ पर लुढ़क गई। पर संभलते देर नहीं लगी। सीधे बैठकर उन्होंने कहा, "विशु-विनू के बारे में ज़रा सोचना है आपको।" वे इस तरह बोलीं मानो कुछ हुआ ही न था।

"अच्छा !" उतरते हुए हिरण्यगर्भ ने जवाब दिया।

चन्द मिनटों में ही हाथी भैरवपुर के मैदान में पहुंचा। जनता की भीड़ भी थोड़ी देर में ही दिखाई पड़ी। कुदाल-फावड़े से लैस सब आगे बढ़ रहे थे। ग्रामोफोन के चोंगे पर मुंह लगाकर रहमान एकाएक हाथी के ऊपर से चिल्ला उठा, "ए, रुक जाओ।"

सब रुक गए और मुंह उठाकर देखने लगे।

"वीरादेवी आज बांध काटने को मनाकर रही हैं। फैसला हो गया है, तुम सब लौट जाओ।"

तुंगश्री ने भी हाथ से उन्हें लौट जाने का इशारा किया।

वे आंखें ऊपर उठाए कुछ देर खड़े रहे फिर 'वीरादेवी की जय' के नारे लगाकर लौट गए।

आकाश-विहार के ठीक नीचे ही हिरण्यगर्भ प्रतीक्षा कर रहे थे। हाथी से तुंगश्री के उतरते ही उन्होंने रहमान से कहा, "तुम किसीसे मन्मथ-बाबू के पास खबर भेज दो कि दंगा अब नहीं होगा, इसीलिए हम वहां नहीं गए। हाथी यहीं रखो, हम जल्दी ही मुरारीपुर चलेंगे।"

"अच्छा हुज़ूर।"

तुंगश्री की ओर देखते हुए बोले, "चलिए ऊपर चला जाए।"

घुमावदार सीढ़ी पर होते हुए दोनों ऊपर चढ़ने लगे।

"यह है क्या चीज़?"

"कुछ नहीं, एक ऊंची मीनार है—सात मंज़िल ऊंची, हर मंज़िल में एक कमरा है। ऊपर रेलिंग से घिरी खुली छत है, बस। एक बार मुझे लाटरी से कुछ रुपया मिल गया, उसीसे इसको बनवाया था।"

"यहां होता क्या है? यह यों ही पड़ी रहती है?"

"मैं कभी-कभी आराम करने के लिए यहीं भाग आता हूं। मेरे पास एक छोटा-मोटा दूरबीन है, जिससे मैं कभी-कभी ज्योतिष-चर्चा भी करता हूं। मेरे मुरारीपुरवाले स्कूल के लड़के भी कभी-कभी यहां आते हैं, रात को यहीं रहते हैं, दूरबीन से सितारों को देखते हैं। उनका उत्साह आप देखें तो···"

चौथी मंज़िल तक जाकर तुंगश्री हांफ गईं।

"इतनी जल्दी हांफ गईं आप! अच्छा, चलिए इस कमरे में चलकर ज़रा बैठ लें। इसमें शायद एकाध चौकी होगी।"

चौकी थी, पर तुंगश्री बैठी नहीं, घूम-घूमकर कमरे को देखने लगीं। कमरा काफी बड़ा और बिलकुल गोल था। चारों ओर खिड़कियां थीं बहुत दूर तक दिखाई पड़ता था। खिड़कियों के बीच-बीच में महापुरुषों के चित्र टंगे थे। तुंगश्री मुग्ध होकर देख रही थीं। सीढ़ी पर आहट सुनकर उन्होंने प्रश्नवाचक दृष्टि से हिरण्यगर्भ की ओर मुड़कर देखा।

"शायद मास्टरसाहब आ रहे हैं। वे ही आकाश-विहार के इंचार्ज हैं। हमारे स्कूल के हेडमास्टर थे, अवकाश प्राप्त करने के बाद से यहीं रहते हैं, तीनों कुलों में उनका अपना कोई नहीं है।"

दरवाज़े में चोगे-सा वस्त्र पहने एक दीर्घकाय पुरुष आ खड़े हुए। उनके हाथ में घेंटू के फूलों का एक गुच्छा था। सिर के बाल सफेद, विशेष ढंग से संवारे गए थे, कन्धे पर लटक रहे थे। दाढ़ी-मूंछ भी सफेद, दृष्टि में एक विचित्र शान्ति। हिरण्यगर्भ ने आगे बढ़कर उनके पैर छुए।

"बहुत दिन से इधर नहीं आए थे तुम। तुम्हारे स्कूल के लड़कों के पास खबर भेजने की सोच रहा था। शनिग्रह इन दिनों सांझ के ज़रा-सा बाद ही स्पष्ट दिखाई देता है, मंगल भी। दोनों ही सिंह राशि पर आ गए हैं।"

"मैं इन्हें अभी मुरारीपुर के स्कूल में ले जाऊंगा, तो उन्हें बता दूंगा।"

तुंगश्री की ओर देखते हुए मास्टरसाहब बोले, "इन्हें कभी पहले देखा हो, ऐसा याद नहीं पड़ता।"

"नहीं, ये पहले कभी नहीं आईं।"

"तुम्हारे स्कूल की गृहस्थी में एक लक्ष्मी की ज़रूरत है। माताओं द्वारा अगर न सिखाया जाए तो बच्चों के मन में शिक्षा अच्छी तरह पहुंच नहीं पाती। शिक्षा के विषय में इन्हें कुछ दिलचस्पी होगी ही।"

मुस्कराकर हिरण्यगर्भ बोले, "है या नहीं, अभी तो ठीक से मालूम नहीं हुआ।"

"ओह!"

फिर थोड़ी देर चुप रहने के बाद मास्टरसाहब बोले, "तुम लोग ऊपर जा रहे हो न? मैं अब तक ऊपर ही था, अब मैं नीचे जा रहा हूं। दिन-भर और तो कोई काम नहीं, बस नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे। लगता है, ज़िन्दगी-भर मैंने केवल यही किया।"

कुछ हंसकर मास्टरसाहब दरवाज़े की ओर बढ़ चले। एकाएक बच्चों की तरह मचलकर हिरण्यगर्भ ने कहा, "मास्टरसाहब एक गीत सुनाएंगे, बहुत दिनों से आपका गीत सुनने को नहीं मिला।"

"गीत!"

थोड़ी देर सिर झुकाए वे खड़े रहे, फिर बोले, "अच्छा तो सुनो, आवाज़ तो मेरी मीठी नहीं है। तुम्हें अच्छा लग सकता है, पर इन्हें शायद न लगे।"

मुस्कराकर तुंगश्री बोलीं, "मुझे भी अच्छा लगेगा।"

"सुने बिना ही कैसे समझ लिया? अच्छा तो, सुनो।"

उन्होंने गीत शुरू किया, जिसका अर्थ था—

'भाई, हमारे देश में आकाश गंगा के किनारे झुक पड़ा है। गंगा की धारा सागर में मिल गई है। अंधेरे में प्रकाश की पुकार सुनकर पंक के शासन को तुच्छ करते हुए जो कमल खिलता है, हमारी वाणी उसीपर आसीन रहती है। जो दूब चरणों के नीचे ही रहती है, पूजा की थाली में उसीका स्थान सबसे आगे रहा है। मिट्टी और पुआल में अपने स्वप्न को मिलाकर हम कितने प्यार से देवताओं की मूर्ति बनाते हैं। सहस्र रश्मि जिस आकाश में प्रकाश देता है हम उसीके नीचे आकाशदीप जलाते हैं। धरती की महिमा को आसमान की छाती पर स्थापित करते हैं। यह हमारे ही देश में होता है।'

गीत सुनते-सुनते तुंगश्री को ऐसा लगा कि शायद इस देश के आदर्श में कभी कुछ महान भी था। जिसे हम खो बैठे हैं। पदतल से दूर्वादल को उठाकर जिन्होंने भगवान की आराधना का उपकरण बनाया था, उनके लिए कोई भी आदमी कभी नीचा नहीं था, मनुष्य चाहे जितना नीचा हो। फिर भी वे कुछ अनमनी-सी हो गईं।

"हो गया न ! अब चलूं ?"

मास्टरसाहब जाने लगे।

"बहुत अच्छा रहा, आपकी ही रचना है क्या ?"

"ये सब गीत किसी व्यक्ति-विशेष की रचना नहीं है, यहां की मिट्टी ही इसकी रचनेवाली है। वेदों के युग से लेकर रवीन्द्रनाथ तक सभीने इसी गीत को ज़रा हेर-फेर करके गाया है। मुझमें इतना साहस कहां कि मैं इसे अपनी रचना कहूं।" वे कुछ हंसे, फिर धीरे-धीरे बाहर चले गए।

"चलिए, ऊपर चला जाए।"

"चलिए।"

ऊपर चढ़ते समय हिरण्यगर्भ बोले, "मास्टरसाहब अद्भुत आदमी हैं, है न ?"

"क्या वे आजकल आपके मुरारीपुरवाले स्कूल के हेडमास्टर हैं ?"

"नहीं, वे मुरारीपुर स्कूल के कुछ भी नहीं हैं। पर वे ही सब कुछ हैं।

जब मर्ज़ी हो वहां जाते हैं, जितनी देर इच्छा हुई वहां रहते हैं। ऐसा कोई विषय नहीं है, जिसका उन्हें ज्ञान न हो।"

"उन्हें वेतन कितना देते हैं ?"

"वेतन ? उन्हें वेतन देने की बात मैं सोच ही नहीं सकता, पर उनकी ज़रूरतों को पूरा करने की कोशिश करता हूं।"

"वे यहां अकेले रहते हैं ?"

"वे और धनपतसिंह रहते हैं। धनपत यहां का रखवाला है, उनकी रसोई वगैरह भी बना देता है। खास झंझट भी नहीं है। एकाहारी हैं, ज़्यादातर दिन में दूध और फल लेते हैं।"

चन्द मिनट खामोशी में बीत गए। हिरण्यगर्भ ने फिर मास्टरसाहब की बात छेड़ दी, कहा, "रिसर्च की प्रेरणा मुझे इन्हींसे मिली थी। उन्होंने कहा था—खोजो, खोजते जाओ, जिन्दगी-भर अनुसन्धान की तपस्या ही विज्ञान की तपस्या है, विलायती दवाओं का फेरीवाला बनकर अपनी ज़िन्दगी न बिता देना।"

अच्छा, आपके अनुसन्धान का विषय क्या है ?"

"अनुसन्धान···? बैठिए बताता हूं। पहले ठीक से बैठ जाइए।"

दोनों छत पर पहुंच गए थे। गोलाकार छत के चारों ओर सीमेण्ट की गोल बेंच भी थी। बैठने से पहले तुंगश्री थोड़ी देर खड़ी रह गईं, क्षितिज की इतनी बड़ी रेखा उन्होंने इससे पहले और कभी नहीं देखी थी। कलकत्ता के मानूमेंट पर कभी चढ़ी तो थीं, पर असंख्य पक्के मकानों और कारखानों की चिमनियों के करण क्षितिज का रूप ही जैसे खो गया था। धूप से जगमगाते योजन-विस्तृत हरे मैदान के छोर पर आकाश की ऐसी नीलमा उन्होंने और कभी नहीं देखी थी। हिरण्यगर्भ की बातें सुनकर वे फिर सहज हो रहीं······

"मेरा अनुसन्धान कोई बहुत नया नहीं है, मैं यह प्रमाणित करना चाहता हूं कि कीटाणु ही रोगों के मूल कारण नहीं हैं। कल मैं आपको जैसे बता रहा था, शायद आपको याद होगा कि कीटाणु भी उद्‌भिद हैं। मरीज़

के शरीर में बैक्टीरिया नाम का उद्‌भिद हमें मिलता है। पर इससे यह बात निस्सन्देह नहीं कही जा सकती कि बैक्टीरिया ही रोगों का कारण है। बीमार पड़ने से लोगों के बदन का ताप भी बढ़ जाता है तो हम उसे बीमारी का कारण नहीं समझते, उसे केवल एक लक्षण-मात्र मान लिया जाता है। मुझे लगता है, रोगी शरीर में कीटाणु का आविर्भाव भी एक वैसा ही लक्षण-मात्र है। खंडहर में पीपल के जो पौधे उग आते हैं, फर्श पर जैसे घास उग आती है वैसे ही रोगग्रस्त शरीर में कीटाणु पैदा होते हैं। जल-थल सब जगह कीटाणुओं के बीज फैले हैं, हम सभी प्रतिक्षण उन्हें खा रहे हैं, श्वास-प्रश्वास के साथ भीतर ले रहे हैं। पर हम सभी तो एक साथ बीमार नहीं पड़ते, हमारे चिकित्साशास्त्र में 'वाइटैलिटी' या जीवन-शक्ति नाम की एक चीज़ अवश्य है। मैं उसी अस्पष्ट चीज़ को रासायनिक परिभाषा से स्पष्ट करने की कोशिश कर रहा हूं। मैं यह खोज कर रहा हूं कि शरीर में किस चीज़ की घट-बढ़ होने पर टाइफायड रोग के उद्‌भिद को हमारे शरीर में पैदा होने का मौका मिलता है। मैंने स्वस्थ जानवरों को टाइफायड के कीटाणु खिलाकर देखा है, इससे कुछ नहीं होता। उस बन्दर को खिला रहा हूं, उस सांप को भी दूध के साथ मिलाकर पिला रहा हूं, कुछ भी नहीं हुआ। सुई भी दी पर कुछ नहीं हुआ, बन्दर को भी मैंने एक सुई दी है। अगर इससे भी उसे कुछ न हो तो मैं खुद कुछ 'प्योर-कल्चर' खाकर देखूंगा अर्थात् 'काकस पारटुलेटों' का खुद प्रयोग कर रहा हूं।"

"सांप को सुई क्यों दे रहे हैं?"

"सांप सरीसृप श्रेणी का जीव है, कोल्ड ब्लडेड एनीमल। जो कीटाणु हमारे यानी हाट ब्लडेड एनीमल की बीमारी के कारण होते हैं, उनसे उन्हें भी कुछ होता है या नहीं, इसीका निरीक्षण कर रहा हूं.........कौतूहल......"

"बैक्टीरिया कल्चर को आप खुद खाएंगे?"

"हां, यदि ज़रूरत पड़ी तो।"

"ज़रूरत कब पड़ेगी ?"

"अगर उस बन्दर को कुछ न हो तब ?"

"अगर उसे कुछ हो गया ? तो उसका खून लेकर देखूंगा कि उसमें किसी चीज़ की कमी हुई है या नहीं। बन्दर अब नीरोग था तो मैंने उसके खून की हर प्रकार से परीक्षा कर रखी है, अपने खून की परीक्षा भी कर रखी है। बहुत-से टाइफायड के मरीज़ों के खून की जांच का रिकार्ड हमारे पास है।"

तुंगश्री जैसे अपने कानों पर विश्वास नहीं कर पा रही थीं, यह आदमी कह क्या रहा है। यह टाइफायड के कीटाणु खुद खाएगा ! वे बोलीं, "यह तो मैं समझ गई, पर आप खुद टाइफायड का बैक्टीरिया खाएंगे, आपको डर नहीं लगेगा ?"

"आपके मुंह से तो यह बात शोभा नहीं देती, तुंगश्रीदेवी ! पुलिस की गोली के सामने आप कैसे बढ़ी थीं, आपको डर नहीं लगा था ?"

वे एक-दूसरे की ओर थोड़ी देर देखते रहे। बाद में हिरण्यगर्भ ने कहा, "सत्य की खोज में जिन मनुष्यों ने यात्रा शुरू की है, असत्य के विरुद्ध जिनको अभियान करना है, उनको अपने लिए दुःख-सुख, डर-भय, नहीं होना चाहिए।"

एक अवर्णनीय आनन्द से तुंगश्री का हृदय परिपूर्ण हो उठा। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उन्होंने कहा, "कल आप घी लेकर क्या कर रहे थे ?"

मुस्कराकर हिरण्यगर्भ ने जवाब दिया, "तपेदिक के विषय में एक अद्‌भुत धारणा मेरे मन में आई है। एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने ही शायद इस विषय में अभी एक निबन्ध लिखा था, उसे ही मैं ज़रा हेर-फेर करके देख रहा हूं।"

"तपेदिक के बारे में ? क्या इस सम्बन्ध में भी आप कुछ कर रहे हैं ?" तुंगश्री को अपने तपेदिक के रोगी भाई की याद आ गई।

"नहीं अभी तक तो कुछ कर नहीं पाया। अनुसन्धान में एकाएक कुछ

किया नहीं जा सकता। बहुत दिन तक अंधेरे में केवल टटोलना पड़ता है, सत्य हाथों से बार-बार फिसल जाता है। रवीन्द्रनाथ के एक गीत में एक बड़ी सुन्दर पंक्ति है, इस विषय में वह अच्छी तरह लागू होती है—'से केवल पालिए बेड़ाय दृष्टि एड़ाय डाक दिए जाय इंगिते।'—यानी जो नज़र बचाकर भाग निकलता है और केवल इशारे में ही बुलाता रहता है। किसी भी तरह पकड़ में नहीं आता।" वे हंसते हुए देखते रहे।

"फिर भी ज़रा बताइए, आप क्या कर रहे हैं ?"

"कुछ भी नहीं, सिर्फ कल्पना ही कर रहा हूं। कल्पना को कहने में अवश्य कोई आपत्ति नहीं हो सकती। तो सुनिए—हमारे खाद्य-पदार्थ किस तरह हज़्म होते हैं। यह कहना ज़रूरी है। हमारे खाद्य-पदार्थ प्रोटीन अर्थात् आमिष जातीय, कार्बोहाइड्रेट अर्थात् श्वेतसार, फैट यानी तैल-पदार्थ, इसके अलावा विटामिन, नमक, खनिज, पानी वगैरह भी हैं। हम जब खाना खाते हैं तो केवल पानी वगैरह को छोड़कर हर चीज़ हज़्म होती है, यानी कटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाती है, जिससे वे हमारे खून में प्रवेश करके शरीर के काम आ सकें। खून में प्रविष्ट होते समय एक मज़ेदार चीज़ होती है, सभी खाद्य-पदार्थ लीवर से होकर उसमें जाते हैं, केवल तैलाक्त पदार्थ नहीं। उसे खून में लेने के लिए प्रकृति ने एक और ही रास्ता बनाया है, वह एक पतली-सी नली जैसी चीज़ है, पेट से होकर छाती से होती हुई वह सीधे आकर हमारे गले के पास स्नायु-संगठन में जुड़ गई है। अर्थात् फैट सीधे आकर स्नानुयों से बहनेवाले रक्त में मिल जाता है। वहां से दाहिने हृत्पिण्ड में और फिर फेफड़े में जाता है। इसीलिए ऐसा लगता है कि फेफड़े केवल श्वास-प्रश्वास लेने का यन्त्र ही नहीं है, तैल-पदार्थ हज़्म करने के काम में भी ये शायद कुछ हाथ बंटाते होंगे। तपेदिक के जो कीटाणु हम देखते हैं, उनकी विशेषता यह है कि वे एसिडफास्ट हैं, अर्थात् फुक्सिन नाम के एक लाल रंग के साथ अगर उन्हें थोड़ी देर गरम किया जाए तो उनके शरीर पर लाल रंग आ जाता है। हर बैक्टीरिया में यह बात होती है। पर तपेदिक के कीटाणु पर वह लाली

बहुत ही पक्की हो जाती हैं, एसिड से धोने पर भी नहीं जाती, इसीलिए उसे हम एसिडफास्ट कहते है। उसके इस एसिडफास्ट होने का कारण वैज्ञानिकों ने यह बताया है कि उसके बदन पर तैलाक्त पदार्थ की एक खोल-सी चढ़ी होती है, जिन्हें वे फैटी कैप्सूल कहा करते हैं। मैं यह सोच रहा हूं कि फेफड़ा नाम के परिपाक यन्त्र की किसी कमज़ोरी के कारण यदि तैल-पदार्थ हज़्म न हो पाए तो वह आधा हज़्म किया हुआ पदार्थ फेफड़े में ही रह जाता है, खाना हज़्म न होने पर जैसे वह पेट से उतरता नहीं। शायद वैसे ही च़रबी भी पेट में रह जाती है। और जो मामूली कीटाणु फेफड़े में रहते हैं, वे इस चरबी के सागर में डुबकी लगाते रहते हैं और धीरे-धीरे उनके बदन पर तैल-पदार्थ की एक खोल-सी चढ़ जाती है, यानी कैप्सूल तैयार हो जाता है। तपेदिक के जिस कीटाणु को हम इस रोग का कारण समझ बैठे हैं, शायद वह कारण नहीं, लक्षण-मात्र है। असल में शायद घी या तैल-पदार्थ को हज़्म करने की शक्ति में कमी ही तपेदिक है, जैसाकि कार्बोहाइड्रेट अथवा श्वेत-सार को हज़्म करने का अभाव ही बहुमूत्र रोग है। तपेदिक में बुखार आता है, इसका कारण शायद तैल-पदार्थ से होनेवाला अजीर्ण है। फैट के शरीर में प्रवेश करने पर बुखार होता है, इसका सबूत तो दूध की सुई लगाने पर ही मिल जाता है। इसके अलावा एक और चीज़ देखिए, बहुत पुराने ज़माने से तपेदिक का इलाज यह रहा है कि सुपाच्य तैल-पदार्थ का इस्तेमाल हो। तपेदिक होने से सबसे पहले शरीर की चर्बी का भंडार शून्य हो जाता है।···आप शायद ऊब रही हैं···चलिए अब चला जाए। यह जगह आपको कैसी लगी ?"

"बहुत अच्छी। अच्छा सुनिए, मेरे छोटे भाई को टी० बी० हो गई है, क्या करूं?"

"अच्छा ! उन्हें सैनेटोरियम भेज दीजिए।"

"केशवबाबू ने सैनेटोरियम का इन्तज़ाम करने का वादा किया है।"

"मैं बहुत अच्छा इन्तज़ाम किए देता हूं। एक सैनेटोरियम में मैंने कुछ

रुपये दिए हैं, काकू ने भी दिए हैं। वहां पर हमारे भेजे हुए मरीज़ों के मुफ्त इलाज का बन्दोबस्त है। मैं ग्रापको एक चिट्ठी दे दूंगा, उसे लेकर ग्राप ग्रपने भाई को किसीके साथ भेज दीजिए, ग्रगर ग्राप खुद चली जाएं तो सबसे ग्रच्छा।"

"ग्रच्छा तो जाते समय ग्रापसे चिट्ठी ले जाऊंगी।"

"चलिए, ग्रब चला जाए। मुरारीपुरवाला स्कूल भी ग्रापको दिखा दूं।"

"चलिए।"

हाथी पर करीब घण्टे-भर में वे मुरारीपुर स्कूल पहुंच गए। बाहर से कोई ऐसी विशेषता तुंगश्री की दृष्टि में नहीं पड़ी। ग्रन्दर ग्राकर तो वह कुछ निराश ही हुई। कतार में कुछ पुग्राल के छप्पर। एक तरफ कुछ पुरानी साइकलें टेक लगाकर रखी हुई थीं। थोड़ी दूर पर एक चौपाल में छोटे कारखाने जैसा कुछ दिखाई पड़ रहा था। चारों ग्रोर लौकी, कद्दू, खीरा, भिण्डी ग्रादि की छोटी-छोटी क्यारियां थी। कुछ मुर्गियां तथा बत्तखें भी दिखाई दीं। कई गायें भी थीं ग्रौर बैलगाड़ियां भी खड़ी थीं।

हिरण्यगर्भ ने कहा, "लड़के शायद ग्रभी चर्खा चला रहे हैं।"

"यहां कितने छात्र हैं?" तुंगश्री ने पूछा।

"फिलहाल पच्चीस छात्र हैं। सभी कम उम्र के हैं, पर ग्राप जो कुछ देख रही हैं, सब उन्हींके हाथ का है। हरेक की ग्रलग-ग्रलग क्यारियां हैं। ग्रपने हाथों ज़मीन को तैयार करके उन्होंने यह खेती की है। गायों, मुर्गियों तथा बत्तखों की सेवा वे खुद ही करते हैं। यहां तक कि दूध निकालना भी उन्होंने सीखा है। महात्माजी के ग्रादर्श पर ही मैंने यह सब बनाया है। यहां मोटर का एक छोटी-सी वर्कशाप भी बनवाई है। एक मोटर मेकेनिक है, वह उन्हें काम सिखा रहा है। वे कपड़े तैयार करने के सारे काम तो सीखेंगे ही, इसे भी सीख लें। मेरा इरादा है कि ग्रगर मैं ग्रपनी मिल को फिर से चालू कर सका तो इन्हें कपड़े की मिल का काम भी सिखाऊंगा।"

"ये लोग कुछ पढ़ाई-लिखाई नहीं करते।"

"अवश्य करते हैं। हिन्दी पढ़ते हैं, बंगला पढ़ते हैं, कुछ गणित भी सीखते हैं। गणित तो सीखना ही पड़ता है, क्योंकि इनकी अपनी दुकान है, जहां उन्हें खुद ही दुकान के सारे काम करने पड़ते हैं। थोड़ा इतिहास भूगोल भी पढ़ाया जाता है, पर वे प्रश्न करके इतने विषयों को सीख लेते हैं कि उसकी सूची बनाना असम्भव है। छोटे-छोटे बच्चों के मन में कितने ही प्रकार के प्रश्न उठते हैं, यहां के शिक्षक उन प्रश्नों का यथासाध्य उत्तर देने की चेष्टा करते हैं। जो खुद नहीं जानते उसे किताबों से खोजकर निकालना पड़ता है। इसके अलावा जो सबसे बड़ी चीज़ है, दस के साथ मिलकर एक-दूसरे को सहारा देकर किस तरह से समाज में रहना चाहिए, उसे ये लोग सीख रहे हैं। नृत्य, संगीत, चित्रकला आदि भी सिखाने का इरादा है, पर आदमी ही नहीं मिल रहा है। अच्छे शिक्षकों का यहां बड़ा अभाव है।"

"स्कूल चलाने में हर महीने आपका कितना खर्च होता है?"

"मैं अभी दो शिक्षकों का वेतन खुद देता हूं और ये ज़मीन दे रखी है, लड़के अपने-आप ही चला लेते हैं। मैं सिर्फ चावल दिया करता हूं, पर यह निश्चित है कि कुछ दिन बाद वह खर्च भी ये लोग संभाल लेंगे। यह लीजिए सब आ रहे हैं।"

तुंगश्री ने देखा, चौपाल से बच्चों का एक झुण्ड निकल रहा है, पीछे-पीछे एक शिक्षक भी आ रहे हैं। हिरण्यगर्भ और तुंगश्री भी उनकी ओर बढ़ गए। हिरण्यगर्भ को देखकर लड़के उनकी ओर भागने लगे।

"क्या हालचाल हैं? सब ठीक है न?"

उनके हंसी से भरे चेहरे से ही प्रश्न का उत्तर मिल गया।

शिक्षक जीवनबाबू आगे बढ़कर हंसते हुए बोले, "आप आ गए, बहुत अच्छा हुआ। एक समस्या को हम हल नहीं कर पा रहे हैं। देखिए, शायद आपसे हो सके।"

"कौन-सी समस्या?"

"किशन पूछ रहा है, आसमान नीला क्यों है ? इसका कारण तो मुझे ठीक से मालूम नहीं है, क्योंकि मेरा विषय विज्ञान नहीं था।"

हिरण्यगर्भ तुंगश्री की ओर घूमकर बोले, "आप जानती हैं ?"

तुंगश्री ने मुस्कराकर जवाब दिया, "नहीं।"

"किशन कहां है ?"

सात वर्ष का एक लड़का आगे बढ़ आया। देखने से ही लगता था, बहुत नटखट बालक है। अपने प्रश्न से मास्टरजी को भी चक्कर में डाल दिया। इसका गर्व उसके सारे चेहरे से टपक रहा था।

"इसका कारण तुम्हें क्या जान पड़ता है ?"

"मैंने तो योगेन को बताया था, पर मास्टरजी कहते हैं, वह सही उत्तर नहीं है।"

"योगेन से तुमने क्या कहा था ?"

योगेन की ओर देखते हुए किशन ने कहा, "तू बोल दे न।"

योगेन कुछ लज्जालु प्रकृति का लड़का था, उसने सिर झुकाकर कहा, "किशन कहता है कि आसमान में धोबी हैं जोकि काले बादल को धो-धोकर सफेद बना देते हैं, इसीलिए आसमान में इतना नील रखा हुआ है। नील से कपड़े साफ होते हैं न ?"

सभी हंस पड़े।

हिरण्यगर्भ ने कहा, "यह तो लगता है कवि बनेगा। पर सुनो, आसमान का रंग नीला क्यों है, यह जानने के लिए सबसे पहले यह जानना पड़ेगा कि पृथ्वी पर हम जितने रंग देखते हैं, उन सबका कारण है सूर्य की किरणें। सूर्य के प्रकाश में सात रंग हैं। मैं एक दिन तुम्हें आतशी शीशा लाकर दिखाऊंगा—सात रंग साथ मिले हैं, इसीसे वह सफेद दीखता है। हमारे चारों ओर तमाम ऐसी वस्तुएं हैं जो सूर्य के किसी न किसी रंग को अपने भीतर खींच लेती हैं और उस रंग के अलावा बाकी सब रंग दिखाई पड़ते हैं। सूर्य की किरणें जब आकाश से होकर आती हैं तो आकाश नीले रंग के अलावा बाकी सब रंगों को अपने में सोख लेता है,

इसीलिए ही हमें सिर्फ नीला ही दिखाई पड़ता है। घास हरी है, क्योंकि हरे रंग के अलावा और बाकी रंग वह सोख लेती है। जो चीज़ हमें लाल दिखाई पड़ती है, वह भी इसी प्रकार लाल रंग के सिवा सब रंगों को अपने में सोख लेती है।"

"सूर्य की किरणों में कौन-कौन-से रंग हैं?" एक अन्य लड़के ने पूछा।

"बैंगनी, गहरा नीला, नीला, हरा, पीला, वासंती और लाल।"

"तो जिसका रंग काला है, वह काला क्यों दीखता है।"

"वह सूर्य के सभी रंगों को सोख लेता है, उसपर कोई भी रंग नहीं है, इसीलिए वह काला दीखता है और जो सफेद चीज़ है, वह एक भी रंग नहीं सोख पाती...।"

"ओह!" गम्भीर होकर किशन ने कहा।

"एक-एक चीज़ कैसे रंग को सोख लेती है, एक विशेष यन्त्र से यह साफ दिखाई पड़ता है। देखो, अगर वह यन्त्र मिला तो तुम्हें लाकर दिखाऊंगा।"

"कब लाएंगे?" शर्मीले योगेन ने उत्सुकता प्रकट की।

"सब चीजें मेरे पास नहीं हैं, कलकत्ता से मंगाऊंगा। ये आज कलकत्ता जा रही हैं, इन्हींसे मंगाऊंगा।" फिर जीवनबाबू की ओर देखते हुए बोले, "मेरे पास विज्ञान की कुछ आसान पुस्तकें हैं, उन्हें आपके पास भेजूंगा। हां, एक और बात है, मास्टरसाहब ने एक दिन इन्हें वहां ले जाने के लिए कहला भेजा है, शनि और मंगलग्रह दिखलाएंगे। लड़के इस समय क्या करेंगे?"

"ये लोग अब कपास के बीज बोने के लिए ज़मीन गोड़ेंगे। हमारे अहाते के चारों ओर पन्द्रह-पन्द्रह हाथ की दूरी पर कपास के पेड़ लगाए जाएंगे।"

"अच्छी बात है, तो तुम लोग अपने काम में जुट जाओ, मैं इन्हें ज़रा यहां घुमा दूं।"

लड़के चल पड़े। जीवनबाबू इनके साथ-साथ ही चले आए।

तुंगश्री ने कहा, "आकाश के नीले रंग की यह व्याख्या मुझे मालूम ही नहीं थी।"

"आसमान के नीले रंग की व्याख्या यानी सम्पूर्ण व्याख्या और भी जटिल है। प्रोफेसर रमन की 'स्केटरिंग एफेक्ट' आदि बहुत-सी व्याख्याएं हैं। पर छोटे-छोटे बच्चों का कौतूहल मिटाने के लिए फिलहाल मैंने जो बताया, वही काफी है।"

"हूं, तो इसे पढ़ना पड़ेगा।"

"हां, बहुत चमत्कारपूर्ण है।"

फिर थोड़ा समय चुप्पी में कट गया।

"इन्हें इतिहास-भूगोल क्या किसी किताब से पढ़ाते हैं?" तुंगश्री ने जीवनबाबू से पूछा।

"किताबों से पढ़ाना अभी तक शुरू नहीं किया है, ज़बानी ही यहां का भूगोल और इतिहास थोड़ा-थोड़ा बता रहा हूं। पहले अपने इस स्कूल का भूगोल ही बच्चों ने सीखा है, मानचित्र भी बनाए हैं, फिर अब इस गांव का भूगोल पढ़ा रहा हूं। इसका भी मानचित्र वे बनाएंगे। इसी तरह इतिहास भी पढ़ा रहा हूं। इस विद्यालय के इतिहास से उस गांव का इतिहास। इस तरह वे धीरे-धीरे आगे बढ़ेंगे।"

एकाएक सामने के बरगद के पेड़ से एक लड़का चौंककर उतरा।

विस्मित हिरण्यगर्भ ने जीवनबाबू से पूछा, "वह यहां क्या कर रहा था?"

"वह शायद अपना चिड़ियों का घोंसला देखने के लिए ऊपर चढ़ा था।"

लड़के के पास आते ही जीवन बाबू ने पूछा, "क्या देखा, विनोद?"

हताश स्वर में विनोद ने कहा, "मैना ने बहुत ऊपर घोंसला बनाया है। हमारी टोकरी में नहीं आई।"

"क्या हो गया?" हिरण्यगर्भ ने प्रश्न किया।

जीवनबाबू ने कहा, "पेड़ के ऊपर उसने एक छोटी-सी टोकरी बांध

रखी है, उसकी इच्छा थी कि कोई चिड़िया आकर उसीमें घोंसला बनाए। कल से एक मैना तिनके चुनकर वहां ले जा रही है, इसीलिए वह देख रहा था कि घोंसला कहां बना रही है।"

"मेरी टोकरी में उसने घोंसला क्यों नहीं बनाया। यह मैना बड़ी बुद्धू है।"

"तुम्हारी टोकरी शायद उसे पसन्द नहीं है।" हिरण्यगर्भ ने हंसकर कहा।

"क्यों, सुन्दर टोकरी तो है।"

"तुम्हारे लिए सुन्दर है, पर उसके लिए शायद नहीं है।"

"असल में वह बड़ी बुद्धू है।" मुस्कराकर विनोद दौड़ता हुआ चला गया।

हिरण्यगर्भ घूम-घूमकर तुंगश्री को सब चीज़ें दिखाने लगे। छोटे-से दरवाज़े में भी ले गए। एक बूढ़े-से कम्पाउण्डर अभी इसका काम देखते हैं, लड़के ही उनकी मदद करते हैं। मामूली बीमारियों का इलाज इन्हींके सहारे हो जाता है, कोई खास बात हो जाने पर हिरण्यगर्भ को बुलावा आता है। वे महीने में दो बार आकर स्वास्थ्य-तत्त्व भी पढ़ाते हैं। किस्म-किस्म की रंगीन तस्वीरें और मैजिक लैंटर्न से स्लाइडें भी दिखाते हैं।

घूम-घूमकर तुंगश्री कुछ थक गई थीं। रात भी अच्छी तरह से नींद नहीं आई थी। उनके चेहरे पर थकावट स्पष्ट झलक रही थी। उनको लग रहा था कि वे जैसे स्वप्नों के बीच टहल रही हैं। यह सब जैसे वास्तविकता नहीं है, झूठ है। क्षण-भर में ही ये स्वप्न टूट जाएंगे।

"आप किस ट्रेन से जाएंगी?"

"ग्यारह बजे एक ट्रेन है न?"

"है, पर उससे जाना है तो अब देर करना ठीक न होगा।"

"चलिए, तब चला जाए।"

"चलिए। हाथी पर ही आपको सीधे स्टेशन पहुंचा दूं। एक बार घर तो उतरना ही पड़ेगा। आपका सामान वहीं है, कुछ खा भी लेंगी।

सैनेटोरियम के लिए चिट्ठी भी दे दूंगा; और साइंस कॉलेज में हमारे एक मित्र हैं, उनके लिए भी एक चिट्ठी दूंगा। अगर स्पेक्ट्रोस्कोप कहीं से जुटाकर भेज सकें तो लड़कों को दिखाऊंगा। काकू से नहीं मिलिएगा ?"

"नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं है, बाहर ही बाहर मुझे स्टेशन भेज दीजिए। खाने-पीने के बखेड़े की क्या ज़रूरत है, रास्ते में ही कुछ खा लूंगी।"

"मैं आते समय कुकर पर रसोई चढ़ाकर आया था। भात और भुर्ता। हां, दूध भी है। अमरूद भी दो-चार दे सकता हूं। अमरूद तो ज़रूर पसन्द करती होंगी आप ?"

हिरण्यगर्भ की आंखों में एक ऐसा भाव झलक आया मानो वे कोई बालक हों और अपने साथी को अमरूद का लालच दिखाकर लुभाने की चेष्टा कर रहे हों।

"अमरूद मुझे खराब लगता है।" आखें बिचकाकर तुंगश्री ने कहा।

"केले ? शायद दो-चार मेरे बेंतवाले बक्स में होंगे।"

"मेरे खाने के लिए आप इतने परेशान क्यों हैं ?"

कलाईघड़ी की ओर देखते हुए हिरण्यगर्भ ने कहा, "नौ-पन्द्रह हो गए हैं। अगर जाना ही चाहती हैं तो जल्दी कीजिए।"

एकाएक तुंगश्री को लगा कि हिरण्यगर्भ उन्हें भगाने से जैसे खुश हों। यह बात मन में आते ही उनका मन विषाद से भर गया। एक प्रच्छन्न मान भी जैसे मन में आ गया।

७

केशवसामन्त बड़े ध्यान से अपनी मूंछ के छोरों पर कास्मेटिक लगा रहे थे। सचमुच उनकी मूंछें देखने लायक थीं, पुरुषोचित मूंछें। वे जब चिन्तित होते हैं तभी उनका ध्यान मूंछ के छोरों पर ज़्यादा खिंच जाता

है। वे मूंछों को नुकीली से और भी नुकीली करने में लग जाते हैं। उन्होंने तीन-तीन आदमी भेजे हैं, पर अब तक एक भी नहीं आया। चौबीस घंटे के अन्दर ही तीनों के लौटने की बात थी और उनमें से हरेक विश्वासपात्र है। यह सब याद आते ही उनकी भौंहें सिकुड़ गईं। दुनिया में सच-मुच कोई भी विश्वास के योग्य है? शिखरिणी पर ही जब विश्वास करना व्यर्थ साबित हुआ तो इस प्रश्न का ठीक जवाब तो बहुत पहले ही मिल चुका है। दुनिया में कोई भी विश्वास करने के योग्य नहीं है। सभीसे स्वार्थ का नाता है। शिखरिणी के साथ भी अगर कुछ स्वार्थ का नाता होता तो कुतिया की तरह पूंछ हिलाती हुई पीछे-पीछे घूमती, पैर छूकर विनती करती कि मुझपर दया करो, मेरे गले में पट्टा डाल दो। उन्होंने मूंछ के छोर को दो बार और ऐंठा, नहीं, एकमात्र भरोसा यह है कि वे जिनको खिला रहे हैं, उन लोगों के स्वार्थ की लेई इतनी चिपचिपी है कि जल्दी उनके साथ योगायोग टूटनेवाला नहीं है। नकद का नाता है। जो तीन लड़कियां उन्हें केन्द्र बनाकर उनके चारों ओर घूम रही हैं, उनमें से हरेक अपने-अपने मानसलोक में जिस नीहारिका का सृजन कर रही है और जिसके बीच वे तरह-तरह के सूर्य और नक्षत्रों की प्रत्याशा कर रही हैं, उनका आकर्षण भी कम नहीं है।

फिर से केशवसामन्त की भौंहें सिकुड़ गईं। क्या हरेक के बारे में यह बात लागू होती है? उस जेल से लौटी हुई अभावग्रस्त, भूखी तुंगश्री के सम्बन्ध में यह बात ज़रूर लागू होती है। बी०ए० पास अनुसूचित जाति की इस वीरादेवी के सम्बन्ध में भी लागू होती है, पर ठीक नहीं कहा जा सकता। कुछ ढीठ-सी है, वह चपला! वह पतिता भी क्या उनसे कुछ मोह नहीं रखती? केशवसामन्त उसके सामने भी अपने अभिनय में कोई त्रुटि नहीं आने देते, पर ऐसे बहुतेरे अभिनय देखकर बार-बार ठगी जाने पर भी क्या उसकी आंखें अभी तक नहीं खुलीं। खुलनी तो चाहिए थीं। चपला के प्रेमविह्वला रूप की कल्पना करके उनके होंठों पर एक मुस्कान नाच गई।

चपला के साथ उन्होंने जो सम्पर्क बनाए रखा है, वह गीत सुनने के लिए नहीं है; और चपला जैसी औरतों के साथ आदमी साधारणतः जिस लिए सम्पर्क रखा करते हैं, इसके लिए भी नहीं—इन सब चीजों में अब उन्हें कुछ भी दिलचस्पी नहीं रही—उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य है मेघसुन्दर और हिरण्यगर्भ को बरबाद करना। इसलिए चपला से नाता बनाए रखना पड़ा। उसकी मुट्ठी में बहुत-से गुंडे हैं, यद्यपि अभी तक उन्हें गुंडों का सहारा नहीं लेना पड़ा है, पर ज़रूरत होने पर लेंगे ही। फिलहाल तो असामियों को बहकाकर, मज़दूरों को भड़काकर, हिरण्यगर्भ की बड़ी ही प्यारी और आदर्श मिल को डाइनामाइट से उड़ाकर एक उथल-पुथल मचा देंगे। फिर ज़रूरत पड़ने पर असामियों को भड़काएंगे कि मालगुज़ारी रुकवा देंगे। आजकल की तंगी के दिनों में ऐसी उत्तेजना पैदा करना कोई मुश्किल काम नहीं—सब बारूद बन ही गए हैं, सिर्फ चिनगारी की कमी है। वे तुंगश्री और वीरादेवी कुछ कर सकें या नहीं, बातों के चक-मक की रगड़ से कितनी ही चिनगारियां झाड़ तो सकेंगी ही। जो चिन्ता बीच-बीच में उनके मन में बिजली की तरह कौंध उठती है, वह फिर एक बार कौंध उठी। भौंहें चढ़ाकर उन्होंने फिर दो बार मूंछें ऐंठ लीं। साम्य के इतने महान आदर्श को इस प्रकार मुखौटे की तरह इस्ते-माल करना क्या ठीक हो रहा है? साथ ही मन में यह भी आया, क्यों नहीं? जीवन का अर्थ अगर संग्राम ही है तो येनकेन प्रकारेण विजय ही एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए। मुखौटा कौन नहीं इस्तेमाल कर रहा है? महात्मा गांधी का नाम लेकर क्या खद्दरपोश चोरों का झुंड नहीं घूम रहा है? धर्म का मुखौटा लगाकर लालची गुरू क्या चेलों पर रोब नहीं जमा रहा है? हिरण्यगर्भ का आदर्श भी तो एक मुखौटा ही है, एक पोज़ है, मेघसुन्दर पर तो कोई मुखौटा भी नहीं है, अनावृत पिशाच-मात्र है। उसने उन्हें गर्दनिया देकर मकान से निकाल दिया था। नथुने फड़क उठे। केशवसामन्त की स्वभावतः लाल और तनी हुई आंखें जैसे बाहर निकल पड़ेंगी। उनके होंठ दो बार कांप उठे। थोड़ी देर स्तब्ध-से बैठे रहे, फिर

उठ खड़े हुए। उठकर तीसरी मंज़िल के कमरे में चले गए। इस कमरे में वे किसीको नहीं आने देते। पहले सीढ़ी के दरवाज़े में फिर ऊपर कमरे के दरवाज़े में सिटकिनी चढ़ा दी।

कमरे में एक कैमरा था, फोटो इन्लार्ज करनेवाला कैमरा। वे चुपचाप थोड़ी देर तक उसकी ओर देखते रहे। ठीक जैसे मतवाला शराब की बोतल की ओर ललचाई नज़र से ताकता है। बगल ही डार्क रूम था, बड़ी सावधानी से उसके भीतर गए, एक लाल रंग की बत्ती जलाई। उन्होंने जो तीन निगेटिव ट्रे में भिगो रखे थे। उन्हें उठाकर देखा, फिर उन्हें प्रिण्ट करने के लिए रख दिया। एक दराज़ खींचकर तीन और फोटो निकाले। वे तैयार हो चुके थे। अब उनका इस्तेमाल किया जा सकता है। डार्करूम से निकलकर उन्होंने तीनों फोटो दीवार पर एक कतार में ठीक से टांग दिए। एक फोटो हिरण्यगर्भ का, दूसरा मेघसुन्दर का और तीसरा शिखरिणी का था। वे तीनों की ओर अपलक दृष्टि से देखते रहे। उनकी आंखें शेर की आंखों की तरह चमकने लगीं, फिर एकाएक अपने पांव से चप्पल खोलकर मेघसुन्दर के मुंह पर मार दी, फिर हिरण्यगर्भ के मुंह पर भी मारी। पागल की तरह लगातार मारते रहे। तस्वीरें दीवार से गिर पड़ीं। उन्हें उठाकर फिर से टांगा इसके बाद अलमारी से एक रिवाल्वर निकालकर एक के बाद एक दोनों तस्वीरों पर गोली बरसाने लगे। रिवाल्वर की सारी गोलियां खत्म हो गईं तो वे एक कुर्सी पर बैठकर हांफने लगे। फिर तस्वीरों की तरफ देखा, हां ठीक निशाना लगा है सिर पर, मुंह पर और छाती पर तीनों जगह गोलियां लगी हैं।

फिर वे शिखरिणी की तस्वीर के पास आकर बोलने लगे, "तुम्हें मैं गोली नहीं मारूंगा, मैं तुम्हें चाहता हूं। मन्मथ को रास्ते से हटाकर मैं तुम्हें पालूंगा। मैं जानता हूं कि मन्मथ निर्दोष है, पर वह ज़बर्दस्ती घुस आया है। उसे हटना ही पड़ेगा। जो सिन्दूर उसने तुम्हारी मांग में भरा है। मैं उसे पोंछ दूंगा। अपने खून से फिर नये सिरे से तुम्हारी मांग भरूंगा।

यह कहकर उन्होंने मेज़ पर से एक सुई उठाकर अंगुली में चुभा दी,

फिर उसे दबाकर खून निकाला और उस खून से शिखरिणी के माथे पर टीका लगा दिया। थोड़ी देर एकटक देखते खड़े रहे, फिर उनकी आंखों से दो बूंद आंसू टपक गए। अब जैसे उन्हें कुछ चैन मिला। यह उनका रोज़ का काम है। लगातार प्रतिदिन वे तीन फोटो इन्लार्ज करते हैं, यह काम उनके लिए नशे जैसा हो गया है। रिवाल्वर में नये कारतूस भरकर उसे फिर अलमारी में रख दिया। फिर मेज़ के पास आकर दोनों हाथों पर सिर टेककर चुपचाप बैठे रहे। जो आंसू थोड़ी देर पहले टपक रहे थे, वे धीरे-धीरे सूख गए। उनका चेहरा फिर कठिन हो उठा। ईर्ष्या के उफान में उनका सारा मन उफनने लगा। क्रोध और क्षोभ से जैसे उनका सारा शरीर जलने लगा।

कालिंग बेल की घनघनाहट से वे एकाएक चौंक उठे। ज़रूर कोई आया है। नगेन या तुंगश्री। वीरादेवी यहां नहीं आएगी, क्योंकि उसे यहां का पता नहीं मालूम है। उसके लिए केशव ने एक अलग मकान किराये पर ले रखा है। घण्टी फिर से बज उठी। वे जल्दी से उतर गए और दरवाज़ा बन्द करना भी भूल गए। नीचे पहुंचने पर नगेन दिखाई पड़ा। नगेन ही मिल में हड़ताल करवाने के लिए गया था। मेघसुन्दर ने उसीको अपमानित करके निकाल दिया था।

"क्या हुआ ?" हंसते हुए केशव ने पूछा।

"अल्टीमेटम दे आया हूं। अगर हमारी मांगें पूरी न की गईं तो हड़ताल होकर रहेगी।"

"तुम खुद जाकर अल्टीमेटम दे आए हो, वाह ! शाबाश !"

"हां, मेघसुन्दर के हाथ में दे आया हूं।"

"क्या कहा उन्होंने ?"

"और क्या कहेंगे ? बौखला उठे और पागल कुत्ते की तरह मुझपर दौड़े।"

"तुम्हारे ऊपर ! वह कैसे ?"

"दरबान को बुलाकर मार-पीट करके भगा दिया।"

"दरबान को बुलाकर मार-पीट की ! क्या कहते हो ?"

"यह तो वे करेंगे ही। दरबान ही तो उनका एकमात्र सहारा है। तकिए की टेक लगाकर बैठे बाईजी का गाना सुन रहे थे, मेरे टपक पड़ने से रसभंग हो गया तो गुस्सा नहीं आता ?"

"बैठो-बैठो, इतनी हिम्मत ! दरबान बुलाकर निकाल दिया ?"

पुरानी याद एकाएक उनके मन में फिर से करक उठी। क्रोध से सारा चेहरा लाल पड़ गया।

नगेन एक कुर्सी पर बैठ गया और बोला, "इससे क्या होता है। अच्छे काम में भोगना तो पड़ता ही है, अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं फिर जाऊंगा। मुझे इन सबकी परवा नहीं है।"

कुछ हंसकर निर्भीक दृष्टि से उसने केशव की ओर देखा। वह कॉलेज का एक आदर्शवादी छात्र है। आदर्श के लिए वह अपनी जान भी दे सकता है। उसकी निश्छल आंखों में उत्साह की ज्योति झिलमिलाने लगी।

"तुम्हें फिर से जाना ही पड़ेगा। हड़ताल शुरू करवाकर आना। नहीं तो वह डरा-भरमाकर हड़ताल नहीं होने देगा।"

"ठीक है, फिर जाऊंगा। आज ही जाऊं क्या ?"

"अच्छा तो है, जाकर उन्हींके बीच रहो। तुम्हें कुछ रुपये दिए देता हूं, क्योंकि हड़ताल के समय उनके खाने-पीने का कुछ इन्तज़ाम करना ही पड़ेगा।"

"अच्छी बात है।"

"तुम्हें तुंगश्रीदेवी के बारे में कुछ मालूम है ?"

"उन्हें भी देखा था, महफिल में बैठी बाईजी का गाना सुन रही थीं।"

"बाईजी का गाना सुन रही थीं ?"

"मुझे तो यही दिखाई पड़ा।"

"मेघूबाबू की महफिल में बैठकर ?"

"हां। जब दरबान मुझे बेइज़्ज़त करके निकाल रहा था तो वे वहीं बैठी थीं। उन्होंने तो चूं तक नहीं किया।"

अनमने-से होकर केशवसामन्त ने दो बार अपनी मूंछों के छोरों को ऐंठा, फिर नगेन की ओर देखते हुए कहा, "तुम्हें तो वह पहचानती नहीं। शायद इसीलिए कुछ नहीं कहा।"

"वाह, मुझे न भी पहचाने, पर यह तो वे समझ रही थीं कि मज़दूरों के लिए ही मेरी वह गत हो रही है। वहां जितने लोग थे, सभीकी समझ में यह बात आ गई थी। वे एकबार कम से कम प्रतिवाद तो कर ही सकती थीं, पर कुछ भी नहीं किया।"

"उसका कारण क्या है, यह जब तक उनसे भेंट नहीं होती, तब तक समझना कठिन है। शायद कोई ऐसी बात रही हो कि उस समय अपने को प्रकट करना उनके लिए सम्भव न रहा हो।"

नगेन चुप हो गया, पर उसके चेहरे से साफ मालूम हो रहा था कि वह तुंगश्री के इस व्यवहार से बिलकुल खुश नहीं था। केशवसामन्त ने एक बार तिरछी नज़र से उसकी ओर देखा। अपने दल के बीच झगड़ा न हो इसके लिए वे सदा ही सजग रहते हैं। यह बात उन्हें मालूम है कि आपसी झगड़ा अन्ततः सब कुछ बिगाड़कर रख देता है। इस विषय में कुछ और कहे बिना ही उन्होंने अलमारी खोली और सौ-सौ के पांच नोट नगेन के हाथ में थमाकर बोले, "तुम अब रवाना हो जाओ। अगर मुझसे कोई सलाह लेनी हो तो चले आना। नहीं तो हड़ताल जितने दिन तक चालू रहे, तुम वहीं रह जाना। और रुपयों की ज़रूरत पड़े तो खबर भेजना। मैं रुपये भेजने का इन्तज़ाम करूंगा।"

नगेन यही चाहता था। इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी का काम मिलने पर वह कृतकृत्य हो गया। बड़े उत्साह से रुपये लेकर निकल गया।

केशवसामन्त चुपचाप खड़े रह गए। शंका, चिन्ता और अनिश्चयता के धुंधलके में वे थोड़ी देर के लिए जैसे खो गए। जल्दी ही कुछ करना है, क्योंकि उनके लिए किसी भी काम का सहारा न हो तो उनका जीना असम्भव हो जाता है। क्या फिर तीनों फोटो लेकर जुट जाएं ? फोटो अभी तैयार नहीं हैं। जिन्हें प्रिण्ट के लिए रख आए हैं, वे क्या इतनी

जल्दी तैयार हो गए होंगे ? ऊपर जानेवाली सीढ़ी की ओर जल्दी से आगे बढ़े, फिर कुछ याद आने पर एकाएक वहीं रुक गए। वीरा लौट आई या नहीं, इसका पता लगाना कैसा रहेगा ? टैक्सी पर जाने में देर ही कितनी लगेगी ? भौंह तानकर दाहिनी ओर की मूंछ के छोर को दो बार ऐंठ लिया। इस बीच अगर तुंगश्री आ पहुंचे तो ? आकर अपने भाई को यहां न पाकर शायद वह फिर बाहर चली जाए। उसकी अनुपस्थिति में उसके भाई को उन्होंने एक स्थानीय अस्पताल में भेज दिया है। वैसे तपेदिक के रोगी को घर पर रखना ठीक नहीं है। इसके कारण तुंगश्री में जो मानसिक विपर्यय होने की सम्भावना है, उसे संभालने के लिए उनका खुद मौजूद रहना ज़रूरी था। इसके अलावा और किसीके पहले वे खुद तुंगश्री की ज़बान से वहां की सारी घटनाएं सुनना चाहते हैं। वे शायद यहां किसीको न पाकर अपनी पार्टी के किसी सदस्य के घर चली जाएं। केशव की भौंहें सिकुड़ गईं। पार्टी का खर्च तो वे खुद उठाते हैं, पर उसके लड़के उन्हें वैसे पसन्द नहीं हैं। तुंगश्री को अपनी मुट्ठी में रखने के लिए ही उन्हें चार-पांच लफंगों का खर्च देना पड़ता है, नगेन की पार्टी के लड़के इन लोगों से कहीं अच्छे हैं। उन्होंने घर पर रहना ही निश्चित किया। पर किया क्या जाए, चुपचाप बैठे रहना पड़ेगा। यह तो असम्भव है। ग्रामोफोन में दो-चार रिकार्ड ही बजाए जाएं, पाश्चात्य नृत्य के कई रिकार्ड उनके पास हैं। उद्दम नृत्य के साथ उद्दाम बाजोंवाला एक रिकार्ड उन्होंने लगा दिया, इसके साथ वे हमेशा एक और चीज़ भी करते हैं, एक प्राइमस स्टोव भी साथ जला लेते हैं। स्टोव की हरहराहट के साथ जाज़ और कैकोफोन के कर्कश संगीत से जिस वातावरण की सृष्टि होती है, उससे केशवसामन्त को एक अजीब आनन्द मिलता है। रिकार्ड लगाकर उन्होंने स्टोव जला लिया, फिर सारे कमरे में चहलकदमी करने लने। एक रिकार्ड खत्म हो गया तो दूसरा लगाया. तीसरा लगाया। थोड़ी देर बाद इससे भी जी उचट गया। लेकर बैठ गए। जासूसी कहानी और अपराधियों के जीवन-चरित्र

वे और कुछ भी नहीं पढ़ते । फ्रांस के कुख्यात खूनी लैण्ड्रू के जीवन की कहानी से ही उन्हें पहले-पहल नारी चरित्र की चिरन्तन दुर्बलता का आभास मिला था । लैण्ड्रू समझ गया था कि विवाह के प्रलोभन से उस देश के निम्न-मध्यवर्ग की लड़कियों को बहुत आसानी से मुट्ठी में लाया जा सकता है । केशवसामन्त ने भी ठीक उसी जैसे कौशल के सहारे तुंगश्री और वीरा को अपनी ओर आकर्षित किया है । उन्होंने ठीक विवाह का प्रलोभन तो नहीं दिया, पर हाव-भाव से विवाह की सम्भावनाएं प्रकट कर दी हैं। इसीसे काम भी बन गया। तुंगश्री और वीरा जैसी लड़कियां उनके काम के लिए अपरिहार्य हैं। वे शक्ति की जाति की हैं, उनमें ओज-स्विता है, वे चाहें तो आग लगा सकती हैं।

हिरण्यगर्भ और मेघसुन्दर के असामियों को वे ही भड़का सकेंगी। साम्यवाद के प्रति उनकी प्रगाढ़ निष्ठा है, अपने आदर्श के लिए वे किसी भी विपत्ति का सामना करने को तैयार हैं। उनकी एकमात्र दुर्बलता यही है कि वे पुरुषों की दृष्टि आकर्षित करना चाहती हैं, उनकी श्रद्धा प्राप्त करना चाहती हैं और शायद उनके हृदय भी आकर्षित करना चाहती हैं। उनकी इसी कमज़ोरी के छिद्र से केशवसामन्त का प्रवेश हुआ है।...

वे एकाग्र होकर आस्ट्रिया के युवराज रूडाल्फ की दारुण प्रणय-कथा फिर से पढ़ने लगे। कई बार पढ़ चुके हैं, पर फिर से पढ़ने लगे। यह कहानी उन्हें बहुत पसन्द है। उस अभागे राजकुमार के वासना-तप्त क्षुब्ध जीवन के साथ उनके अपने जीवन का स्तर कहीं एक-सा है। रूडाल्फ भी ज़िन्दगी में सुखी नहीं था। राज-परिवार की जिस लड़की से उसने बाध्य होकर शादी की थी, वह उसे बिलकुल नहीं पसन्द थी। पढ़ते समय उनको अपनी कुष्ठरोगिणी पत्नी याद आई। यद्यपि उनके विवाह के कारणों के साथ रूडाल्फ के विवाह के कारणों में कोई भी मेल नहीं था, फिर भी रोष और क्षोभ, घृणा और द्वेष से केशवसामन्त का मन भर उठा। हिरण्यगर्भ के प्रति उनका मन फिर नये सिरे से विरक्त हो उठा। उन्होंने ही षड्यन्त्र रचकर उनको बरबाद किया। रूडाल्फ ने अपनी प्रेमिका

मेरी वेटसेरा को लेकर स्वेच्छा से मृत्यु का आलिंगन किया था, क्या वे भी ऐसा कर सकेंगे ? अवश्य ही कर सकते हैं। शिखरिणी आ जाए तो ज़रूर कर सकते हैं। एकाएक उत्तेजित होकर केशवसामन्त खड़े हो गए। शिखरिणी को आने के लिए लिखा जाए तो क्या वह नहीं आएगी ? अगर यह लिखा जाए कि उनका जीवन संकट में पड़ा है, वे मृत्यु के समय उसे केवल एकबार के लिए देखना चाहते हैं ? उन्हें मालूम है कि शिखरिणी उनको प्यार करती है। शायद वह आएगी, शायद सभी बाधाओं को तुच्छ करके वह चली जाएगी। हर्ज ही क्या है एक चिट्ठी लिखने में ? हो सकता है, चिट्ठी उसे न मिले, मन्मथ या मेघसुन्दर के हाथ में पड़ जाए। शायद वे उसे चिट्ठी दें ही नहीं—उसे फाड़कर रद्दी की टोकरी में फेंक दें। इन सारी सम्भावनाओं को वे समझते हैं। पर अगर उसे मिल गई तो ? मिल भी तो सकती है। शिखरिणी के अलावा और किसीके हाथ अगर चिट्ठी पड़ गई तो इसमें किसी नई विपत्ति की सम्भावना तो है नहीं, क्योंकि शिखरिणी के प्रति उनकी भावना की जानकारी सबको है। शिखरिणी पर कोई आफत आ सकती है ? भौंहें सिकोड़कर वे थोड़ी देर सोचते रहे। चिट्ठी इस ढंग से लिखी जा सकती है, जिससे यह स्पष्ट हो जाए कि शिखरिणी का कोई भी दोष नहीं है। उत्तेजित केशवसामन्त ने कागज़ और कलम उठा लिया। लिखने लगे—

"शिखरिणी,

आज तक तुम्हारा कोई समाचार नहीं मिला, तुम शायद मुझे भूल गई हो, पर मैं तुम्हें नहीं भूला हूं। आज मैं मृत्यु-शय्या पर हूं। इस दुनिया से विदा लेने के पहले एक बार तुम्हें देखना चाहता हूं। जल्दी आओ। —केशव"

चिट्ठी लिफाफे में डालकर उन्होंने घण्टी दबाई तो नौकर आ खड़ा हुआ।

"तुंगश्री अभी तक नहीं लौटीं ?"

"नहीं बाबूजी।"

"यह चिट्ठी······अच्छा रहने दो, मैं ही जा रहा हूं। तुंगश्री के आने

पर उन्हें यहीं रुकने को बोलना, मैं अभी आ रहा हूं।"

नौकर के हाथ चिट्ठी डलवाने का भरोसा उन्हें नहीं हुआ। खुद ही तेज़ कदमों से नीचे उतरे, एक बार सोचा कि रजिस्ट्री कर दें, फिर तुरन्त मन में आया कि रजिस्ट्री चिट्ठी ज़रूर मेघसुन्दर या मन्मथ के हाथ आएगी, ऐसे ही भेज दें। थोड़ी दूर जाने पर रास्ते के मोड़ पर एक पोस्ट-बॉक्स दिखाई पड़ा, ठिठककर सामने खड़े हो गए, फिर तय किया इसे पोस्ट-ऑफिस में ही डालेंगे, एकदम बड़े पोस्ट-ऑफिस में।

"ऐ, टैक्सी !"

भागती हुई टैक्सी रुक गई। केशवसामन्त चढ़ गए, "चलो, जनरल पोस्ट-ऑफिस।"

टैक्सी चल पड़ी। केशवसामन्त के मन में सिर्फ यही बात आ रही थी, अगर उसे चिट्ठी मिल गई, अगर वह आ गई ! उन्चासों पवन की हर लहर में उनका मन तैरने लगा। बाहर से एक झोंका आया, और रास्ते के तिनके और कागज़ के टुकड़े उड़कर आने लगे।

तुंगश्री ने आकर देखा नीचे कोई नहीं था। केशवसामन्त ने नीचे का जो कमरा उन्हें रहने के लिए दिया था, उसके दरवाज़े पर ताला बन्द था। क्षण-भर के लिए तुंगश्री का हृदय कांप उठा। केशवबाबू को सारी बातें मालूम हो गईं क्या ? मुन्ने को क्या उन्होंने घर से निकाल दिया ? कमरे का ताला क्यों बन्द है। मुन्ना तो कभी बाहर नहीं जाता, बाहर जाने की ताकत ही उसमें नहीं है। स्तम्भित होकर वे कुछ देर खड़ी रह गईं। ऊपर जाकर केशवसामन्त का पता लगाने की सोच ही रही थीं कि नौकर आ पहुंचा। वह बगल की गली में बीड़ी लेने गया था। कुली उनका सामान उतारकर पैसे लेकर चला गया।

"दीदी, आप आ गईं ? आपको बाबूजी ऊपर के कमरे में इन्तज़ार करने को कह गए हैं। वे कुछ देर के लिए बाहर गए हैं। अपना सामान यहीं छोड़ दीजिए, मैं यहीं पर हूं।"

"मुन्ना कहां है ?"

"कल बाबूजी ने उसे अस्पताल भेज दिया।"

"अस्पताल ? किस अस्पताल में ?"

"यह तो मैं नहीं जानता। बुखार तेज़ था, इसीलिए बाबूजी ने अस्पताल भेज दिया।"

"ओ !" थोड़ी देर खड़ी रहने के बाद तुंगश्री ऊपर चली गईं।

ऊपर पहुंचने पर उन्हें सामने की मेज़ पर लेटर-पैड दिखाई पड़ा। उसे उठाकर उन्होंने एक बार देखा। उसी दिन का अखबार पास ही रखा था, उसे भी एक बार उलट-पलट कर देखा। एकाएक हवा का एक झोंका अन्दर आ गया। ऊपर के कमरे का खुला दरवाज़ा धड़ाक से बन्द हो गया, फिर खुला और बन्द हो गया। तुंगश्री ने बाहर आकर तिमंज़ले की सीढ़ी की ओर देखा। तिमंज़ले का कमरा खुला था, कुछ गन्ध-सी आई, उनकी भौंहें सिकुड़ गई। बारूद की बू यहां कैसे आई ? सीढ़ी पार करके वे तिमंज़ले पर पहुंची। कमरे में पहुंचकर वे अवाक् रह गईं। कमरे में चारों ओर रिवाल्वर के खाली कारतूस बिखरे पड़े थे। शिखरिणी की तस्वीर दीवार पर टंगी थी, माथे पर लाल बिन्दी। पहले वही नज़र आई, पर दूसरे ही क्षण हिरण्यगर्भ और मेघसुन्दर के गोली से छिदे हुए दोनों फोटो दिखाई पड़े। वे निस्पन्द-सी कई क्षण खड़ी रह गईं, फिर मुड़कर कमरे की ओर देखने लगीं। सारी बातें शीशे की तरह सामने आ गईं। बिना किसी संशय के वे समझ गई कि हिरण्यगर्भ ने केशवसामन्त के बारे में जो कुछ कहा है वह अक्षरशः सत्य है। यह बात समझ में आते ही जैसे उनके पांव तले से ज़मीन खिसक गई। वे एकाएक अपने को बिलकुल असहाय और सम्बलहीन पाने लगीं।

इसके बाद तो यहां रहना सम्भव नहीं है, पर जाएं भी तो कहां ? कलकत्ता की इस विशाल महानगरी में कौन उन्हें आश्रय देगा ? धीरे-धीरे वे नीचे उतर आईं। एक बार मन हुआ कि सीधे यहां से निकलकर चली जाएं, केशवसामन्त से सारा नाता यहीं समाप्त हो जाए, पर जाएं कहां ?

फिर यही बात मन में आई। नहीं, फिलहाल उन्हें जाने के लिए कोई जगह नहीं है। जिस देश के लिए उन्होंने अपना जीवन तक लगा दिया, उस देश में कोई भी ऐसा नहीं है जो उनका असली परिचय पाकर उन्हें आश्रय दे सके। क्या देश देश-प्रेम का कुछ भी मूल्य देता है? जिन बहादुरों ने अपना प्राण विसर्जित करके देश के लिए स्वतन्त्रता अर्जित की, उनमें से सबके नाम भी आज देश के लोगों को याद नहीं हैं। उनके आदर्श से कोई भी अनुप्रेरित नहीं हुआ। हां, अनुप्रेरित हुए हैं केवल कुछ चालाक व्यापारी, जो उनकी तस्वीरों और जीवनी की पुस्तकों की दूकान लगाकर रुपये बटोरते हैं। देश-प्रेम के आदर्श को केशवसामन्त जैसे लोगों ने अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए अपना रखा है।

नीचे उतरकर वे एक कुर्सी पर थकी-सी बैठ गईं, पर दूसरे क्षण ही फिर सीधी होकर बैठ रहीं। नहीं, ठग के साथ शराफत दिखाना बेकार है। जब तक अपने लिए एक निरापद आश्रय नहीं खोज लेतीं तब तक उन्हें अपने मनोभावों को छिपाकर यहीं रहना होगा। सबसे पहले तो मुन्ने को सैनेटोरियम भेजने का इन्तज़ाम करना है। उनके दूर के रिश्ते के एक चाचा यहां पर हैं—माधवकाका। अगर वे मुन्ने को वहां पहुंचाने के लिए राज़ी हो जाएं तो अच्छा रहेगा, क्योंकि वे कुछ दिन मद्रास में रह चुके हैं। उस इलाके से परिचित हैं। तुंगश्री ने खुद ही जाने का निश्चय किया था, पर अब उन्हें कोई नया आश्रय खोजना ही पड़ेगा। फिर जिस खेल में वे शामिल हो गई हैं, वही उन्हें इस कलकत्ता शहर में चुम्बक की तरह खींचकर रखना चाहता है। बहुत ही अप्रत्याशित रूप से एक उपन्यास के कौतहलपूर्ण परिच्छेद में जैसे वे अटक-सी गई हों।

सीढ़ी पर आहट सुनाई पड़ी। तुंगश्री सीधी बैठ गईं। केशवसामन्त भीतर आए।

"ओह, आप लौट आईं? कैसा रहा? आपके लिए मैं बहुत चिन्तित था।"

"कुछ भी नहीं बना।"

"नहीं बना, मतलब ?

"पकड़ी गईं।"

"वह कैसे ?"

"नक्शा लेकर लौट रही थी तो स्टेशन पर हिरण्यबाबू आ गए, उन्होंने आकर सीधे कह दिया, माफ कीजिए, आपके सामान की तलाशी लिए बिना आपको जाने नहीं दिया जाएगा, अगर आपने बाधा की तो पुलिस बुलाऊंगा।"

"फिर ?"

"बातों-बातों में ट्रेन छूट गई। जब मैं समझ गई कि रात यही रहना है तो उनसे झगड़ा करने पर कोई फायदा नहीं होता, यह सोचकर मैं उनके साथ उनकी गाड़ी में ही लौट गई।"

"उसने आपके सामान की तलाशी ली ?"

"मैंने खुद ही उसे निकाल कर दे दिया। घटना को सहज बनाने के लिए मैंने हंसकर उनसे कह दिया, आपने डाइनामाइट से उड़ाने की जो बात सुनी, वह गलत है। आपकी मिल के नक्शे को देखकर केशवबाबू भी एक मिल बनवानेवाले हैं, इसीलिए मुझे नक्शा लेने के लिए उन्होंने भेजा है।"

"डाइनामाइटवाली बात भी उसे मालूम हो गई थी क्या ?"

"सारी बातें मालूम हो गई हैं, हमारी पार्टी में गुप्तचर कौन है ?"

भौंहें सिकोड़कर केशवसामन्त कुछ देर स्तब्ध रह गए ?

"आपकी इस मनगढ़न्त कहानी पर उसने यकीन किया ?"

"शायद यकीन नहीं किया, पर इस सम्बन्ध में और कोई आलोचना उन्होंने नहीं की। आदमी कुछ चुप्पा-सा लगा। मेरे साथ उनकी और कोई खास बातचीत नहीं हुई, पर कोई अभद्रता का व्यवहार भी नहीं हुआ।"

"सुना, आप कल मेघूबाबू की महफिल में बैठकर बाईजी का गाना सुन रही थीं।"

"सुन लिया आपने ?" बहुत सहज ढंग से हंसकर तुंगश्री बोलीं,

"किसने बताया आपको ?"

"नगेन ने। कल वह मेघूबाबू के पास एक अल्टीमेटम लेकर गया था न !"

"हां हां, उस समय मैं वहीं पर थी। हिरण्यबाबू मुझे आमन्त्रित करके वहां ले गए। क्या करती भला, आप ही बताइए। मुगल के कब्ज़े में पड़ गए तो उसका खाना भी थोड़ा-बहुत खाना ही पड़ा। मुन्ना को अस्पताल भिजवा दिया है ?"

"फिलहाल तो एक नर्सिगहोम में भेजा है। मेरी जान-पहचान के डाक्टर का नर्सिगहोम है। वहां पर अच्छा रहेगा।"

"पता क्या है ? ज़रा उसे देख आऊं।"

"यह है पता। लिखा हुआ कार्ड ही है।"

दराज़ खोलकर उन्होंने कार्ड थमा दिया।

"मेरे कमरे की चाभी दीजिए, सारा सामान बाहर पड़ा है।"

चाभी लेकर तुंगश्री ने कहा, "मैं ज़रा मुन्ने को देख आऊं, लौटने में शायद कुछ रात हो जाए। आप मेरे लिए बैठे मत रहिएगा।" हंसकर तुंगश्री चली गईं।

केशवसामन्त गुमसुम खड़े रह गए। मेघसुन्दर ने नगेन को मारकर भगा दिया और तुंगश्री से मिलकर नक्शा हिरण्यगर्भ ने छीन लिया। अपनी मूंछों के नुकीले छोरों को ऐंठते हुए वे सोचने लगे कि अब क्या किया जाए। उन्होंने वीरा का पता लगाने का निश्चय किया। बांध के विषय में क्या हुआ, इस बारे में पता लगाना है। घण्टी दबाई। नौकर के आते ही बोले, "जल्दी से चाय लाओ, मुझे तुरन्त बाहर जाना है।"

नौकर चाय लाने के लिए चला गया। केशवसामन्त ने एक और पाश्चात्य वाद्यवृन्द का रिकार्ड लगा दिया।

डाक्टर सेन गुप्त ने, जिनके नर्सिगहोम में केशवबाबू ने मुन्ने को भेजा था, तुंगश्री के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया। गोलमटोल कुछ स्थूल-काय गोरे-से व्यक्ति ने हंस-हंसकर बहुत देर तक बातचीत की। उन्हें अपने

सब मरीज़ों के पास ले भी गए। मुन्ने के पास भी ले गए। दीदी को देखकर मुन्ना खुश हो गया। उसके शीर्ण चेहरे पर उज्ज्वल आंखें और भी उजली हो गईं। इतनी संख्या में तपेदिक मरीज़ों को देखकर तुंगश्री कुछ विषण्ण-चित्त हो गई थीं। जब डाक्टर सेन गुप्त ने कहा कि हर साल करोड़ों लोग इसी बीमारी के शिकार हो रहे हैं तो वह और भी विषण्ण हो उठीं। तो फिर देश की स्वाधीनता का उपयोग करने के लिए कौन रह जाएगा। उन्हें अब ऐसा लगा कि डाक्टर ही देश के वास्तविक सेवक हैं। हिरण्यगर्भ भी उन्हें याद आए।

"आपसे एक अप्रासंगिक प्रश्न कर रही हूं, डाक्टर सेन गुप्त ! अगर कोई टाइफायड कल्चर खा ले तो उसे क्या होगा ?"

प्रश्न सुनकर डाक्टरसाहब अवाक्-से रह गए, "टाइफायड कल्चर खा ले ! क्यों भला ?"

"अगर कोई खाले तो क्या होगा ?"

"उसे टाइफायड हो जाने की काफी सम्भावना है।"

"टाइफायड तो बड़ा खतरनाक रोग है, है न ?"

"बेहद खतरनाक है, इसमें कहने की क्या बात है।"

तुंगश्री चुप रह गईं। डाक्टरसाहब भी चुप हो गए।

"मेरे भाई को तो सैनेटोरियम भेजना ही ठीक रहेगा।"

"ज़रूर।"

"अच्छा, देखिए तो, यह कैसा सैनेटोरियम है।"

उन्होंने हिरण्यगर्भ की चिट्ठी निकालकर दिखाई।

"यह तो बहुत अच्छी जगह है। अगर यहां फ्री सीट मिल जाए तो किस्मत की बात है। ये लोग क्या वहां के डोनर हैं ?"

"हां।"

"तो जितनी जल्दी हो, इसे वहीं ले जाइए।"

"ठीक है, तो मैं इसका इन्तज़ाम कर लूं।"

अस्पताल से निकलकर तुंगश्री माधवकाका के पास चल पड़ीं।

वीरादेवी कुछ सशक्त प्रकृति की महिला हैं। रंग गोरा है, पर देखने से संथालिन जैसी लगती हैं। शरीर की गठन खूब कसी हुई, होंठ काफी मोटे, भौंहें भी चौड़ी, दृष्टि निर्भीक ही नहीं उद्धत भी है। वे अभी थोड़ी देर पहले ही लौटी थीं। सीधी टैक्सी में गई थीं और टैक्सी में ही लौटीं। ट्रेन से जाने को राज़ी नहीं हुई थीं। उनका कहना है कि ट्रेन में बेकार अधिक समय नष्ट होता है। कहना न होगा कि उनका सारा खर्च केशवसामन्त के सिर पर ही है। अछूतों और दलित वर्गों के उद्धार के लिए इस छोटे-से मकान को केशवसामन्त ने किराये पर लेकर वीरादेवी को दिया था। उस मकान में वीरादेवी और उनका एक भाई रहता है। भाई कॉलेज में पढ़ता है। बाहर का छोटा-सा कमरा दफ्तर का काम भी देता है। दफ्तर के जिस चपरासी को केशवसामन्त ने नियुक्त किया है, वही वीरादेवी के घर का काम-काज भी करता है। जब केशवबाबू टैक्सी से उतरे तो चपरासी बाहर के कमरे में बैठा भजन गा रहा था। केशवबाबू को देखकर वह भजन छोड़कर उठ खड़ा हुआ।

"माईजी वापस आ गईं?"

"जी हां, थोड़ी देर पहले ही आई हैं।"

"उन्हें खबर दो।"

चपरासी कुछ हिचकिचाने लगा, फिर बोला, "माईजी का हुक्म है कि जब छोटे भैयाजी घर पर न हों तो वे किसी बाहरी आदमी से भेंट नहीं करेंगी।"

केशव ने घुड़ककर कहा, "तुम जाओ, बोलो केशवबाबू आए हैं। बेकार बकवास मत करो।"

घुड़की खाकर नौकर चला गया। केशवबाबू बाहरवाले कमरे में कुर्सी पर जा बैठे। उन्हें काफी देर तक इन्तजार करना पड़ा। करीब बीस मिनट बाद वीरादेवी आईं।

"आपने बेकार शिवू को क्यों डांट दिया? बेचारा ब्राह्मण रो रहा है। सचमुच मैं नहीं चाहती कि निखिल की गैर-हाज़िरी में कोई बाहरी

आदमी यहां आए।"

वीरादेवी ने जान-बूझकर ज़्यादा तनख्वाह देकर एक ब्राह्मण को नौकर रखा है। उससे वह जूता तक साफ करवाती हैं। जिसे कुसंस्कार ने युगों से उनके मां-बाबा तथा पुरखों को अछूत बना रखा था, उसीका यह सफल प्रतिवाद है, जिसे देखकर वे प्रतिक्षण तृप्त होती हैं। पर इससे यह नहीं समझना चाहिए कि वे शिवू के प्रति निर्दय हैं, बल्कि वे उसपर कुछ अधिक मात्रा में कृपालु ही हैं। तंगी के मारे अधिक वेतन का लालच पाकर उन अछूतों की सेवा करना पड़ रही है, शायद इसीसे शिवू का मन कुछ ज़्यादा स्पर्श करता है। ज़रा-सा कुछ कह दो तो आंखों से आंसू टपकाने लगता है। उसकी आंखों में आंसू देखकर वीरादेवी कुछ विचलित हो गई थीं और कुछ नाराज़ होकर ही बाहर आई थीं।

"मेरा आना भी आपको पसन्द नहीं!" केशवबाबू कुछ विस्मित होकर बोले।

"नहीं।" दृढ़ स्वर से वीरादेवी ने जवाब दिया।

केशवसामन्त अवाक् रह गए। इसके जवाब में क्या कहें, यह उनकी समझ में नहीं आया। कोई युवती यदि अकेले किसीसे भेंट करने की अनिच्छुक हो तो कहा ही क्या जा सकता है? गुस्से को पी जाना ही ऐसी हालत में आत्मसम्मान की रक्षा का एकमात्र उपाय है, पर उनके चेहरे से यह स्पष्ट हुए बिना न रहा।

कुछ कड़वी हंसी हंसते हुए मूछों को एक बार ऐंठकर केशव ने कहा, "बांध के बारे में क्या हुआ? इसीका पता लेने मैं यहां आया। ऐसे समय आपसे एकान्त में भेंट करने का कोई और उद्देश्य नहीं था।"

अपने वाक्य का आखिरी हिस्सा अगर उन्होंने न कहा होता तो ठीक रहता, क्योंकि तब शायद वीरादेवी के मुंह से भी ये अरुचिकर वाक्य न निकलते।

"बांध काटने से मछुओं को जो फायदा होता, उससे बहुत ज़्यादा फायदेमन्द इन्तज़ाम हिरण्यबाबू ने उनके लिए कर दिया, इसीसे बांध नहीं

काटा गया ।"

जैसे किसीने कोई तपती हुई सलाख केशवसामन्त के ब्रह्मरन्ध्र में धंसा दी हो।

"हिरण्यबाबू ने मछुओं के लिए कौन-सा ज़्यादा फायदेमन्द बंदोबस्त किया है, इसका पता लगाने के लिए तो मैंने इतना खर्च करके आपको नहीं भेजा था। भेजा था मछुओं से बांध कटवाने के लिए। उसका आपने क्या किया, मैं यही जानना चाहता हूं।"

वीरादेवी ज़रा मुस्कराकर बोलीं, "एक बात याद रखिएगा। केशव-बाबू कि मैं आपकी नौकर नहीं हूं। अछूतों की सेवा करना ही मेरे जीवन का व्रत है। आपका भी यही उद्देश्य है, इसीलिए आपके साथ मेरा नाता है। आप अर्थ से सहायता करते हैं, मैं सामर्थ्य से। हम दोनों सहकर्मी हैं, हमारा सम्बन्ध मालिक और नौकर का नहीं है। मैं बांध कटाने का सारा इन्तज़ाम करके महिमगंज हरिजनों की सभा में भाषण देने के लिए चली गई थी। लौटकर जो सुना, उससे मुझे कुछ अजीब-सा लगा।"

वीरादेवी के बोलने के ढंग से केशवसामन्त के सारे बदन में लपटें-सी उठने लगीं, फिर भी उन्होंने अपने को संभालकर पूछा, "क्या सुना आपने?"

"सुना कि हिरण्यबाबू के हाथी पर चढ़कर ठीक मेरे जैसे कपड़े पहने हुए किसी लड़की ने भैरवपुर के मैदान में आकर मछुओं को वापस जाने के लिए कहा था, जब कि वे बांध काटने ही जा रहे थे।"

"आपके जैसे कपड़े पहने कोई लड़की! हाथी पर! फिर क्या हुआ?"

"मैंने वापस आकर यह सब सुना। सुनकर फिर लोगों को लेकर बांध काटने का इन्तज़ाम कर रही थी, उसी समय एक आदमी हिरण्यगर्भ की चिट्ठी लिए आ पहुंचा। यह लीजिए चिट्ठी।"

वीरादेवी ने जाकर चिट्ठी ला दी। केशवसामन्त सांस रोककर उसे पढ़ने लगे।

"सुश्री वीरादेवी,

हमारा नमस्कार स्वीकार करें। गरीब मछुओं की भलाई के लिए आपने इतना कष्ट उठाया है और अपने जीवन को तुच्छ करके इतनी दूर आई हैं, इसके लिए धन्यवाद। मछुओं की मांग उचित है, यह मैं भी स्वीकार करता हूं, पर बांध काटने में एक असुविधा है। उसके कट जाने पर बहुत-से किसानों की फसल डूब जाएगी, फिर बहुत-से गरीब आदमियों पर मुसीबत आ टूटेगी। उस अभय संकट से मुक्त होने के लिए मैंने एक युक्ति सोच ली है। मेरी अपनी ज़मींदारी में मछपोखरा नाम का जो बड़ा-सा तालाब है, उसे मैं इन मछुओं का नुकसान पूरा करने के लिए इस साल बन्दोबस्ती करने को तैयार हूं। वे केशवबाबू को जो सलामी देते थे, मैं भी उतनी ही सलामी में खुश रहूंगा। इस साल की सलामी अगर वे केशवबाबू को दे चुके हों, तो इसपर भी मुझे एतराज़ नहीं है। वे मेरे पोखरे में इस साल बिना सलामी दिए ही मछली मार सकते हैं। यह दंगा वगैरह के फल-स्वरूप होनेवाली अशान्ति से बचने की कीमत है। आशा है, मेरा यह प्रस्ताव आपको मंजूर होगा। आज सवेरे भैरवपुर मैदान में क्रुद्ध मछुओं को रोकने के लिए जो थोड़ा-सा छल करना पड़ा, उसके लिए मैं आपसे माफी मांग रहा हूं। आपकी अनुपस्थिति में दंगा रोकने का और कोई उपाय मुझे दिखाई ही नहीं पड़ रहा था। उम्मीद है कि आप बुरा नहीं मानेंगी। आपके साथ परिचित होने के लिए मैं उत्सुक हूं। देश स्वतन्त्र हो गया है, अब इसका निर्माण करना है। आप जैसे कर्मठ लोगों की ही ज़रूरत है। पर हमारे देश की कर्मधारा कुछ विशेषता रखती है। प्राच्य की वाणी आलोक की वाणी है, आशा की वाणी है; प्रेम, विश्वास और समानता यही हमारा पाथेय है, झगड़ा, दंगा हिंसा या ईर्ष्या-द्वेष नहीं। यदि कभी आपसे परिचय का सौभाग्य मिला तो इस सम्बन्ध में चर्चा होगी। तब तक के लिए विदा। वन्दे।

भवदीय,

हिरण्यगर्भ वर्मन"

"इन महान सज्जन से परिचय कर आई हैं क्या?"

"नहीं, समय नहीं मिला। यहां कल सवेरे ही हमारी एक मीटिंग है। पर आदमी सचमुच महान प्रतीत होता है। आपकी जमींदारी में भी देखा, सब उनकी इज़्ज़त करते हैं।"

"हां, सो तो करते हैं। आदमी अच्छा है। अच्छा, तो मैं अब चला।"

केशवसामन्त उठ खड़े हुए। उनके लिए और बैठना असम्भव-सा हो गया। ज़िन्दगी-भर हरेक कदम पर जिस आदमी के सामने हार माननी पड़ी, उसीके हाथ फिर नये सिरे से मार खाकर उनके खून में उबाल आ गया था। उनका चेहरा पीला पड़ गया था, फिर भी जाते समय उन्हें दिखावटी हंसी हंसनी ही पड़ी और कहना ही पड़ा, "दंगा-फसाद नहीं हुआ यह तो एक तरह से अच्छा ही हुआ, लड़ाई बिना ही काम बन जाए तो दंगे-फसाद की ज़रूरत ही क्या है?"

"यह तो है ही।"

"अच्छा, नमस्ते।"

"नमस्ते।"

केशवसामन्त चले गए।

८

हीराबाई राग मल्हार का जो नया गीत विनू को सिखा गई थीं, मेघसुन्दर के पास बैठी विनू उसे गा रही थी। मेघसुन्दर के घुटने का दर्द काफी घट गया था। बांध के सिलसिले में बेकार के दंगे-फसाद से बच गए थे, इसलिए मन में भी प्रसन्नता थी। हिरण्यगर्भ की अक्ल की उन्होंने काफी तारीफ की। मन में यह संकल्प करीब-करीब कर ही लिया कि हिरण्यगर्भ को ही अपना उत्तराधिकारी बनाएंगे। उन्हें वंचित करने की जो इच्छा बीच-बीच में उनके मन में उठती है, फिलहाल वह दब गई है। उनकी मिल में हड़ताल शुरू हो गई है। उन्होंने मन्मथ के साथ हिरण्य-

गर्भ को ही वहां भेजा है। उम्मीद है कि वहां पर भी वह समझौता कर लेगा। आसमान पर बादल घिर आए हैं, नम हवा में कदम्ब की खुशबू तैर रही है, उनके बूढ़े तबलची तमीज़मियां बहुत अच्छा तबला बजा रहे हैं। गाना खूब जम गया हैं। विनू एकाध दिन डरी-डरी-सी थी, पर तुंगश्री के जाने पर भी जब कोई हल्ला नहीं हुआ तो वह समझ गई कि उस भद्र महिला ने वचन निभाया और इसी सूत्र के सहारे धीरे-धीरे उसके मन में गुप्त रूप से जो आशा जागरित हो रही थी, उसीका माधुर्य उसके सारे चित्त को मादकता से भर रहा था। वह सोच रही थी, जब वे वादा कर गई हैं तो शायद उनके लिए यह काम असम्भव नहीं होगा। जितना ही वह इसपर सोचती, उसकी कल्पना पर उतना ही गहरा रंग चढ़ता जा रहा था। सारे हृदय को उंडेलकर वह गा रही थी—

निसि दिन बरसन लागे,
उमड़ि घुमड़ि घन आए।
दादुर घोर घन गरजे,
दामिनी चमकत डर लागे।

जब गीत खूब जम गया था और मेघसुन्दर का मन अपार आनन्द से स्वरलोक में पंख फैलाकर तैरने लगा था। जब वे धरती के सारे बन्धनों की मलिनता से अपने को छुड़ाकर मुक्ति के आनन्द में मग्न हो रहे थे, तभी एकाएक हिरण्यगर्भ के भीतर आ जाने से रसभंग हो गया।

"क्या हुआ ?" कुछ विरक्त स्वर में मेघसुन्दर ने प्रश्न किया।

"समझौता कर लिया। उन लोगों की मांगें फिलहाल मान ली गईं।"

"मान लीं ? तब तो मुझे अब कुछ राहत दिलाओगे।"

"नहीं, उतना तो नहीं होगा, पर मुनाफा कुछ घट जाएगा। आजकल तो हर चीज़ ही महंगी है। पहले के मुकाबले में कीमतें तिगुनी हो गई हैं। अगर उनकी मज़दूरी न बढ़ाएं तो वे बचेंगे कैसे ?"

"मैं तो व्यापार कर रहा हूं, कोई दानसत्र तो नहीं खोला है।"

मन्मथ भी हिरण्यगर्भ के पीछे-पीछे अन्दर आए थे। उन्होंने भी तिरछी

नज़र से एक बार हिरण्यगर्भ की ओर देख लिया ; जैसे कह रहे हों, मैंने तभी कहा था कि वे नाराज़ हो जाएंगे।

हिरण्यगर्भ ने मुस्कराकर जवाब दिया, "दानसत्र खोलने पर तो मुनाफे का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। इसमें भी आपको मुनाफा रहेगा ; हां, कुछ कम रहेगा।"

"तिगुनी मज़दूरी देने पर भी मुनाफा होगा ?"

"तिगुनी से घटा कर मैंने दुगुनी कर दी है, और एक शर्त भी लगा दी है। तो फिर पूरी बात सुन लीजिए..."

स्थिति कुछ गड़बड़ देखकर विनू उठकर भीतर चली गई। विनू को जाते देखकर मेघसुन्दर ने तबलची तमीज़मियां से कहा, "तुम भी अब जाओ, अब यह जमनेवाला नहीं है। फंस गया हूं।"

हिरण्यगर्भ ने कहा, "उनसे मैंने कह दिया है कि तुम्हीं लोग मिल को चलाओ। उसका हिसाब-किताब तुम्हीं लोग करोगे। एक साल हम तुम्हारी मांग के अनुसार दुगुनी मज़दूरी दे रहे हैं, पर अगले साल से यानी जबसे मिल की ज़िम्मेदारी तुम लोग अपने ऊपर ले लोगे तब से तुम लोगों की मज़दूरी की ज़िम्मेदारी हम लोगों पर नहीं होगी। मज़दूरी कितनी मिलनी चाहिए, यह तुम्हीं लोग तय कर लेना। हम लोगों ने जितना रुपया लगाया, उसपर सालाना दस रुपये प्रतिशत ब्याज हमें देना पड़ेगा। मिल को बढ़ाने के लिए अगर रुपये की ज़रूरत हो तो वह रुपया भी हम देंगे, पर उसी हिसाब से सूद लेंगे। इसपर भी वे राज़ी हैं।"

"इसका मतलब हमारी मिल तुम उन लोगों के हाथों सौंप आए हो।" मेघसुन्दर आर्तनाद-सा कर उठे।

"नहीं, मिल पर पूरा नियंत्रण हमारा ही रहेगा, वे बस मिल चलाएंगे और मुनाफे के उचित हिस्सेदार होंगे। आपने रुपया दिया है, इसलिए आपको दस रुपये प्रतिशत मिलेगा। क्या वह थोड़ा है ?"

"थोड़ा नहीं तो और क्या ? मारवाड़ी लोग सौ फीसदी, यहां तक कि दो सौ फीसदी मुनाफा भी करते हैं; यह नहीं जानते !"

"यह अब ज़्यादा दिन चलने का नहीं है।"

"जितने दिन चले उतने दिन चलाना ही पड़ेगा। बैंक में रुपये न रहने पर हम लोगों की हालत भिखमंगों जैसी होगी।"

हिरण्यगर्भ चुप रह गए।

"अभागा, उड़ंछू कहीं का!"

हिरण्यगर्भ ने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया।

"पुरखों की सम्पत्ति उड़ाकर सब बरबाद कर दिया।"

हिरण्यगर्भ फिर भी चुप रह गए। मन्मथसिंह कुछ कसमसाए, एकाध बार कान खुजलाया, फिर अन्दर की ओर चले तो हिरण्यगर्भ ने कहा, "काण्ट्रैक्ट कहां है?"

"छोटेवाले सूटकेस में। रहमान के पास। मैं उसे बुलाए देता हूं।"

बहाना पाकर वे जल्दी से बाहर खिसक गए।

"कैसा काण्ट्रैण्ट?"

"उनके साथ जो काण्ट्रैक्ट हुआ है, उसपर आपको दस्तखत करना हैं।"

"मैं दस्तखत नहीं करूंगा।"

टेलीफोन की घण्टी घनघना उठी। उन्होंने जल्दी से रिसीवर उठा लिया, "हलो, हां मैं मेघसुन्दर हूं। ऐं...कैण्डिल का दाम और भी गिर गया। अच्छा, अभी बताता हूं।"

रिसीवर रखकर वे चिल्ला उठे, "तुम लोग हमें मार डालो, मार डालो। मन्मथ की बात पर शेयर रोक लिया था, वह धड़ाधड़ गिरता जा रहा है।"

हिरण्यगर्भ ने कोई जवाब नहीं दिया। दीवार पर एक सितार टंगा हुआ था, पीछे मुड़कर उसके तार को धीरे से छेड़ने लगे।

"अब उसके पीछे क्यों पड़ गए? उसका भी नाश करना है?"

बूढ़ा महावत रहमान एक छोटा-सा सूटकेस लेकर अन्दर आया।

हिरण्यगर्भ ने आगे बढ़कर सूटकेस खोला और काण्ट्रैक्ट निकालकर

मेघसुन्दर के पास आए, "इसपर दस्तखत कर दीजिए, मैं आपकी ओर से वादा कर आया हूं।"

मेघसुन्दर आग-भरी निगाह से थोड़ी देर उन्हें देखते रह गए, फिर एक-दम से दस्तखत कर दिए। हिरण्यगर्भ उसे लेकर बाहर चले गए, पर कुछ ही दूर जाकर फिर लौट पड़े।

"आपके घुटने का दर्द कैसा है?"

"उससे तुम्हें क्या मतलब!"

"गठिया की एक अच्छी दवा मेरे पास आई है। उसे लेकर देखेंगे?"

"नहीं।"

मुस्कराकर हिरण्यगर्भ फिर चले गए। काकू के 'ना' का मतलब ही आखिर तक 'हां' होता है, यह उन्हें अच्छी तरह मालूम है। उन्होंने मन ही मन तय कर लिया कि अभी खुद आकर उन्हें एक खुराक दे जाएंगे। सच-मुच उन्हें काकू से बड़ा मोह है। स्नेह के भिखारी हैं, सुर के मोहताज हैं, पर केवल सम्पत्ति के बवंडर में पड़कर अपने जीवन का उपभोग नहीं कर पाते। हरदम जैसे सब कुछ उलझकर रह जाता है।

महावत रहमान बाहर न जाकर अन्दर ही रह गया। वह करीब-करीब मेघसुन्दर का हमउम्र ही है। नौकर तो वह है, पर यौवन के दिनों का सहचर है, इसीलिए मित्रता का भी कुछ दावा रखता है। बाबूजी आजकल हाथी की सवारी नहीं करते, इसीसे रहमान से मुलाकात भी नहीं हो पाती, सो वह इस मौके को हाथ से जाने नहीं देना चाहता था। उस दिन हाथी पर विशु और विनू के बारे में हिरण्यगर्भ और तंगश्री की बातचीत सुनकर उसने जो बुरी खबर प्राप्त की थी, उसे मेघसुन्दर के कानों तक पहुंचाना वह अपना फर्ज़ समझता था। अगर न पहुंचाए तो यह उसके लिए नमकहरामी ठहरी। सलाम करके वह मेघसुन्दर के सामने खड़ा हो गया।

"क्या है, रहमान! क्या हाल-चाल है, ठीक तो हो? बहुत दिनों से तुम्हें नहीं देखा।"

"हुज़ूर की दुआ से सब ठीक ही है।"

"फिर ? कुछ बात है ?"

"हुजूर को कुछ कहना चाहता हूं···"

"क्या बात है ?"

रहमान ने मेघसुन्दर के सामने बैठकर चेहरे पर रहस्य की छाया लाकर सारी बातें उन्हें सुना दीं।

मेघसुन्दर जैसे अपने कानों पर ही विश्वास नहीं कर पा रहे थे। सब सुनकर वे गुमसुम बैठे ही रह गए, फिर बोले, "अच्छा, तुम जाकर विशु को यहां भेज देना।"

"जी हां, ज़रा डांट-डपटकर समझा दीजिएगा।"

रहमान चला गया। मेघसुन्दर बेचैन हो उठे। वे विचलित होकर कमरे में चहल-कदमी करने लगे। फिर एकाएक अपना बेला उठाकर पागल की तरह उसे बजाने लगे। सारंग की गत से जैसे आग निकलने लगी। थोड़ी देर बेला बजाने के बाद मन कुछ शान्त हुआ। वे आंखें मूंदकर चुपचाप बैठे रहे, फिर तबला थिरकाकर कुछ गुनगुनाने लगे। खटका होते ही आंख खोली तो सामने विशु को आते देखा।

"मुझे बुलवाया आपने ?"

"हां, इधर आओ।"

"क्या बात है ?"

"जूते से तुम्हारी खाल खींचनी है।"

स्तम्भित विशु वज्राहत-सा खड़ा रह गया।

"इधर आ।"

विशु कुछ और सामने आया।

"सुना, तू विनू से शादी करना चाहता है ? सुनकर मैं तो कृतार्थ हो गया हूं। मन होता है गाना गाऊं···"

कहकर उन्होंने कीर्तन के ढंग से शुरू किया, "आओ, आओ नागर, प्रेम-सौदागर, पतंग की ढील दी है डार। हाथ जो आए कभी न छोड़ूं, चप्पल तो रखी है तैयार।"

उनकी आंखों से मानो आग बरसने लगी। विशु सन्न रह गया।

"जवाब नहीं देते ! यानी, जो सुना वह सच है?"

डरा हुआ विशु हकलाकर बोला, "यह सच है कि मैं विनू से प्रेम करता हूं। विनू भी मुझसे…"

"शर्म नहीं आती तुझे, पाजी, सूअर, हरामज़ादे कहीं के। बौना होकर चांद को हाथ लगाता है ! बढ़ई का छोकरा मेरे घर की लड़की से शादी करेगा ! निकल जा, अभी मेरे इलाके से निकल जा…चल !"

चप्पल खोलकर उन्होंने विशु की ओर फेंकी। चोट विशु के माथे पर लगी।

ठीक उसी क्षण हिरण्यगर्भ दवा की शीशी हाथ में लिए पिछले दर-वाज़े से अन्दर आए।

"क्या हो गया ?" वे ठिठककर खड़े रह गए।

"हट जा मेरे सामने से…निकल !"

मेघसुन्दर फिर गरज उठे। विशु धीरे-धीरे बाहर चला गया।

"क्या हुआ है, यह तो तुम्हें भी मालूम है। यह बात मालूम होते ही उसे गर्दनिया लगाकर ज़मींदारी से निकाल देना तो तुम्हारा ही फ़र्ज़ था। सब कुछ सुनकर चुप कैसे रह गए, यही मेरी समझ में नहीं आ रहा है।"

हिरण्यगर्भ चुप रह गए। क्या उत्तर दें, यह एकाएक उनकी समझ में नहीं आया।

"चुप क्यों रह गए !"

गले को ज़रा साफ़ करके हिरण्यगर्भ ने कहा, "मैं आज ही आपसे कहने की सोच रहा था। उन दोनों का ब्याह कर दीजिए।"

"ब्याह कर दूं !"

"हां, यही ठीक रहेगा। केशव के बारे में आपने यह नहीं किया, इसी-लिए चारों ओर अशान्ति की यह आग भभक रही है।"

"इस बात पर तुमसे बहस करने की मुझे ज़रा भी ख्वाहिश नहीं है, बहुत बहस कर चुका हूं। अपने घर में अपनी राय पर ही मुझे चलने की

आज़ादी दो। दुहाई है तुम लोगों की।"

"आप अपने मकान में अपनी ही राय पर रहें। मेरे मकान से उनकी शादी कर दी जाए।"

"उनकी शादी नहीं होगी, यह असम्भव है। इस बारे में मैं अब एक बात भी नहीं सुनना चाहता।"

"अगर वे भागकर ब्याह कर लें तो आप क्या कर लेंगे ?"

"कोड़े मारकर विशु को ज़मींदारी से निकाल दूंगा और विनू को ताले के भीतर रखूंगा। ऐ, गनपत !"

दरबान गनपतसिंह दरवाज़े के पास आ खड़ा हुआ।

"मन्मथबाबू को बुलाओ !"

गनपतसिंह चला गया। मेघसुन्दर ने कहा, "मन्मथ से कहता हूं कि अभी उसे ताले में बन्द कर दे।"

हिरण्यगर्भ चुपचाप क्षण-भर खड़े रहे, फिर बाहर चले गए। मेघसुन्दर फिर खड़े हो गए। अस्थिर होकर कमरे में चहलकदमी करने लगे। उफ ! कैसी काल-भुजंगिनी है, इसे ही उन्होंने बचपन से दूध-केले पर पाल रखा है। उन्हें विनू का चेहरा याद आया। सचमुच ही प्यारी सूरत है। पर उसने उस बढ़ई के छोकरे को कैसे बढ़ावा दिया ?

एक बार जी हुआ कि उसे बुलाकर पूछें, पर मन में जाने कैसी कमज़ोरी-सी आ गई, उन्हें ऐसा लगा कि अगर विनू आकर मांग करे तो शायद वे कुछ कह नहीं सकेंगे, सब गड़बड़ हो जाएगा। नहीं-नहीं, ऐसा कभी होने नहीं दिया जा सकता। यह अनहोनी बात है। उसे बन्द रखना पड़ेगा। जैसे भी हो यह सम्बन्ध रुकना ही चाहिए। कुछ दिन दूर रहने पर ही वह उसे भूल जाएगी। शिखरिणी भी तो भूल ही चुकी है ! पर क्या वह भूल चुकी है ? दरवाज़े पर आहट होते ही उन्होंने मुड़कर देखा— शिखरिणी खड़ी उनकी तरफ चुपचाप देख रही है। उनके लिए फल का रस लाई है।

९

सात दिन से लगातार कोशिश करने पर भी तुंगश्री को कोई ठिकाना नहीं मिला। कलकत्ता में आकर जिस राजनीतिक दल को उन्होंने बनाया था, उनमें से केशवसामन्त के अलावा कोई भी ऐसा नहीं था जिसकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो। इनमें से अधिकांश दूसरों के सहारे जीते हैं या बहुत ही गरीब हैं। कॉलेज के छात्र-छात्राएं, बेकार युवक-युवतियां मामूली तनखाह पानेवाले मिल के कर्मचारी, कॉलेज के एक-दो युवक अध्यापक, यही उनके दल के सदस्य हैं। नियमित रूप से दल के कोष में कुछ रुपये सभी देते हैं, पर वह केवल नियम की रक्षा-भर के लिए होता है। एक-दो जन तो चोरी करके भी इस नियम को निभाते रहे, यह बात तुंगश्री को मालूम है; पर इस चौर्यवृत्ति में हीनता नहीं थी, यह भी तुंगश्री जानती हैं। अमीरों का मुकाबला करने के लिए अगर गरीबों को खड़ा होना हो तो पुराने ज़माने की नीति का मानदण्ड लेकर रहना बेकार है। जीना पड़ेगा, जैसे भी हो जीना पड़ेगा, यह शाश्वत नीति ही इस ज़माने में एकमात्र निर्भर करने योग्य नीति है। जैसे भी हो ज़िन्दा रहना है, इसी नीति के वश में होकर उन्होंने केशवसामन्त को अपने दल में लिया था और उनके बारे में ज़्यादा खोज-बीन नहीं की थी। उनके भाषण या आदर्शवाद के लिए नहीं, उनकी आर्थिक सामर्थ्य को देखकर ही उन्होंने उन्हें अपने दल में शामिल किया था। पर अब किस नीति के अनुसार उन्हें एकाएक छोड़ने की सोच रही हैं? वे तो अब भी बिना हिचकिचाए खर्च करने के लिए तैयार हैं और कर भी रहे हैं। केशवसामन्त का उद्देश्य जो भी हो, उन लोगों का अपना लक्ष्य भी तो उनकी सहायता से सफल हो रहा है। जैसे भी हो काम निकालना है, इस नीति के अनुसार कोई दूसरा आश्रय खोजने की तुंगश्री को ज़रूरत तो नहीं थी। जितना सम्भव हो उस आदमी को फुसलाकर उसकी ईर्ष्यापीड़ित मानसिक अवस्था का फायदा उठाकर उसे दूह लेना ही उचित होता। पर अब यह उनसे नहीं बन रहा

है । कार्यक्षेत्र में आकर वे अब यह अनुभव कर रही हैं कि स्वार्थ नहीं बल्कि महत्त्व ही इन्सान को अनुप्रेरित करता है...

नहीं, केशवसामन्त के पैसे के सामने वे आत्मसमर्पण नहीं करेंगी । उनका साथ, उनका सम्पर्क सभी छोड़ना पड़ेगा; पर जैसे कुछ भी ठीक नहीं बन पा रहा हो, वास्तविकता के साथ वे आदर्श को खपा नहीं पा रही हैं, वास्तविकता को सामने रखकर उन्होंने जिस आदर्श को अपनाया है, उससे उनका मन नहीं भर रहा था । नहीं, आदर्श को ही जकड़े रहना पड़ेगा, उसके पीछे चाहे जो कुछ हो जाए । उन्हें दूसरा आश्रय खोज लेना ही है, पर कहां और किस तरह यह सम्भव होगा ? थोड़ी देर पहले वे जितेनबाबू के पास गई थीं । उनका बाहरवाला कमरा खाली है । उन्होंने काफी सहानुभूति दिखाकर कहा, "अगर दे सकता तो बहुत खुशी होती, पर पाकिस्तान से हमारे एक रिश्तेदार आकर उसमें रहेंगे। क्यों केशवबाबू के यहां क्या हो गया ?"

इस प्रश्न का कोई उचित उत्तर वे दे नहीं सकीं । थोड़े दिन पहले केशवबाबू की प्रशंसा में वे पंचमुख थीं, अब एकाएक उनके विरुद्ध कुछ कहते नहीं बना । थोड़ी देर इधर-उधर की बातें करके वहां से खिसक जाना पड़ा । होटल में रहने लायक पैसे नहीं हैं। दल के और कई सदस्यों से भेंट की, पर कोई परिणाम नहीं निकला । उन्हें आश्रय देने की स्थिति में कोई नहीं था । एक और चीज़ वे पहली बार समझ पाईं कि केशव-सामन्त उनपर कुछ अधिक प्रसन्न है और उन्हें अपने मकान में आश्रय दे रखा है, इस कारण कई उनसे कुछ ईर्ष्या भी करते हैं। कइयों की तिरछी हंसी, प्रश्न-भरी दृष्टि और बनावटी आश्चर्य से इस तथ्य का आविष्कार करके तुंगश्री ने और भी दृढ़ निश्चय कर लिया कि यह आश्रय त्यागना ही है । पर कैसे ? एक खाली मकान की खबर पाकर उसे देखने गई थीं, अंधेरी गली के अन्दर रोशनी, हवा से रिक्त दो कमरे और किराया महीने में पचास रुपये । इतना ही नहीं, दो हज़ार रुपये पगड़ी भी देनी होगी। मकान-मालिक एक मिल में क्लर्क है। वह भी

मुनाफाखोर पूंजीपति मिलवाले के खिलाफ तुंगश्री के नेतृत्व में हड़ताल में शामिल हुआ था। संकोचवश वह स्वयं तुंगश्री से नहीं मिला, एक रिश्तेदार के ज़रिये किराये और पगड़ी के बारे में खबर भिजवा दी। इस आदमी और उस मुनाफाखोर में फर्क ही क्या है ? दोनों की मनोवृत्ति एक-सी है। एक को मुनाफा लेने का मौका है, दूसरे को वह मौका नहीं मिल पाता; बस इतना ही तो ! उन्हें हिरण्यगर्भ की बात याद आई, इस ज़माने के पूंजीपति और मज़दूर दोनों एक ही थैले के चट्टे-बट्टे हैं। समाज-व्यवस्था अगर बदल दी जाए तो क्या फल होगा ? अभाव दूर होने पर क्या लालच भी दूर हो जाएगा ? क्या सब न्यायपरायण बन सकेंगे ? एक नौकरी का पता पाकर कुछ पहले वे किसीके पास गई थीं। कुछ दिन पहले वे एक प्रसिद्ध नेता थे, अब उनके हाथों में तमाम नौकरियां हैं, कितनों को लगा भी दिया है; तुंगश्री को वह नौकरी नहीं मिली, क्योंकि वे उनके रिश्तेदारों में से नहीं हैं। देश में अगर सोवियत व्यवस्था हो जाए तो क्या यह सब ही खत्म हो जाएगा ? हो सकता है, कुछ देर में हो ही जाए, जब किसीको कोई कमी न रहेगी। पर अभाव नहीं रहने से क्या लोभ चला जाता है ? फिर से यही प्रश्न उनके मन में उठा। अमीरों को तो कोई कमी नहीं, पर वे ही सबसे ज़्यादा लालची होते हैं। काम करने से ही जहां खाने और पहनने को और आश्रय मिल जाए, ऐसी समाज व्यवस्था में अधिकारी यदि पक्षपातहीन न हों तो काम एकदम सज़ा की तरह हो जाएगा। निर्लोभ, पक्षपातहीन, न्यायपरायण व्यक्तियों की ही सबसे पहले ज़रूरत है···

कई तरह से उलटा-सीधा सोचते-सोचते तुंगश्री लगातार घूम रही थीं। बालीगंज से श्यामबाज़ार, सियाल्दा से हावड़ा, कभी बस में, कभी ट्राम में, कभी पैदल। आश्रय मिलने की ज़रा भी सम्भावना जहां दिखाई पड़ी, वहां गईं, पर आश्रय नहीं मिला। वे एक और भी मुसीबत में पड़ी थीं, माधोकाका भाई को सैनेटोरियम ले जाने के लिए राज़ी हो गए हैं, पर उन्हें किराया और खर्च देना पड़ेगा, सब मिलाकर करीब दो सौ

अलका ने भेजे हैं, एक हज़ार रुपये !

डाकिये के साथ वे स्वप्नाविष्ट-सी चलने लगीं······लिफाफा हाथ में आने पर भी स्वप्नाविष्ट-सी खड़ी रह गईं। डाकिये ने ही आगे बढ़कर पूछा, "खोलेंगी इसे ? कैंची दूं ?"

"दो।"

खोलने पर एक हज़ार रुपये के नोट निकले। साथ में एक छोटी-सी चिट्ठी थी—

"प्रिय मिनति,

बचपन की मित्रता के अधिकार सें ही आज तुझे यह छोटी-सी रकम भेजने की हिम्मत हुई। अगर तू स्वीकार करे तो मुझे बड़ी खुशी होगी। कलकत्ता आने पर तुझसे भेंट करूंगी। आशा है तू अच्छी होगी, तेरा भाई कैसा है ? अच्छी तरह उसका इलाज करा। फिर ईश्वर की इच्छा। रुपयों की ज़रूरत पड़ने पर मुझे लिखने में संकोच न करना। हार्दिक प्यार। तेरी,

अलका"

टेढ़ी-मेढ़ी, भद्दी लिखावट की ओर तुंगश्री अपलक देखती रह गईं।

१०

"वहां भी सुलह हो गई ?"

कुछ रूखी आवाज़ से ही केशवसामन्त ने नगेन से प्रश्न किया। नगेन कुछ अवाक्-सा रह गया, क्योंकि उसे उम्मीद थी कि यह खबर पाकर केशव-बाबू खुश होंगे।

"सुलह नहीं होगी ? हमारी सारी मांगें तो उन्होंने मान ली हैं। हम लोगों ने तिगुनी मज़दूरी की मांग की थी, वे उसे बदलकर एक साल के लिए दुगुनी करने पर राज़ी हो गए हैं, पर अगले साल से तो पूरी की पूरी मिल

ही मज़दूरों के हाथ में आनेवाली है। मेघसुन्दरबाबू को सिर्फ दस प्रतिशत सूद मिलेगा। यह फायदे की बात नहीं रही क्या ? हां, हिरण्यबाबू न होते तो यह सब होना नामुमकिन था। इसी बात पर सुनता हूं, उनकी चाचाजी से झड़प हो गई।"

केशवसामन्त का दम घुट-सा रहा था, उनकी आंखें बाहर निकल पड़ने को हुईं। अनमने होकर वे अपनी मूछें ऐंठते जा रहे थे। नगेन के चुप होने पर उन्होंने उसके चेहरे की ओर देखा। थोड़ी देर अर्थहीन दृष्टि से देखते रहे, फिर बोले, "ओह, यह बात है!"

"हां, खूब कसकर झड़प हो गई है।" बड़े उत्साह से नगेन बोलता रहा, "नरेन मेरा मित्र है न, उसीसे सारी खबर मिली। हिरण्यबाबू बहुत अच्छे आदमी हैं। एक और बात पर भी मेघूबाबू से उनकी लगने ही वाली है।"

"वह क्या ?"

"एक शादी के मामले पर। उनकी एक नातिन है विनोदिनी, वह शायद अपने संगीत-मास्टर से शादी करना चाहती है। जात अलग है, इसी-लिए मेघूबाबू को घोर आपत्ति है। हिरण्यबाबू ने कह रखा है कि यह शादी होकर ही रहेगी। सुना है इसी महीने की बीस तारीख शादी के लिए तय हो गई है। नरेन कह रहा था, उस दिन कहीं चाचा-भतीजे में मार-पीट न हो जाए!"

केशवसामन्त थोड़ी देर सामने की ओर अपलक-दृष्टि से देखते रह गए, फिर नगेन की ओर देखते हुए बोले, "अच्छा तो तुम अब जा सकते हो, मैं बाहर जाऊंगा।"

"वह रुपये आपको वापस कर दूं ?"

"कौन-से ?"

"वही जो पांच सौ रुपये आपने मुझे दिए थे, उसमें से कुछ भी खर्च नहीं हुआ है।"

"तुम्हारा किराया नहीं लगा ?"

नगेन का चेहरा हंसी से खिल उठा, बोला, "नहीं, किराया नहीं लगा।

जाते समय एक जान-पहचान के चेकर से भेंट हो गई, उसने टिकट नहीं खरीदने दिया। लौटते समय देखा, फिर वही लौट रहा है तो······और वहां नरेन के घर ही ठहरा था, सो कुछ खर्च नहीं हुआ। हड़ताल तो हुई ही नहीं।"

सारी रकम लौटाकर नगेन चल पड़ा।

नगेन के जाने पर केशवसामन्त उठने जा रहे थे तभी नौकर ने आकर खबर दी कि माधवबाबू नाम के कोई सज्जन भेंट करने आए हैं।

"कौन, माधवबाबू ?"

"कहते हैं, दीदी के चाचा हैं।"

"तुंगश्री के ?"

"यही तो कहा।"

"अच्छा, बुला ला।"

तुंगश्री के माधवकाका भीतर आए। वे ज़रा बढ़-चढ़कर बोलना पसन्द करते हैं।

"आप क्या चाहते हैं ?"

"मैं अपने मुन्ने का सन्दूक-बिस्तर लेने आया हूं। मिनू ने कुछ ही दिन पहले मुझसे सामान ले जाने को कहा था, पर मुझे मौका नहीं लगा।"

"मिनू कौन ?"

"वही, जिसे आप लोग तुंगश्री कहते हैं, उसका असली नाम मिनति है न! उसके भाई मुन्ना को सैनेटोरियम पहुंचाना है न, इसीलिए सामान लेने आया हूं। सैनेटोरियम ले जाए बिना अब काम नहीं बनेगा।"

"सैनेटोरियम ले जाने का इन्तज़ाम हो चुका है क्या ? किसने प्रबन्ध किया ?"

"वही हिरण्यबाबू कि कौन उसके एक मित्र हैं न! उन्होंने ही चिट्ठी दी है, देखिए न यह चिट्ठी।"

बड़े आडम्बर के साथ उन्होंने चिट्ठी निकाली। पढ़कर केशवसामन्त कुछ देर स्तब्ध रह गए, फिर बोले, "अच्छा, तो आप सामान ले जाइए।

तुंगश्री कहां हैं ?"

"क्या मालूम ? दो दिन से उससे भेंट ही नहीं हुई।"

केशवसामन्त ने नौकर बुलाकर उनको सामान देने के लिए कह दिया।

माधवकाका नौकर के साथ नीचे चले गए। केशवसामन्त चुपचाप बैठे रह गए। उन्हें ऐसा लगा कि हर तरह से वे हार गए। तुंगश्री के भाई को सैनेटोरियम भेजकर तुंगश्री के निकट जिस महानता का परिचय देने की सोची थी, उसे भी हिरण्यगर्भ झपट्टा मारकर ले गया। उनकी आंखें जल-सी उठीं, नथूने फड़कने लगे। खड़े होकर स्टोव जला लिया, फिर ग्रामोफोन में रिकार्ड लगा दिया, अस्थिर होकर कमरे में टहलने लगे। एकाएक ग्रामोफोन बन्द कर दिया, स्टोव बुझा दिया, फिर जल्दी से नीचे उतर गए। उन्मत्त की तरह रास्ते में दौड़ने लगे, अब तो खुद जाना पड़ेगा......

"टैक्सी !"

टैक्सी रुक गई। केशवसामन्त बैठ गए।

"तेज़ी से चलो, सीधे !"

११

जिस ज़रूरत के तकाज़े से आदमी भागता फिरता है, उसके पूरा होने पर थोड़ी देर के लिए जो सूनापन आ जाता है, उसमें आदमी फिर किसी और ज़रूरत को खोजने लगता है। आवश्यकता-रूपी अवलम्बन न रहने पर जीवन अर्थहीन-सा हो जाता है। जब भाई सैनेटोरियम चला गया, जब सारे कलकत्ता शहर का चप्पा-चप्पा छान चुकने पर तुंगश्री को विश्वास हो गया कि अब कोई मकान या आश्रय नहीं मिलेगा, अपने आदर्श को कार्यान्वित करने के लिए उन्होंने जो दल बनाया था, उसके प्रधान पंडा केशवसामन्त पर श्रद्धा बनाए रखना जब किसी तरह सम्भव नहीं हुआ

तब तुंगश्री का मन अवलम्बन खो जाने से बेचैन हो उठा। रुपये मिलने के बाद से वे केशवसामन्त के यहां खाने और सोने भी नहीं जाती थीं। उनका सामान वहीं पड़ा रह गया था, पर वे एक होटल में दिन काट रही थीं। मन ही मन वे कोई सहारा खोज रही हों, ऐसी बात नहीं। जिस पुराने अवलम्बन को उन्होंने इतने दिन से जकड़ रखा था, उसके पक्ष में भी कई युक्तियों का आविष्कार करने के लिए वह आप्राण चेष्टा कर रही थीं। केशवसामन्त के प्रति उनका मोह भी जैसे किसी तरह टूट नहीं रहा था। एक ऐसा सशक्त व्यक्तित्व अगर ईर्ष्या की प्रेरणा से ही इतना सब करता है तो उसमें अस्वाभाविक ही क्या है? शिखरिणी जैसी लड़की को उसने प्यार किया था, इसमें तो कोई अन्याय नहीं था। शिखरिणी से ब्याह हो जाता, तो शायद उसकी ज़िन्दगी कुछ और ही होती। हिरण्य-बाबू की बातें याद आ गईं—वह रोगग्रस्त है। अगर उसे ठीक तरह से समझना चाहती हैं तो उसे प्यार करना पड़ेगा। वे क्या यह नहीं कर सकेंगी? झूठ मान के क्षुद्र गर्व से चिपके रहना क्या उन्हें शोभा देता है? क्या यह उनका फर्ज़ नहीं है कि हिरण्यगर्भ और केशवसामन्त जैसे दो महान व्यक्तित्वों को मिलाकर उन्हें देश के काम में जुटा दें। हिरण्यगर्भ के आदर्श से उनके आदर्श में कोई विशेष भेद नहीं है। हृदय के एकान्त कोने से एक और भी युक्ति उन्हें कुछ आश्वस्त कर रही थी, शिखरिणी को देखने से पहले केशवसामन्त ने तुंगश्री को नहीं देखा था। उनसे पहले भेंट हो जाती, तो केशवसामन्त की ज़िन्दगी शायद और ही होती। अब क्या ऐसा होना असम्भव है? केशवसामन्त का हृदय अब तक शिखरिणी की तरफ ही उन्मुख है, पर क्या हमेशा ऐसा रहेगा? बीरादेवी के विषय में उनके मन में जो शक हुआ था, वह निराधार था, यह बात एकाएक उन्हें मालूम हो गई। उनकी पार्टी के ही एक सदस्य हरीबाबू से कल रास्ते में भेंट हो गई थी, उनके साथ एक और सज्जन थे। हरीबाबू ने उनका परिचय देते समय कहा था—यह एक अध्यापक हैं, हरिजनों के लिए एक विद्यालय खोलने के लिए यहां पर आए हैं। हरिजन-नेत्री

वीरादेवी से जल्दी ही इनका ब्याह होनेवाला है। तो यह साफ है कि वीरा-देवी से केशवबाबू का वैसा कोई सम्पर्क नहीं है। होटल के कमरे में बैठकर वे यही सब सोच रही थीं, एकाएक एक बात याद आने पर सीधी बैठ गईं। विधु से उन्होंने जो वादा किया था, उसकी वे क्या व्यवस्था कर सकीं? अवश्य हिरण्यबाबू से कह आई हैं, पर क्या इतना ही काफी है? अभी तो कोई काम नहीं है, अगर वहीं चला जाए तो कैसा रहे? यह बातें केशवबाबू को बताई जाएं, तो कैसा रहेगा? दुर्दमनीय पौरुष के बल पर शायद वे कुछ कर सकें। उन्होंने निश्चय कर लिया कि केशवसामन्त से बेकार झगड़ा नहीं करेंगी।

केशवबाबू ने तो अब तक उनसे कोई दुर्व्यवहार नहीं किया, फिर उन्हें ही क्या पड़ी है? नहीं, वे आज ही केशवसामन्त के घर लौट जाएंगी। उठ ही रही थीं कि उसी समय दरवाज़े पर हल्की-सी थपकी सुनाई पड़ी। कौन होगा, यह वे समझ गईं। उन्होंने अपने को कुछ असहाय-सा पाया। होटल में उनके बगलवाले कमरे में ही जो सज्जन रहते हैं, वे कई दिन से उनकी ओर कुछ विशेष ध्यान दे रहे हैं। सवेरे उन्होंने जो प्रस्ताव रखा था, युक्ति के अनुसार उसमें उनको कोई आपत्ति नहीं थी, पर सुरुचि की दृष्टि से उन्हें हिचकिचाहट हो रही थी। बर्नार्डशा की 'मिसेज़ वारेन्स प्रोफेशन' नाम की किताब उन्हें पढ़ते देखकर उन सज्जन ने कहा था—'इस देश में भी मिसेज़ वारेन्स की संख्या कम नहीं है। इस देश में भी ख़ूबसूरत बुद्धिमती लड़कियों ने पाप के मार्ग पर कदम रखा है, क्योंकि अच्छी बनी रहकर वे भद्र जीवन बिताने में असमर्थ थीं। आप-जैसी मानसिक शक्ति सबमें नहीं है। इसके अलावा आपमें एक अद्‌भुत शक्ति भी है, आप बहुत ख़ूबी से बात समझा सकती हैं। आप अगर पतिताओं के बीच काम करें तो देश की बहुत बड़ी सेवा होगी। अगर उन्हें अपने दल में खींच लें तो देश के सभी श्रेणी के लोगों पर प्रभाव डाल सकेंगी। एक लड़की से मेरी जान-पहचान है, अगर आप चाहें तो आपको उससे मिला सकता हूं, लड़की बुद्धिमती है, परिचय होने से आप ख़ुश होंगी'।

तुंगश्री आपत्ति तो नहीं कर सकीं, पर उनके मन में कुछ खटक रहा था। पर जिस संस्कारमुक्त युक्ति के स्तर पर वे बातचीत कर रही थीं, उस स्तर पर खड़े होकर उनका यह कहना सम्भव नहीं था कि वे पतिता से परिचय पाने पर कुण्ठित हो जाएंगी। पर उन सज्जन का हाव-भाव जैसे उन्हें जंच नहीं रहा था। उनका खुद आकर परिचय करना और भद्रता की अतिशयता की ओट में कुछ ऐसा दिखाई पड़ा था जो तुंगश्री को नहीं भाया। वह महाशय अध्ययनशील जान पड़े, चिन्तन की क्षमता भी उनमें जान पड़ी, उनके अनजान में ही उनकी हंसी और दृष्टि से जो चीज़ टपकती थी, वह शायद किसीको भी न सुहाती।······दरवाज़ा खोलते ही तुंगश्री को वे महाशय खड़े दिखाई पड़े।

"सवेरे आपसे बातचीत होने के बाद मैंने उस लड़की को फोन किया था, उसने कहा है कि आपसे परिचय करने का मौका पाकर वह बहुत खुश होगी। चलिए, दरवाज़े पर गाड़ी तैयार है, टैक्सी बुलवा ली है।"

तुंगश्री आपत्ति नहीं कर सकीं, बोलीं, "चलिए।"

थोड़ी देर बाद जिस मकान के सामने गाड़ी आकर रुकी, वह तो ठीक झोंपड़ी जैसा नहीं था! मकान के गेट पर दरबान भी था; और गाड़ी खड़ी होते ही अन्दर से कुत्ते की जो आवाज़ सुनाई पड़ी उससे यह साफ ज़ाहिर होता था कि कुत्ता भी कुलीन वंश का ही था।

वे महाशय नीचे उतरकर बोले, "आइए।"

तुंगश्री उतरते ही जो बात पहले-पहल पूछ बैठीं, उसने उन महाशय को बेहद अचरज में डाल दिया, "इतना बड़ा मकान क्या उन्हींका है?"

"नहीं, इधर का हिस्सा माधवी का है, उस तरफ एक और रहती हैं।"

तुंगश्री को अलका की याद आई। वह भी क्या इसी श्रेणी की है? उसे तो रुपयों की कमी नहीं है; फिर जल्दी से सोचा कि वह जिस वर्ग की भी हो, उन्हें तो अलका के प्रति आभारी होना ही चाहिए। पर यह कृतज्ञताबोध स्वतःस्फूर्त धारा से अन्तर में क्यों नहीं उठता, यह सोचकर

वे कुछ अनमनी-सी हो गईं। वैसी ही वे उन सज्जन का अनुसरण करती हुई अन्दर गईं।

"आइए!" हंसकर माधवी ने उनका स्वागत किया।

"माधवी को देखकर ऐसा नहीं लगता कि वह पतिता भी है, उसके चेहरे पर तथा उसके हाव-भाव में ऐसा कुछ भी भद्दापन नहीं है जो शराफत के दायरे से बाहर हो। बैठक खूबसूरती से सजी थी। देखने से ही लगता था कि लड़की सुरुचिसम्पन्न है। टेबल के पास ही किताबों का शेल्फ रखा है। उसमें जो किताबें नज़र आईं वे बहुत भले घरानों में भी नज़र नहीं आतीं। रवीन्द्रनाथ, बर्नार्डशा, जोड, गाल्सवर्दी, रोलां ये सब तो हैं ही। साम्यवाद पर भी अच्छी-अच्छी किताबें रखी हुई थीं। एक कोने में एक ऑर्गन भी रखा हुआ था।

"आपका नाम मैंने सुना है, बहुत दिनों से आपसे परिचय करने की इच्छा थी। कमलदादा से एकाएक उस दिन सुना कि आप उनके बगलवाले कमरे में ही रहती हैं। कब से कलकत्ता आई हैं? जेल से कब छूटीं?"

"जेल से छूटे तो कुछ दिन हो ही गए। कलकत्ता में रहते भी तीन महीने गुज़र गए।"

"तीन महीने से आप उसी होटल में हैं?" कमलबाबू ने प्रश्न किया, "मैं तो दस दिन हुआ वहां पर आया हूं। हमारे बगल के कमरे में तो पहले एक सज्जन रहा करते थे, आप क्या तीसरी मंज़िल पर थीं?"

"नहीं, मैं उस होटल में नहीं थी, और कहीं रहती थी। करीब तीन दिन हुआ होटल में आई हूं।"

'चाय मंगाई जाए, क्यों?" माधवी ने हंसकर प्रश्न किया।

"ज़रूर।" बड़े उत्साह से कमलबाबू ने समर्थन किया।

चाय के लिए बोलकर लौटते ही कमलबाबू ने माधवी से कहा, "तुम पहले इन्हें एक गाना सुना दो तो फिर परिचय अच्छा जमेगा।"

"कमलदादा सबको मेरा गाना सुनवाने में ही व्यस्त रहते हैं; पर जानती हैं, मेरी आवाज़ बिलकुल अच्छी नहीं है, फिर टांसिल का भी ऐसा बुरा हाल

रहा है......"

तुंगश्री को लगा कि भले घरों की लड़कियां भी गाने के अनुरोध पर ऐसी ही बातें करती हैं, कोई खास फर्क नहीं है। चेहरे पर मुस्कराहट लाकर माधवी थोड़ी देर सिर झुकाए बैठी रही, फिर उठकर ऑर्गन के सामने जा बैठी। रवीन्द्रनाथ का एक गीत शुरू किया। आवाज़ सचमुच ही मीठी थी। गीत का चुनाव देखकर तुंगश्री को और भी प्रसन्नता हुई। उस लड़की में रसबोध का परिचय पाकर वे मोहित हो गईं। बार-बार वह शुरू की चार पंक्तियां घुमा-फिरा कर गाती रही—

केन चोखेर जले भिजिये दिलेम ना
शुकनो धुलो यत ?
के जानित आसबे तुमि गो
अनाहूतेर मतो ?

अर्थात्, कौन जानता था कि तुम बिना बुलाए ही आओगे, मुझे तो सारी राह की धूल आंसूओं से भिगो देनी थी। मैंने क्यों ऐसा न किया ?

क्या सिर्फ इतना ही था ? तुंगश्री को लगा कि संगीत के बीच से वह जैसे कोई विनती कर रही हो। रवीन्द्रनाथ की ज़बानी वह अपनी ही बात कह रही हो—'जिस दर्द के मारे तुम आर्त हो गए, वही दर्द मेरे अन्तर में एक छिपी हुई कथा की तरह आघात कर रहा था, तुम मेरी अवहेलना करके चले न जाना, मुझे समझ लो, मुझे पहचान लो।'

गीत के खत्म होने के बाद भी स्वर की गूंज जैसे चारों ओर मंडराती ही रही। पर एकान्त सत्ता के गोपन क्रन्दन से वातावरण भर गया। चाय आ गई। करीब-करीब चुपचाप ही चाय-पान समाप्त हुआ।

"और एक हो जाए।" कमलबाबू ने फर्माइश की।

माधवी थोड़ी देर चुप रहकर फिर गाने लगी—

दुखेर वरषाय चोखे जल येई नामल,
वक्षेर दरजाय बन्धुर रथ सेई थामल।

अर्थात्, दुःख की वर्षा में ज्योंही आंखें झरने लगीं त्योंही हृदय के द्वार

पर मित्र का रथ आ खड़ा हुआ।

तुंगश्री स्तब्ध होकर सुनती रहीं। उनके मन में आया, यह जो इतना आयोजन, जेलयात्रा, साम्यवाद का इतना अध्ययन-भाषण, स्वतन्त्रता के लिए प्राणों की बाज़ी लगा देना व्यर्थ है, यदि बन्धु का रथ हृदय के दरवाज़े तक न पहुंच सके तो यह सब व्यर्थ है। उसी रथचक्र-ध्वनि के लिए वे आजीवन मन ही मन उत्कर्ण रही हैं, दुःख की वर्षा में आंसू तो बहुत झरे पर बन्धु का रथ कहां है ? एकाएक केशवसामन्त का चेहरा याद आ गया, विच्छेद और व्यथा से भरा हुआ मिलन का पात्र क्या उन्हींके हाथों अर्पित करना पड़ेगा। जो स्वप्न उन्होंने बचपन से देखा है, युग-युग से वंचित अन्तर में संचित वह आशा क्या उन्हींमें सफल होगी…एकाएक रसभंग हो गया। खुली खिड़की से उन्मत्त अट्टहास सुनाई पड़ा। तुंगश्री चौंक पड़ीं, पहचानी हुई आवाज़ और हंसी। माधवी भी भौंहें सिकोड़कर चुप हो गई थी।

कमलबाबू ने कहा, "यह मकान तुम छोड़ दो माधवी, तुम्हारी पड़ो-सिन ठीक नहीं है।"

"चपला का इतना कसूर नहीं है। केशवबाबू के आने पर ही हल्ला मचता है। शायद वे महाशय आज आए हुए हैं। सुना है, उनका देशभक्त होने का भी एक पोज़ है। रुपये के बल पर बहुत-सी संस्थाओं के संरक्षक बने हैं।"

तुंगश्री की ओर देखकर माधवी कुछ हंसी। तुंगश्री का चेहरा पीला पड़ गया था, फिर भी उन्होंने मुस्कराने की कोशिश की—"कलकत्ता में आकर मेरा भी एक केशवबाबू से परिचय हुआ है। केशवसामन्त, वही हैं क्या ?"

"हां, वही हैं। मेरे तिमंज़िलेवाले कमरे से उन लोगों की बैठक अच्छी तरह दिखाई पड़ती है। अगर चाहें तो अपनी आंखों से उन महाशय को देख सकती हैं।"

"चलिए, देखूं तो।"

माधवी के साथ वे तिमंज़िलेवाले कमरे में गईं। खुली खिड़की से

उन्हें जो कुछ दिखाई पड़ा, उससे पल-भर में उनके सारे स्वप्न जलकर खाक हो गए। भद्दी मुद्रा में चपला नाच रही है और केशवसामन्त हा-हा करके हंस रहे हैं, उनकी दृष्टि में उन्माद-सा भरा है। एकाएक नाच खत्म हो गया। केशवसामन्त उल्लास के साथ चिल्ला पड़े, "क्या खूब, क्या खूब ! पर मेरी असली बात मत भूलना मेरी चांद ! गुंडों की मुझे सख्त ज़रूरत है, कम से कम बारह ! बन्दूक, छुरे, कुल्हाड़ी, कटार लेकर अब मैं खुद ही जाऊंगा।"

तुंगश्री से और नहीं सुना गया, वे उतर आईं।

माधवी का गीत फिर से नहीं जम पाया। तुंगश्री ने जल्दी ही फिर आने का वादा करके उनसे विदा ली। होटल पहुंचते ही वे केशवसामन्त के यहां गईं। अपना कमरा खोलकर देखा, अलका की एक चिट्ठी आई थी, लिखा था, तीन-चार दिन के भीतर ही वह कलकत्ता आएगी। अपने कलकत्ता के मकान का पता भी लिखा है। नौकर से पूछने पर तुंगश्री को पता चला कि केशवसामन्त अभी तक नहीं लौटे। तुंगश्री ने अपना सारा सामान टैक्सी में रखकर नौकर से कहा, "बाबू के आने पर कह देना कि मैं चली गई हूं। यह लो।" उसके हाथ में पांच रुपये बख्शीश थमाकर वे टैक्सी में बैठ गईं। केशवसामन्त के साथ के सारे सम्बन्ध समाप्त हो गए।

१२

हिरण्यगर्भ की प्रयोगशाला के सामने मुरारीपुर स्कूल के छात्रों की भीड़ लगी थी। सभीके कपड़े गीले थे। हाथ-पांव कीचड़ से भरे थे, सिर में और कपड़ों में काई लिपटी हुई थी। हिरण्यगर्भ एक रोते हुए बच्चे के पांव में पट्टी बांध रहे थे। उसके कपड़े-लत्ते भी भीगे हुए थे, पांवों में कीचड़ था, बगल में एक ट्रे में रुई, टिंचर आदि लेकर नरेन खड़ा था। भीड़ चीरते हुए मन्मथसिंह वहां आ पहुंचे।

"क्या हो रहा है ?"

"बिमल तालाब में उतरा था, उसका पांव कट गया है, शायद पानी के नीचे कांच के टुकड़े थे ।"

"इस समय तालाब में उतरने की क्या पड़ी थी ?"

"हम सभी उतरे थे ।" पट्टी बांधते-बांधते उनकी तरफ मुड़कर मुस्कराते हुए हिरण्यगर्भ ने जवाब दिया ।

"एकाएक यह झक क्यों सवार हो गई ?"

"डाक्टर पृथ्वीशराय के 'टोपापाना' का प्रयोग हम अपने गांव में भी करना चाहते थे ।"

"यह डाक्टर पृथ्वीशराय कौन हैं ?"

"मुर्शिदाबाद के हेल्थ-ऑफिसर थे। उनका देहान्त हो गया है, वे मरते दिन तक यही एक काम कर गए हैं कि किस आसान ढंग से हमारे देश से मलेरिया को निर्मूल किया जाए। उन्होंने आज़माकर यह दिखा भी दिया है कि अगर गांवों के सारे तालाबों से 'टोपापाना' निकाल फेंका जाए तो बहुत हद तक मलेरिया का प्रकोप घट जाएगा। रामपड़ा, चक, भरतपुर, मुनिग्राम, खोस बासपुर इन सभी गांवों में वे अपने हाथों से काम करके यह साबित कर गए हैं, हमने भी नसीबपुर में किया था, वह सफल भी रहा है। इसीलिए यहां पर भी हम लोगों ने काम शुरू किया है। पिछले साल के पिल्ली के आंकड़े हमारे पास मौजूद हैं । ठीक से रख छोड़े हैं न नरेन ?"

आंखें टिमटिमाकर नरेन बोला, "शायद होगा।"

"शायद का मतलब ? अगर एक भी आंकड़ा खो गया तो मैं तुम्हें चबा जाऊंगा, समझ गए !"

"उस दराज में होगा ।"

"अभी देखकर उसे ठीक से रखो।"

"अच्छा।"

मन्मथसिंह का कौतूहल इस विषय में अब नहीं रहा । कमरे की ओर

बढ़ते हुए उन्होंने कहा, "काम खत्म करके अन्दर आ जाना, तुमसे कुछ बात करनी है।"

"बस खत्म ही है, आता हूं।"

पट्टी बांधी जा चुकी थी, रोते हुए बालक की ओर देखकर हिरण्यगर्भ बोले, "छिः छिः, तुम अभी तक रो रहे हो? लोग क्या कहेंगे?"

"मैं घर कैसे लौटूंगा?" होंठ फुलाकर बच्चे ने कहा।

"तुम आए कैसे थे?"

"हम बैलगाड़ी से आए थे।"

"मैं खुद गाड़ी हांक रहा था।" एक बालक ने बड़े गर्व के साथ कहा।

"तीन गाड़ियों में सब अट गए थे?"

"हम चार जने साइकल से आए।" एक दूसरे बच्चे ने कहा।

"तो विमल कैसे जाएगा? अच्छा तो मेरी फिटन उसे पहुंचा आएगी। टप-टप-टप-टप विमलबाबू घर जाएंगे।"

विमल के होंठों पर हंसी खिल गई, पर दूसरे ही क्षण वह बोला, "मैं आकाश-विहार पर कैसे चढ़ूंगा। आज मास्टरसाहब हम लोगों को नक्षत्र दिखानेवाले थे।"

"ओह, आज तुम लोगों को आकाश-विहार भी जाना है? अच्छा ठीक है, मैं कोचवान से कहे देता हूं, वह तुम्हें गोद में उठाकर ऊपर पहुंचा देगा।"

"मैं भी इसे उठाकर ले जा सकता हूं। भारी ही कितना है?" बारह-तेरह साल के एक लड़के ने आगे बढ़कर अकड़ के साथ कहा।

"चलो, तुम लोगों के जाने का इन्तज़ाम कर दूं।" लड़कों को साथ लेकर वे उधर चले गए।

उनके जाने का प्रबन्ध करवा कर हिरण्यगर्भ अन्दर आए। मन्मथसिंह गम्भीर बैठकर पांव हिला रहे थे।

"क्यों, क्या बात है?" हिरण्यगर्भ ने पूछा।

"संक्षेप में एक बात का जवाब पहले दो। विनू के साथ विशु के ब्याह का क्या सचमुच निश्चय कर लिया है ?"

"हां।"

"हां का मतलब ?"

"मतलब कि शादी कर दूंगा।"

"विशु कहां है ?"

"आकाश-विहार में, मास्टरसाहब के पास।"

"विनू को कहां से पाओगे ? उसे तो काकू ने ताले में बन्द कर रखा है।"

"चाभी कहां है ?"

"चाभी खुद उन्हींके पास है। इधर से कोई सुविधा नहीं होगी, पर विनू ऊपर के जिस कमरे में है, उसकी खिड़की में छड़ें नहीं हैं। सीढ़ी वगैरह से अगर किसी तरह उतार ले सको तो हो सकता है। पर चुपके से इतनी बड़ी सीढ़ी लगाना भला सम्भव कैसे होगा ?"

"रस्सी की सीढ़ी लगाई जा सकती है।"

"पर वह यहां कहां मिलने की ?"

"आदमी भेजकर कलकत्ता से मंगवानी पड़ेगी।"

"पर रस्सी की सीढ़ी से विनू इतने ऊपर से उतर सकेगी ! कहीं गिरकर हाथ-पांव तोड़ ले, तो एक और बखेड़ा खड़ा हो जाए।"

हिरण्यगर्भ भौंहें सिकोड़कर चुप बैठे रहे।

मन्मथसिंह ने तिरछी नज़र से एक बार उनकी ओर देखकर गला साफ किया, फिर कहा, "मेरी एक बात मानोगे ?"

"कहो !"

"अगर तुम इन सबमें न पड़ो तो कैसा रहे ? बखेड़ा खड़ा करने से फायदा क्या ? काकू तो एकदम बौखला गए हैं। ब्याह होते ही कुरु-क्षेत्र मच जाएगा। इससे बेहतर है कि विशु को यहां से हटा ही दो, कुछ दिन कलकत्ता या काशी में पड़ा रहने दो, फिर सब ठीक हो जाएगा।"

थोड़ी देर चुप रहकर हिरण्यगर्भ ने कहा, "ऐसा नहीं हो सकता मन्मथ, जिस स्वतन्त्र भारत को हम चाहते हैं, उसमें इस तरह का जाति-भेद नहीं रहेगा। समाज में इस तरह की ज़बर्दस्ती का स्थान वहां नहीं है। जिसे मैं अन्याय मानता हूं, उसे प्रश्रय देना, उचित नहीं। शिखरिणी के बारे में तुम सब कुछ जानते हो, मैं नहीं जानता कि उसमें कोई परिवर्तन आया कि नहीं।"

"परिवर्तन आया है, मैं 'वाच' करता जा रहा हूं।"

"वह शायद संभाल ले जाए, पर केशव की ज़िन्दगी बरबाद हो गई।"

दोनों थोड़ी देर तक चुप रहे।

"तुम एकाएक इसपर माथापच्ची क्यों कर रहे हो?" हिरण्यगर्भ ने एकाएक प्रश्न किया।

"माथापच्ची मेरी नहीं, शिखरिणी की है।" हंसकर मन्मथ ने जवाब दिया।

"ओह!"

फिर थोड़ी देर तक दोनों चुपचाप रहे। केशवसामन्त ने जो चिट्ठी शिखरिणी को लिखी थी, वह हिरण्यगर्भ के हाथ पड़ गई थी। कुछ देर सोचकर उन्होंने उसे मन्मथ को न दिखाने का ही निश्चय कर लिया।

"तो तुमने तय कर लिया है?" कहकर मन्मथसिंह खड़े हो गए।

"हां, यही तय रहा।"

"काकू के दिल पर इतना बड़ा आघात करोगे?"

"और चारा ही क्या है? काकू के मन की व्यथा बहुत दिन नहीं रहती, वे जल्दी ही भूल भी जाते हैं।"

"तो जाकर शिखू को यही बता दूं?"

मन्मथसिंह चल पड़े। ये सज्जन किसी बखेड़े या दांव-पेंच में रहना पसन्द नहीं करते, पर इस परिवार का ऐसा हाल है कि बार-बार उन्हें किसी न किसी झंझट में फंसना ही पड़ता है। शिखरिणी के हृदय पर विजय पाना ही उनका एकमात्र लक्ष्य है, इसीलिए फन्दा बीच-बीच में बड़ा जटिल-सा

हो जाता है। शिखरिणी को वे जैसे ठीक-ठीक समझ नहीं पाते। वह बहुत चुप रहती है, बहुत शान्त है, बहुत ही अच्छी है, फिर भी जाने कैसी ! ······सन्ध्या का धुंधलका छा रहा था······बहुत कुछ सोचते-सोचते मन्मथसिंह बगीचे को पार करने लगे। भला उस बढ़ई के छोकरे को मास्टर रखने की काकू को क्या पड़ी थी ? इतनी घनिष्टता हो जाने पर यह सब तो होने ही वाला ठहरा। फिर भी······कोई बलवान वयस्क व्यक्ति बच्चों के बचपन को जिस तरह सह लेता है मन्मथसिंह कुछ इसी ढंग से इन लोगों को सहन करते हैं। वे हॉकी के अच्छे खिलाड़ी भी हैं, उनके मनोभाव एक खिलाड़ी की तरह हैं, सब सुनकर भी उन्होंने शिखरिणी से ब्याह किया था, क्योंकि वे अच्छी चीज़ की कद्र करते हैं। मनपसन्द हॉकी-स्टिक मिल जाए तो सेकण्डहैण्ड खरीदने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। सब जान-सुनकर भी उन्होंने इस झक्की परिवार के साथ अपने को संलग्न कर लिया है, क्योंकि उन्हें ये लोग पसन्द हैं। हर आदमी कुछ अजीब ढंग का है और इसीलिए बड़ा मज़ेदार है। खेल के मैदान में हर खिलाड़ी जिस मनोभाव से चौकन्ना रहता है, ज़िन्दगी के खेल के मैदान में ये भी लगभग उसी तरह का मनोभाव लेकर चौकन्ने रहते हैं। खेल के कायदे-कानून पर चलकर आखीर में जीतना है। शिखरिणी के हृदय पर विजय पाना ही है, विघ्न-बाधा बहुत है, इसीलिए यह काम और दिलचस्प हो गया है।

बत्ती जलाकर हिरण्यगर्भ माइक्रोस्कोप के सहारे दत्तचित्त होकर खून की जांच करने में तल्लीन थे। मुहल्ले के मुंशी-मिस्त्री को टाइफायड हो गया था, उसीका खून था। डिफरेंशियल काउण्ट कर रहे थे। लिम्फो-साइट की संख्या बढ़ गई है। टाइफायड की शुरुआत में ये बढ़ जाते हैं। तपेदिक में और कालाजार में भी बढ़ जाते हैं। इन तीनों भिन्न-भिन्न रोगों में शरीर पर एक जैसी प्रतिक्रिया क्यों होती है, इन तीनों रोगो में क्या कहीं पर गूढ़ रूप से समानता है ? सोचते-सोचते वे डिफरेंशियल काउण्ट

करते जा रहे थे। चारों ओर सन्नाटा था। बीच में कभी-कभी कोंक्-कोंक् की आवाज़ सुनाई पड़ती है। उन्होंने सांप को खाने के लिए एक मेंढक दिया है। मरणासन्न मेंढक ही आवाज़ कर रहा है। टाइफायड की सुई देने पर भी सांप को अभी तक कुछ नहीं हुआ। बात-बात में फनफना उठता है। बन्दर का भी कुछ नहीं हुआ······डिफरेंशियल काउण्ट हो गया, उठ ही रहे थे कि दरवाज़े पर किसीने धीरे से थपकी दी।

"कौन ? नरेन ? अन्दर आ जाओ। ये दोनों टेस्ट-ट्यूब रेफ्रीजिरेटर में रख दो। वीड़ाल कल करूंगा।"

दरवाज़ा खोलकर जिसने प्रवेश किया, वह नरेन नहीं था, तुंगश्री थीं।

"यह क्या ? आप इस समय एकाएक ? आइए, आइए !"

जिस बहाने को सहारा बनाकर वे आई थीं, उसे प्रकट किया, "विनू और विशु की शादी का क्या हुआ, यही जानने के लिए आई हूं।"

"आपके जाने के बाद भी बहुत कुछ हो गया है। आइए, खाने के कमरे में चलें। चाय के साथ-साथ बातें होंगी। चाय लेंगी या कॉफ़ी ? आप तो सीधे स्टेशन से ही आ रही हैं न ? फिर तो भूख भी लगी होगी। कुंज, ओ कुंज !······"

हिरण्यगर्भ किसी बालक की तरह व्यस्त हो उठे—"चलिए, उस कमरे में पहले पानी चढ़ा दूं।"

कुंज आकर दरवाज़े पर खड़ा हो गया।

"जाकर खरिणी को खबर दो कि तुंगश्रीदेवी आई हैं, रात को रहेंगी, उनके खाने-सोने का पूरा इन्तज़ाम हो जाना चाहिए ! और देखो बड़े मालिक को यह बात मालूम न होने पाए।"

"अच्छा।"

"चलिए, अब उस कमरे में चलें। मेरा आज का काम-धाम पूरा हो चला है, खूब जमकर बातें होंगी।"

"यह आवाज़ किस चीज़ की आ रही है ?"

"सांप ने मेढक पकड़ रखा है, कोई डर नहीं, सन्दूक में बन्द है। चलिए

उस कमरे में···"

"आप उसे मेढक पकड़कर देते हैं ?"

"मैं मेढक नहीं पकड़ता, चेथरू मेहतर पकड़ता है। चलिए।"

चाय पीते समय वे तुंगश्री को विनू-विशु के बारे में पूरी घटना बता गए।

"अब विनू के मुक्त होते ही ब्याह हो जाएगा। सब ठीक-ठाक है, यहां तक कि पुरोहित भी !

"पुरोहित कौन है ?"

"मास्टरसाहब।"

"आपके काकाजी गड़बड़ नहीं करेंगे ?"

"गड़बड़ तो कर ही रहे हैं। यथासाध्य कर रहे हैं, मैंने सुना है कि वसीयतनामा बनाकर मुझे सम्पत्ति से वंचित कर दिया है, विनू को ताले में बन्द कर रखा है, गाली देकर विशु की चौदह पीढ़ियों को तार दिया है, गनीमत है कि विशु के परिवार में कोई ज़िन्दा नहीं है, अगर होता तो शायद उसे भी निकाल बाहर करते। डाक्टर रामचन्द्र को भी उठते-बैठते गाली देते हैं। यह सब तो कर ही रहे हैं, और क्या रह गया ? कहां शादी होगी, अगर यह मालूम हो जाए तो शायद वहां सिपाही भेजकर शादी रोकने की कोशिश करें। पर यह बात उन्हें मालूम ही नहीं होने दूंगा। शादी होने के बाद ही उन्हें इसकी खबर दी जाएगी।"

हिरण्यगर्भ हंसते हुए देखने लगे।

फिर उन्होंने कहा, "अब तो सबसे बड़ी समस्या है विनू को मुक्त करना। आप एक काम कीजिए, कल कलकत्ता जाकर एक अच्छी-सी रस्सी की सीढ़ी लेकर भेज दीजिए। अगर सीढ़ी विनू के कमरे तक फेंक दी जाए—जो सम्भव हो सकता है—तो उसीके सहारे वह शायद उतर सके।"

"अच्छा, मैं कल ही जाकर भेज दूंगी।"

थोड़ी देर चुप रहने के बाद ज़रा हंसकर हिरण्यगर्भ ने प्रश्न किया, "आपके मित्र केशवसामन्त के क्या हालचाल हैं ? उनके असफल अभियान

की पूरी कहानी उन्हें सुना दी क्या ?"

तुंगश्री थोड़ी देर चुप रहकर बोलीं, "उनके साथ सारा नाता अब मैंने खत्म कर दिया है। अब उनके साथ काम नहीं कर सकूंगी। उनका असली परिचय मालूम नहीं था, इसीलिए इतने दिन तक मैं उनकी पार्टी में रह गई थी।"

विस्मय से हिरण्यगर्भ कुछ देर उनकी ओर देखते ही रह गए। फिर बोले, "तो अब ?"

"अभी तो कुछ तय नहीं कर पाई, देश-सेवा ही करनी है, पर किस तरह करूंगी अभी कुछ निश्चय नहीं कर पाई।"

"मेरे काम में हाथ बटा सकेंगी ?"

कुछ देर चुप रहने के बाद तुंगश्री ने कहा, "क्या आप लोग मुझे साथ लेंगे ?"

"किसीको छोड़ देने से तो हमारा काम नहीं बनेगा, सभीको मिलाना ही तो हमारा स्वप्न है !"

"देखिए, इन सब लम्बी-चौड़ी बातों से मुझे बहुत डर लगने लगा है। यह सब मुखौटा है। अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए मैं क्रान्तिकारिणी बनी। जेल से बाहर आकर देख रही हूं, अन्याय उसी तरह से जारी है। पूंजीपतियों के अत्याचार से देश की जनता मर रही है। इसीलिए उनका नाश करने के लिए आपके मित्र की सहायता लेकर काम में उतरी थी। अब देख रही हूं कि आपके मित्र का उद्देश्य पूंजीवादियों को बरबाद करना नहीं है, बल्कि आपके परिवार के लोगों को बरबाद करना है; और उसकी प्रेरणा का मूल साम्यवाद नहीं, बल्कि उनका व्यक्तिगत प्रणय-कलह ही है। इसी कारण इस बखेड़े में नहीं रह सकी, पर मेरा मत नहीं बदला है, मैं अभी तक विश्वास करती हूं कि पूंजीपति ही देश के शत्रु हैं और उनका उच्छेद करना ही है, यही हमारा रास्ता है, अगर आप मुझे इस रास्ते पर कोई काम दे सकें तो मैं आ सकती हूं।"

"आपके मतवाद और मेरे मतवाद में कोई भेद नहीं है। जिस तरह

का असामाजिक, स्वार्थी, नास्तिक बुद्धिवादी पूंजीवाद दुनिया में चालू हो गया, यहां तक कि सोवियत रूस में भी जिस प्रकार का राष्ट्रीय पूंजीवाद है, मैं उस सबका विरोध करता हूं। मैं भी पूंजीवाद की बरबादी चाहता हूं, पर दो-चार मच्छर मारकर जैसे देश से मलेरिया खत्म नहीं किया जा सकता और उसे दूर करने के लिए जैसे यह देखना पड़ता है कि मच्छरों का जन्म ही न होने पाए और साथ-साथ मनुष्य की जीवनी शक्ति को बढ़ाने की कोशिश चलती रही है, ठीक उसी प्रकार दो-चार पूंजीपतियों का उच्छेदन करने से पूंजीवाद नष्ट नहीं हो सकता। व्यापक रूप से यह कोशिश करनी चाहिए कि पूंजीवादी मनोवृत्ति ही लोगों में न पनपने पाए। इसीलिए हमारा असली कर्मक्षेत्र तो स्कूलों में है, जहां आनेवाली पीढ़ियों का निर्माण हो रहा है। पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव में शिक्षित होकर जो सड़ गए हैं उन्हें लेकर हलचल मचाने से समय और शान्ति दोनों ही नष्ट होते हैं, वे जितने दिन रहेंगे उन्हें मनाकर, बहलाकर, मीठी बातों से उनकी सहायता लेकर ही काम बनाना पड़ेगा। देश का निर्माण ही अभी हमारे लिए असली काम है; और हमारा सबसे बड़ा काम है देश के बालक-बालिकाओं को तैयार करना, जिससे वे आलसी न होने पाएं, दूसरों पर निर्भर न रहें। वे आदर्शवादी हों जो रावण को राजा न समझकर राक्षस समझ सकें, धृतराष्ट्र की अपेक्षा विदुर का बड़प्पन वे जान सकें—'तन्नष्टं यन्नदीयते'—यही चीज़ सचमुच उनको संचालित करनेवाली प्रेरणा हो, इसी चेष्टा में हमें लगा रहना चाहिए। अगर हम यह कर सकें तो आप देखेंगी कि इस तरह पूंजीवाद अपने-आप ही देश से खत्म हो जाएगा। चलिए, आप मेरे मुरारीपुरवाले स्कूल का भार संभालिए। अगर आप सचमुच देश से पूंजीवाद का नाश करना चाहती हैं तो उसके लिए असली सेना तैयार कर लीजिए। दो-चार मिलों में हड़ताल करवा के अशान्ति के अलावा और क्या फायदा हो सकता है?"···हिरण्यगर्भ की आंखें उत्साह और उत्तेजना से चमक रही थीं।

तुंगश्री ने पूछा, "सोवियत रूस की कार्य-प्रणाली पर आपकी श्रद्धा नहीं

है क्या ?"

"कौन कहता है नहीं है ? ज़रूर है। उन्होंने तो आज़माकर दिखा दिया है कि विरोधी शक्ति की प्रचण्डता को कैसे पराजित किया जा सकता है। एस्कीमो लोगों पर भी मुझे श्रद्धा है। बर्फ के देश में भयंकर सर्दी में भी बर्फ की ही झोंपड़ी बनाकर सील मछली खाकर और अजीब-सी पोशाक पहनकर वे भी जीवन-संग्राम में विजयी रहे हैं। पर मैं एस्कीमो लोगों की नकल तो नहीं कर सकता, न सोवियत रूस की ही। हमारा प्राचीन इतिहास है, संस्कृति है, हमारा साम्यवाद उनसे कहीं बढ़कर बुनियादी है, हम दूसरों की नकल क्यों करें ? विदेशों की अच्छी चीज़ें लेकर हम भी अपनी नींव पर अपने भविष्य का निर्माण करेंगे। अपनी सहिष्णुता, अपना निष्काम कर्मयोग यानी संक्षेप में अपने भारतीय दृष्टिकोण को हम कभी नहीं छोड़ेंगे। धर्म ही हमारे राष्ट्रीय जीवन की नींव है। यह धर्म कोई विशेषवाद नहीं है, यह एक उदार मानवता है। हम इससे एक कदम भी नहीं हटेंगे।"

कुंज दरवाज़े के पास आकर कह गया, "दीदी ने कहा है, सब ठीक है।"

"अच्छा, तुम जाकर कोचवान से कह दो कि सवेरे गाड़ी तैयार रखे, ये शायद सवेरेवाली ट्रेन से ही चली जाएं।"

कुंज चला गया।

"ताल कट गया। तो······आप मुरारीपुर आ रही हैं ?"

"अभी ठीक से नहीं बता सकती।" तुंगश्री ने कुछ हंसकर जवाब दिया। सचमुच तुंगश्री कुछ तय नहीं कर पा रही थीं, घूम-फिरकर उनके मन में केवल यही आ रहा था कि बातों की फुलझड़ी से केशवसामन्त ने भी उन्हें आकर्षित किया था। नहीं, अब वे बातों में आनेवाली नह हैं।

"ओह, याद आया, मैंने स्पेक्ट्रोस्कोप के लिए आपको जो चिट्ठी दी थी, उसे दे दिया था आपने ?"

"नहीं तो, बिलकुल भूल गई थी मैं।"

"लड़के मुझे तकाज़े पर तकाज़ा भेज रहे हैं। अब की बार ज़रूर दे दीजिएगा, वह चीज़ मुझे चाहिए।"

"अच्छा, इस बार दूंगी, ज़रूर दूंगी।"

"तो चलिए, अब चला जाए। शिखरिणी शायद इन्तज़ार कर रही हो।"

"चलिए।"

जिस कमरे में तुंगश्री पहले दिन आई थीं, दोनों ने आज फिर उसी में प्रवेश किया, पर शिखरिणी वहां नहीं थी, एक नौकर और एक रसोइया वहां इन्तज़ार कर रहा था। वे बड़े अदब से उठ खड़े हुए और बोले कि बगलवाले कमरे में खाना लगाया जा रहा है।

"अच्छा, लगा दो।"

नौकर के साथ रसोइया चला गया।

हिरण्यगर्भ हंसकर बोले, "शिखु शायद शर्म के मारे आपके सामने न आ रही हो। शायद उसे मालूम हो गया है कि केशव और उसके सम्बन्ध में वे सारी बातें आप भी जान गई हैं। अच्छा, केशव बीमार है क्या?"

"नहीं तो, मैं तो उन्हें बिलकुल तन्दुरुस्त देख आई हूं।"

हिरण्यगर्भ कुछ हंसे।

"हंस क्यों रहे हैं?"

"वह शायद पागल हो गया है। उसने शिखु को एक चिट्ठी लिखी है। संयोग से वह मेरे हाथ पड़ गई—शायद चिट्ठी वहीं छोड़ आया···नहीं, यह रही जेब में ही—पागल न होने पर कोई ऐसी चिट्ठी लिख सकता है!"

उन्होंने चिट्ठी तुंगश्री को थमा दी। तुंगश्री उसे पढ़कर थोड़ी देर स्तब्ध रह गईं।

नौकर बगल के दरवाज़े से बोला, "खाना लग गया है।"

"चलिए।"

एक ग्रादमी के लिए ही खाना लगाया गया था।

"ग्राप नहीं खाएंगे ?"

"मैं तो खुद ही बनाकर खाता हूं। जाकर खा लूंगा, सब तैयार है, ग्राप बैठिए।"

तुंगश्री ने खाना शुरू कर दिया। हिरण्यगर्भ ने कहा, "ग्रब ग्रपने ग्रांचल में दो गांठें बांध लीजिए, एक तो रस्सी की सीढ़ी के लिए ग्रौर दूसरी स्पेक्ट्रोस्कोप के लिए। एक ग्रौर काम में मदद कर सकें, तो बड़ा ग्रच्छा रहे, पर ग्रापसे हो सकेगा ?"

"कहिए।"

"ग्रपनी बान्धवी हीराबाई को किसी तरह यहां ला सकेंगी ?"

"ग्रलका तो दो-एक दिन में ही कलकत्ता पहुंचेगी। मुझे पत्र लिखा था।"

"ग्रच्छा !" हिरण्यगर्भ की ग्रांखें प्रदीप्त हो उठीं।

"क्यों उससे क्या काम है ?"

"इनकी शादी हो जाने पर काकू जो बखेड़ा मचाएंगे, उसे बस हीराबाई ही संभाल सकेंगी। काकू यदि एक बार संगीत में तन्मय हो सकें तो फिर ग्रौर कुछ गड़बड़ नहीं होगा। ग्राप उन्हें यहां भेज सकती हैं ?"

"कोशिश करूंगी।"

"ग्रच्छा, ज़रूर कीजिएगा।"

"ग्रच्छा।"

भोजन समाप्त करके तुंगश्री सोने चली गईं।

हिरण्यगर्भ ने महल से बाहर ग्राते ही उस ग्रल्सेशिमन कुत्ते को बाहर खड़ा देखा। एकाएक जैसे उनका बचपन लौट ग्राया। वे उसके साथ दौड़-दौड़कर खेलने लगे। उनके मन में खुशी की हिलोरें-सी उठने लगीं। उत्साह का ग्रावेग उनके शरीर की शिराग्रों-उपशिराग्रों में प्रवाहित होने लगा।

१३

शाम से ही मेघसुन्दर सप्तम में चढ़े थे । कोई आया नहीं था, यहां तक कि सर्वरंजन और दामोदर तक नहीं । मन्मथ ज़मींदारी देखने के बहाने दूर के किसी इलाके में चले गए थे । पन्द्रह-बीस दिन से पहले लौटने की कोई उम्मीद नहीं थी । शिखरिणी इतनी चुप है कि उससे बात करना और दीवार से बोलना एक ही बात है । मन के रुद्ध उत्ताप ने इकट्ठे होकर उसे बिगड़े हुए सेफ्टी वाल्ववाले बायलर की तरह बना दिया था। काश, किसीसे बात करने का मौका मिलता—हिरण्य, विशु, विनू, तुंगश्री, केशव—आजकल के प्रगतिवादी छोकरे-छोकरियों को अगर जी-भरकर गालियां दे सकते तो मन का बोझ कुछ हल्का तो हो ही जाता, पर किससे बोलें, कोई आया ही नहीं । केवल गनपतसिंह संगीन ताने दिन-रात पहरा दे रहा है। दोनों जून कुछ खाने-भर के लिए जाता है, बस । उसे छोड़कर और सबने उन्हें त्याग दिया है । शिखरिणी के ज़रिये विनू से फिर दोस्ती करने की कोशिश की, पर वह व्यर्थ रही। विनू ने कहला भेजा है कि वह मर भी जाए तो विशु को भूल नहीं सकती। उसके अलावा वह और किसीसे शादी नहीं कर सकती । मरे तो मरने दो, हरामज़ादी ! अपना बेला लेकर कुछ बजाकर मन बहलाने की व्यर्थ चेष्टा कर रहे थे । घुटने का दर्द फिर से बढ़ गया । हिलने-डुलने में कुछ अधिक तकलीफ हो रही है। फोन की घंटी बजी। भौंहें सिकोड़कर उसकी ओर देखा, जैसे वह भी कोई दुश्मन ही हो । फिर बेला रखकर रिसीवर उठा लिया । कोई कुछ शेयर थमाना चाहता था । "उफ़···नहीं, मैं अब नहीं खरीदूंगा···क्या मुसीबत है, फिर भी नहीं छोड़ता···नहीं, नहीं, नहीं, मैं नहीं लूंगा, नहीं लूंगा।" उन्होंने खड़ाक से रिसीवर रख दिया । कैसी बला आ जुटती है !

उन्होंने फिर बेला उठा लिया । अर्धसमाप्त केदारा की गत फिर

शुरू से ही बजाने लगे । एकाएक जम भी गया । तमीजमियां का अभाव खलने लगा, तबला होने पर खूब जमता । वे आंखें मूंदकर तन्मयता से बजाते रहे । खट से आवाज़ होते ही आंख खोलकर देखा, दरवाज़े पर डाक्टर रामचन्द्र खड़ा था, हाथ में बैग लिए मुस्कराता हुआ । उनका खून खौल उठा, फिर सुई लगाने आया है ।

"क्या है ?"

कलाईघड़ी की ओर देखते हुए डाक्टर रामचन्द्र ने कहा, "सुई देने का समय हो गया ।"

"तुम्हें शर्म नहीं आती ! सुई लगा-लगाकर पिनकुशन बना दिया, पर दर्द रत्ती-भर नहीं घटा सके । सवेरे ही तो सुई लगाकर गए, अब फिर क्या है ?"

"सिविलसर्जन से सलाह ली थी, उन्होंने विटामिन-बी और पेन्सिलीन सुबह और शाम देने को कहा है ।"

मेघसुन्दर बम की तरह फट-से पड़े, "निकलो, निकल जाओ यहां से ! कितने नीमहकीम, गंवार, मूर्ख इस मुल्क में जुट गए हैं ! विटामिन-बी और पेन्सिलीन, सिविलसर्जन...खाली पैसा लूटने की फिक्र...निकलो, निकलो...अभी निकल जाओ ।"

उन्होंने हाथ के बेले को ज़ोर से डाक्टर की ओर फेंक मारा। एक कुर्सी के हत्थे से टकराकर बेला चूर-चूर हो गया। रामचन्द्र उसी तरह मुस्कराता हुआ एक मिनट खड़ा रहा, फिर चला गया । बाहर के कमरे में बैठकर ब्रोमाइड मिक्सचर का एक नुस्खा लिखकर सावधानी से गनपत को दे गया और यह कह गया कि शिखु दीदी से कहना किसी तरह से फुसला-बहला कर यह आज रात को बाबूजी को पिला दें । उनकी तबीयत बहुत खराब है ।

डाक्टर के चले जाने पर मेघसुन्दर पागलों की तरह अपने बाल नोचने लगे । परिपूर्ण ऐश्वर्य के बीच बैठकर वे एक असहाय व्यक्ति की तरह कातर होकर अकेले रोने लगे ।

रात गहरी हो चुकी थी।

मेघसुन्दर के अन्दर-महल का दालान अजीब-सा दिखाई पड़ रहा था। दीवार पर टंगी देवी-देवताओं की तस्वीरें इस धीमी रोशनी में अब तस्वीरें नहीं···बल्कि जीवित-सी हो उठी थीं। प्रखर आलोक में जो रेखाओं और रंगों के कारागार में बन्दी थे, वे अब जैसे इस गहरे धुंधलके में मुक्ति पा गए हों। विशेष रूप से दालान के एक छोर पर अम्बिकासुन्दरी की लम्बी तस्वीर मानो नीरव भाषा में बातें कर रही हो। उनके होंठों पर मुस्कराहट एक तीखी तलवार की तरह चमक रही थी। अम्बिकासुन्दरी मेघसुन्दर की दादीमां थीं। स्वेच्छा से पति के साथ सती हुई थीं, यह चित्र उनके यौवन के दिनों का था। [illegible] बनाया था, उसने उनके चेहरे पर जो मृदु आभा प्रस्फुटित की थी, वह अवर्णनीय थी। व्यंग्य तथा स्निग्धता, शालीनता और उसके साथ-साथ महिमा जैसे उस मुस्कराहट में मूर्त हो उठी हो। धीमी रोशनी में यह और भी स्पष्ट हो रहा था। पश्चिम की खुली खिड़की से अस्तगामी शुक्ला एकादशी का चन्द्रमा दिखाई पड़ रहा था। काले बादलों के स्तूप को रजत-धारा से अभिषिक्त करते हुए वह दिगन्त-रेखा में उतरता जा रहा था। मन्द वायु से एक पर्दा हिल रहा था। उसके साथ-साथ एक अजीब-सी काली छाया हिल रही थी, लगता था जैसे कोई छायामयी रमणी झांक-झांककर देख लेती है और हट जाती है। जगद्धात्रीदेवी के सिंह की आंखें जल-सी रही थीं। महाकाली की मुण्डमाला का हर मुण्ड हंस रहा था। देवी दुर्गा के पद-तल में त्रिशूल ने बिंधा हुआ महिषासुर नीरव भाषा में चीख रहा था—मैं नहीं मरा हूं···मैं कभी नहीं मरूंगा। दीवार पर घड़ी का पेंडुलम टक्-टक् करता हुआ अविराम डोल रहा था। विचित्र पंखों-वाली एक तितली पंख फैलाकर चुपचाप घड़ी के डायल पर बैठी थी। आकाश के चांद से लेकर उस तितली तक सब जैसे चुपचाप किसी षड्-यन्त्र में शामिल हो गए हों। दालान के एक छोर पर विनू का कमरा था। दरवाज़े पर बड़ा-सा ताला लटक रहा था। खुली खिड़की से विनू की दबी

हुई सिसकियां बीच-बीच में सुनाई पड़ रही थीं।

खट से एक आवाज़ हुई, दालान के दूसरे छोर के एक कमरे का दरवाज़ा खुल गया। निःशब्द पग रखती शिखरिणी बाहर आई। स्तब्ध और उत्कर्ण होकर वह विनू की दबी हुई सिसकियां सुनती रही। उसे ऐसा लगा कि यह केवल विन का ही रोना नहीं है, बहुतों का रोना इसके साथ मिला हुआ है, उसका अपना भी। यह मर्मभेदी क्रन्दन अनादि काल से गूंज रहा है! जिसे चाहती हूं, वह नहीं मिला। किसी भी तरह नहीं मिला। युग-युगान्तर से रोदन की यह फल्गुधारा अंधेरे की ओट में जा रही है। अम्बिकासुन्दरी के चेहरे की ओर शिखरिणी की दृष्टि आकर्षित हुई। वह बड़ी देर तक तस्वीर की ओर एकटक देखती रही। फिर सावधानी से दालान से चली गई।

ब्रोमाइड के नशे में मेघसुन्दर बेहोश-से हो पड़े थे, फिर भी उन्हें लगा, जैसे कोई उनके सिरहाने के पास कुछ कर रहा हो।

"कौन ?"

"मैं शिखु हूं।"

"इतनी रात में क्या कर रही है ?"

"आपकी मसहरी को ठीक से खोंस रही हूं, इस ओर खुल गई है।"

मेघसुन्दर कुछ और बोले बिना करवट लेकर पड़ रहे। उनके सिरहाने से चाबी का गुच्छा निकालकर शिखरिणी दालान में आ खड़ी हुई, फिर धीरे-धीरे विनू के कमरे की ओर चली गई।

विनू लेटी-लेटी रो रही थी। शिखरिणी को देखकर बिस्तर पर बैठ गई। शिखरिणी रोज़ उसे नहलाकर खाना खिलाकर जाती है, पर इस समय तो कभी नहीं आती थी ?

"तेरी साड़ियां कहां हैं ?" शिखरिणी ने धीरे से पूछा। फिर खुद ही अरगनी की ओर बढ़ गई। चार-पांच साड़ियां उतारकर गांठें लगाकर एक रस्सी-सी बनाई। फिर उसे खिड़की में बांध कर बाहर की ओर लटका दिया।

"चल मेरे साथ।"

"कहां?"

"चल तो सही।"

तुंगश्री को अच्छी तरह नींद नहीं आई थी, वह बिस्तर पर लेटे-लेटे ही करवटें बदल रही थी। बाहर एक उल्लू के जोड़े के कर्कश प्रेमालाप से उनकी तन्द्रा में बार-बार विघ्न पड़ जाता था। एकाएक एकसाथ तमाम पक्षी चारों ओर शोर मचाने लगे, फिर सब चुप हो गए। अल्सेशियन कुत्ता एक बार भूंककर खामोश हो गया। केशवसामन्त की आखिरी करतूत का प्रत्यक्ष प्रमाण जैसे मूर्तिमान होकर उनकी मुंदी आंखों के सामने घूम रहा था···'तुम शायद मुझे भूल गई हो, पर मैं तुम्हें नहीं भूला हूं। आओ।' पर दूसरे क्षण ही चपला का वह नृत्य-हिल्लोलित रूप और उसके सामने गद्गद केशवसामन्त की आकृति उनकी आंखों में डोल गई। दांत भींचे वे चुप पड़ी रहीं। फिर उन्होंने स्वप्न में मास्टरदादा सूर्यसेन को देखा, वे जैसे कह रहे हों—'डर कैसा? सत्य को पकड़े रहो, अन्याय के खिलाफ सिर उठाओ, जब मृत्यु-भय को तुच्छ कर सकी हो तो डर कैसा?'

"अन्दर आ सकती हूं?" मृदु स्वर में किसीने पूछा।

तन्द्रा टूट गई, आंखें खोलकर देखा, दरवाज़े के सामने कोई खड़ा था। बेडस्विच दबाकर बत्ती जलाई तो सामने शिखरिणी और विनू दिखाई पड़ीं। तुंगश्री बिस्तर पर से तुरन्त उठ आईं।

शिखरिणी आगे बढ़कर शान्त स्वर में बोली, "विनू को आपके पास छोड़े जा रही हूं। इसे भैया के पास पहुंचा दीजिए। मैं ही पहुंचा देती, पर पौ फटने ही वाली है। अगर किसीने देख लिया तो मैं ज़रा संकट में पड़ जाऊंगी। मैं जाती हूं।"

दूसरे ही क्षण वह दबे पांवों चली गई।

विनू को लेकर फिटन में जब हिरण्यगर्भ और तुंगश्री आकाश-विहार

पहुंचे तो सवेरा हो गया था। पूर्व का आकाश रक्तराग से रंजित हो गया था। छत पर पहुंचकर इन लोगों ने देखा कि मास्टरसाहब बालकों के साथ पूर्व की ओर मुंह किए हुए प्रभात वन्दना कर रहे थे। पंक्ति लगाकर हाथ जोड़े हुए लड़के बैठे हैं। विशु भी एक किनारे बैठा था। मास्टरसाहब के गम्भीर स्वर में सब स्वर मिलाकर गा रहे थे—

अन्धकार हर अन्धकार हर
जय जय जय जय, हे सूर्यशंकर !
दूर कर भय हे,
मृत्युंजय हे,
उद्भासित कर विवर्ण अम्बर
हे सूर्यशंकर !

तुंगश्री उसी दिन लौट गईं।

हिरण्यगर्भ उन्हें ट्रेन पर छोड़ने गए थे। ट्रेन छूटते समय उन्होंने एकबार फिर याद दिला दी,"जाते ही हीराबाई को भेज दीजिएगा। और आते समय स्पेक्ट्रोस्कोप लेते आइएगा .....और शादी के दिन यहां आने की कोशिश कीजिएगा !"

चलती ट्रेन की खिड़की से झांककर तुंगश्री बोलीं, "अच्छा।"

१४

निर्दिष्ट दिन गोधूलि-लग्न में विशु-विनू का ब्याह हो गया। आकाश-विहार की छत पर शहनाई बज रही थी। यमन कल्याण का सुर सन्ध्या के आकाश को आकुल कर रहा था।

तीसरी मंज़िल के कमरे में बैठे तुंगश्री और हिरण्यगर्भ बातें कर रहे थे।

"आपकी सखी हीराबाई कलकत्ता क्यों आई थीं ?"

"योंही शायद। उनका अपना मकान है, कभी-कभी आकर वहां रहती हैं।"

"आप क्या बताकर उन्हें ले आईं?"

"सब खोलकर बता दिया। सुनकर वे राज़ी हो गईं।"

कुछ देर चुप रहने के बाद तुंगश्री ने कहा, "आपके मुरारीपुरवाले स्कूल का जो छात्र हर-पार्वती की मूर्ति उपहार में दे गया, क्या उसे उसने खुद ही गढ़ा है।"

"और क्या!" कुछ रुककर फिर उच्छ्वास-भरे स्वर में हिरण्यगर्भ बोल उठे, "बुनियादी तालीम की विशेषता ही यही है—हर आदमी में जो स्रष्टा बैठा हुआ है, उसे प्रकाश में लाना। सृष्टि के आनन्द में यदि मग्न न हो पाए तो यह जीवन व्यर्थ है। किसी महान चीज़ में लिप्त हुए बिना जीवन का स्वाद ही नहीं मिलता।"

"मैं भी तो देश-प्रेम में मस्त हो गई थी, फिर भी मेरी ज़िन्दगी फीकी क्यों हो गई?"

"फीकी हो गई? ऐसा हो ही नहीं सकता। तो फिर आप खूब मस्त ही नहीं हो पाई थीं या शायद आप किसी छोटी चीज़ अथवा मतवाद में ही मस्त हो गई थीं, जो जल्दी ही खत्म हो गई।"

"सब कुछ क्या आखिर तक खत्म नहीं हो जाता? आप जो प्रयोग लेकर मस्त हैं, क्या वह भी एक दिन खत्म नहीं हो जाएगा? क्या वह भी किसी सिद्धान्त की जांच-परख ही नहीं है?"

"पर थ्योरी ही उसकी असली चीज़ नहीं है, वह किसी सत्य को खोज पाने का एक काल्पनिक मार्ग-मात्र है। मेरा असली उद्देश्य सत्य को पाना ही है। मैंने एक काल्पनिक मार्ग चुन लिया और उस मार्ग के अन्त तक पहुंचा, अगर सत्य मिल गया तो ठीक और न मिला तो कोई और मार्ग चुन लूंगा, एक नया मार्ग चुन लेने की एक नई खुशी में फिर मस्त हो जाऊंगा। भला इसका कोई अन्त है?"

"अच्छा, आप जो प्रयोग कर रहे हैं, वह कितने दिन तक चलेगा?"

"पिछले पांच वर्षों से बहुत तरह से जांच कर चुका हूं, उसका सूक्ष्मतम विवरण मैंने लिख रखा है, उन्हें मिलाकर हिसाब लगाना पड़ेगा। बन्दर पर जो प्रयोग कर रहा हूं उसका क्या फल होता है, इसे भी देखना पड़ेगा, अभी तक तो उसका कुछ हुआ नहीं।"

"अच्छा, यह सब प्रयोग करना आपको बहुत अच्छा लगता है क्या ?"

"अच्छा न लगता तो भला इसे कर पाता ! मेरी प्रयोगशाला की अलमारी में सारे रेकार्ड मौजूद हैं, वही मेरे जीवन के श्रेष्ठ मुहूर्तों का परिचय है। उसमें मुझे कितना आनन्द मिलता है, यह मैं आपको ठीक-ठीक नहीं समझा पाऊंगा।" फिर कुछ रुककर बोले, "आप क्या आज ही लौट जाएंगी ?"

"हां, ब्याह तो हो गया, अब रहकर क्या करूंगी ?"

"कलकत्ता में आजकल आप कहां रहती हैं ? आप तो कह रही हैं कि केशव का घर छोड़ दिया।"

"मैं अब अलका के घर में रहती हूं।"

"ओह······अगर इस ट्रेन से जाना हो तो आपको अब चलना चाहिए।"

"चलिए।"

फिटन में दोनों जा रहे थे।

रास्ते में नरेन से भेंट हुई। वह तेज़ी से साइकल पर आ रहा था। उसने जो खबर दी वह जितनी अप्रत्याशित थी, उतनी ही भयानक भी। अभी-अभी कुछ लोगों ने मोटर से आकर हिरण्यगर्भ की प्रयोगशाला पर एकाएक हमला कर दिया था। कुल्हाड़ी से दरवाज़े तोड़-फोड़कर प्रयोगशाला का सारा सामान चूर-चूर करके उसमें आग लगा दी। सब बरबाद करके चले गए। नरेन का कहना था कि उन लोगों में केशवसामन्त भी थे। तुंगश्री की आंखों के सामने चपला के घर का नाचवाला वह दृश्य उभर आया और उन्हें केशवसामन्त की वे बातें याद आईं—'मुझे गुंडों

की ज़रूरत है। बन्दूक, छुरा, कुल्हाड़ी, कटार लेकर अब मैं खुद ही जाऊंगा।'

पर वे कुछ नहीं बोलीं, अवाक् रह गईं। केवल उनकी आंखें जलने-सी लगीं।

१५

एक के बाद एक जल्दी-जल्दी कई चोटें पड़ने से मेघसुन्दर ऐसे मुरझा गए थे कि जब विशु-विनू के विवाह की खबर मिली तो उनमें क्रुद्ध होने की शक्ति भी नहीं रह गई थी। उन्हें विवाह की खबर एक चिट्ठी के ज़रिये मिली। हिरण्यगर्भ ने एक दिन पहले ही चिट्ठी लिखी थी, जिससे ब्याह के दूसरे दिन ही वह उन्हें मिल जाए—

"श्रीचरणेषु,

विशु और विनू का ब्याह कर दिया। जो अनिवार्य था, उसे आप रोक नहीं पाए। इसके लिए मन में ज़रा भी ग्लानि न आने दीजिए। वे दोनों ही आपपर श्रद्धा रखते हैं।

आप उन्हें आशीर्वाद दीजिए, वे आकाश-विहार में हैं। मैं सम्पूर्ण हृदय से यह आशा करता हूं कि आप हमारी महान उदार कुल-मर्यादा की आन रखेंगे।

प्रणत,

—हिरण्य"

यह चिट्ठी पाकर मेघसुन्दर शायद बम की तरह फट पड़ते, पर अब उनमें शक्ति नहीं रह गई थी। सवेरे उठकर जब उन्होंने शिखरिणी से यह खबर सुनी कि विनू खिड़की में साड़ी बांधकर उसीके ज़रिये उतरकर भाग गई है तो वे दंग रह गए। विनू पर उनका ज़ोर था, उन्हें यही विश्वास था और उसी ज़ोर पर वे उसके अनुचित आचरण की सज़ा देने पर उतारू थे। एकाएक उन्हें अब यह पता चला कि उसपर उनका कोई ज़ोर नहीं

था। वह अनायास उन्हें छोड़कर चली गई है। अहंकार से फूला हुआ रबर का बेलून जैसे सूई चुभ जाने से पिचककर रह गया। दिन-भर उन्होंने एक भी बात न की, कुछ खाया नहीं, चुपचाप बैठे रहे। शिखरिणी आकर कई बार चुपचाप लौट भी गई। उससे कुछ बोलते न बना। दूसरे रोज़ सवेरे अप्रत्याशित रूप से हीराबाई आ पहुंची, तो वे जैसे कुछ और अप्रस्तुत हो गए। उन्हें ऐसा लगा कि प्रसन्नता प्रकट करने के साथ उनका स्वागत कर पाने की शक्ति भी अब उनमें नहीं रही। वे भीतर ही भीतर खोखले हो गए हैं, केवल ऊपर का व्यर्थ आडम्बर-मात्र बना हुआ है। इतने दिनों का साथी वह बेला भी एकाएक चूर-चूर हो गया था। हीराबाई ने अपने आने का जो कारण बतलाया, उसे सुनकर वे और भी लज्जित हो गए। हीराबाई ने कहा कि अबकी बार कलकत्ता जाकर उन्होंने कई नये बंगला गीत सीखे हैं, उन्हीं गीतों को सुनाने के लिए ही वे यहां आई हैं, क्योंकि मेघसुन्दर जैसे कद्रदान और गुणी व्यक्ति को अपना संगीत सुनाना वे अपना सौभाग्य मानती हैं। यह सुनकर शर्म से मेघसुन्दर का सिर झुक गया। हृदय के भीतर एक हाहाकार-सा मच गया। वे ज़िन्दगी-भर संगीत को ही लेकर रहे, पर उन्हें कुछ मिला नहीं। ज़िन्दगी-भर वे ढूंढ़ते ही रहे। एक प्यासा आदमी जैसे पानी की खोज में भटकता है, वैसे ही वे भी व्याकुल होकर भटकते रहे। कई बार ठोकर खाई, औंधे मुंह गिरे, पर पानी उन्हें नहीं मिला। भटकना ही भटकना रहा। बाहर के लोग उन्हें घेरकर चाहे जितनी शाबाशी दें, पर उन्हें खुद तो मालूम ही है कि वे कैसे संगीत-शास्त्री हैं। बाहर के लोगों की वाहवाही की वे परवाह नहीं करते, क्योंकि उन्हें मालूम है कि उन निकम्मे दरबारियों की प्रेरणा का उद्गम मेघसुन्दर का संगीत-ज्ञान नहीं बल्कि उनका बैंक-बैलेंस है। पर हीराबाई के मुंह से यह बात सुनकर वे सचमुच लज्जित हो गए। हीराबाई उनके खुशामदी दरबारियों में से नहीं है, सचमुच उन्हें संगीत का गहरा ज्ञान है, तो उन्होंने ऐसी बात क्यों कही? तो क्या मेघसुन्दर ने अपने ऐश्वर्य की चकाचौंध से उन्हें भी ठग लिया है? तो क्या उनका मुखौटा उनके चेहरे से इस

तरह मिल गया है कि उनका स्वरूप पहचानना हीराबाई की शक्ति से बाहर हो गया ? सचमुच ही उन्हें जाने कैसी लज्जा और खेद का अनुभव होने लगा।

पर हीराबाई ने धीरे-धीरे खूब महफिल जमा ली। टोड़ी, भैरवी, आसावरी, गौड़ सारंग, पीलू, पूर्वी, मुलतानी, यमन कल्याण एक के बाद एक गाती रहीं, गाती ही गईं, सुबह से शाम तक। स्वर-सप्तक के विभिन्न और विचित्र प्रवाह में अवगाहन करके धीरे-धीरे मेघसुन्दर का मन शान्त हो गया। एक उदार उदासीनता धीरे-धीरे उनके हृदय को भरने लगी। संगीत के पालने में झूलते-झूलते वे धीरे-धीरे फिर से आत्ममर्यादा के स्तर पर पहुंच गए; जैसे अपने आपे में लौट आए।......

यमन कल्याण का गुरु-गम्भीर आलाप चल रहा था। इसी बीच खबर मिली कि हिरण्यगर्भ की प्रयोगशाला पर डाका डाला गया है। हिरण्यगर्भ घर में नहीं हैं। सुनकर मेघसुन्दर बहुत विचलित हो गए। उनकी अपनी कुल दसेक बन्दूकें थीं, तुरन्त दस सिपाहियों को लेकर गनपतसिंह ने डाकुओं पर गोली चलाना शुरू कर दिया। वे खुद भी धीरे-धीरे पांव घसीटते हुए छत पर जाकर अपनी राइफल से गोली चलाने लगे। किसी ज़माने में वे बहुत बड़े शिकारी माने जाते थे। डाकुओं का दल भाग गया। मेघसुन्दर के सिपाही अगर न पहुंच जाते तो सारी प्रयोगशाला ही वे ध्वंस कर देते। सिपाहियों के आने से कुछ बच गया।

इसके बाद फिर संगीत नहीं जम सका। हिरण्यगर्भ की खोज में आदमी भेजकर उन्होंने थाने में भी इत्तला करा दी। फिर विचलित होकर कमरे में चहलकदमी करते रहे। शिखरिणी ने खड़े-खड़े सारी बातें सुन लीं, फिर चुपचाप वहां से चली गई। इसपर मेघसुन्दर और भी विचलित हो उठे। वह कुछ बोलती क्यों नहीं ? इस तरह देर तक देखते रहने और फिर चले जाने का मतलब क्या हो सकता है ? ऐसे समय में मन्मथ भी वहां जाकर रह गया। थोड़ी ही देर में शिखरिणी सेंक का सामान लेकर आ गई। वे समझ गए कि इत्र का बेहद इस्तेमाल हुआ है। पल-भर में ही कमरा इत्र

की खुशबू से भर गया।

"काकू, बैठो सेंक कर दूं।"

मेघसुन्दर जैसे कृतार्थ हो गए। ऐसी ही किसी चीज़ के लिए वे मन ही मन प्यासे थे। बाध्य बालक की तरह वे बैठ गए।

"क्या हो रहा है, इस साल घोर अकाल है। लोगों को खाने को नहीं मिलता, डाका नहीं डालें तो क्या करें?"

शिखरिणी बिना उत्तर दिए चुपचाप सेंक करने लगी।

"तू कुछ बोलती क्यों नहीं?"

फिर भी शिखरिणी थोड़ी देर चुप रहने के बाद मुस्कराती हुई बोली, "मैं क्या बोलूं?"

मेघसुन्दर को लगा कि सच तो है, शिखरिणी इस बारे में और कहेगी ही क्या?

"हिरण्य का कुछ पता नहीं चला?"

"क्या जानूं?"

"वह उस बढ़ई के छोकरे को लेकर मगज मार रहा होगा और इधर उसकी अपनी सम्पत्ति बरबाद हो रही है। इस तरफ उसका ख्याल ही नहीं।"

शिखरिणी ने इस बात का भी कोई उत्तर नहीं दिया। चुपचाप सेंक खत्म करके खड़ी हो गई।

"काकू, तुम रात को क्या खाओगे?"

"कुछ नहीं खाऊंगा।"

"अंडे भरकर दो-चार कचौड़ी......"

"नहीं, नहीं......मेरे लिए कुछ नहीं बनाना है।" अधीर होकर मेघसुन्दर चिल्ला पड़े।

"तुम्हारे ही लिए नहीं बनाने जा रही हूं। मैंने बना रखा है, खाओ तो दो-चार ले आऊं?"

"छोड़ो, कोई ज़रूरत नहीं।"

शिखरिणी चल पड़ी। तकिए के सहारे मेघसुन्दर चुपचाप बैठे रहे। यहां-वहां की चिन्ताओं के अशान्त प्रवाह में मन को तैरने के लिए छोड़ दिया। अतीत की बातें याद पड़ीं। बड़े भाई पंडित विशुद्धसुन्दर की याद आई। नाम की मर्यादा उन्होंने रखी थी। विशुद्ध और सुन्दर जीवन ही उन्होंने व्यतीत किया था। अध्ययन में ही उनका जीवन बीता। जिन दिनों वे उपनिषद् लेकर मस्त थे, उन्हीं दिनों हिरण्यगर्भ का जन्म हुआ था, इसीलिए उसका नाम हिरण्यगर्भ रखा था। उन्होंने कहा था—'यह केवल मेरा नहीं सबका है, वह आज नहीं जन्मा है, वह चिरन्तन है, वह अनादिकाल से पंचभूत में लीन है, इसीलिए वह हिरण्यगर्भ है।' एकाएक मेघसुन्दर को लगा कि अपने पिता की भविष्यवाणी हिरण्यगर्भ ने सत्य प्रमाणित कर दी। सचमुच वह किसी एक का नहीं, सबका है। उसका अपना कुछ भी नहीं है। वह सब कुछ लुटा देता है, यानी संगीत के स्वर की भांति अपने को भी उत्सर्ग कर रहा है। उनके मन में संगीत की उपमा आ गई। एक बड़ा उस्ताद जैसे संगीत के यन्त्र के सहारे अपने ही मन के संगीत को बजाता है, हिरण्यगर्भ उसी प्रकार अपनी प्रयोगशाला के सहारे अपने को बजा रहा है। असल में वह भी एक स्वरकार ही है। यह बात मन में आते ही उनका मन प्रसन्न हो गया। यह तो होकर ही रहेगा। उनके कुल में सब कोई संगीत के कद्रदान थे। उनके पूर्वपुरुष वसन्तसुन्दर का नाम आज तक उस्ताद-घरानों में याद किया जाता है। बहुतों का कहना है कि वसन्त राग की सृष्टि उन्होंने ही की थी। यह बात तो खैर मेघसुन्दर नहीं मानते, क्योंकि प्राचीन शास्त्रों में भी इस राग का नाम आता है। पैसों के कारण शायद किसीने खुशामद के लिए यह बात फैला दी होगी। अब उन्हें लगा कि पैसा कितनी अद्भुत वस्तु है। उसके बिना काम नहीं बनता और उसके होने से कितना बखेड़ा भी होता है। तरह-तरह के फन्दे डालकर लोग उसे छीनने की कोशिश करते हैं। खुशामदबाज़ी से, शेयर बेचकर हड़ताल करके, यहां तक कि डाका डालकर भी। हिरण्य की प्रयोगशाला तो चूर-चूर हो गई, अब वह किस चीज़ के सहारे अपने को

बजाएगा ? एकाएक याद आया कि उनका बेला भी टूट चुका है । उन्हें ऐसा लगा, मानो हिरण्य उनके बहुत पास आ खड़ा हुआ है। हिरण्य लुट गया है, उसे चोट लगी है। वह क्या फिर कभी प्रयोगशाला बना सकेगा ? वे तो शायद एक बेला फिर खरीद लें, पर हिरण्य क्या एक प्रयोगशाला फिर से खरीद सकेगा ? पेटेण्ट दवाओं का फार्मूला बेचकर जो थोड़ी-सी रकम मिली थी, वह तो ज़रूर इतने दिनों में उड़ा दी होगी। अपनी ज़मींदारी से भी एक पैसा लेनेवाला नहीं। उत्तेजित होकर वे उठ खड़े हुए। सेंक के बाद लगता है घुटने का दर्द कुछ घट गया है, टीस के साथ दर्द तो नहीं उठा। वे दीवारवाली अलमारी के पास गए। उस दिन उन्होंने गुस्से में आकर हिरण्यगर्भ को सम्पत्ति से वंचित करते हुए जो वसीयतनामा बनाया था, उसे निकाला, भौंहें सिकोड़े थोड़ी देर उसकी ओर घूरते रहे, फिर उसको टुकड़े-टुकड़े करके फाड़ फेंका। फाड़ने के बाद उन्हें बड़ा आनन्द आया। वे कमरे में चारों ओर टहलने लगे। अनजाने ही वे किसी गीत की एक कड़ी गुनगुनाने लगे—

"भंवर घुमत जाय…"

फिर एकाएक चिल्लाकर बोले, "अरे, कोई है ?"

सिर आधा ढंके हुए एक नौकरानी दरवाज़े के पास आ खड़ी हुई।

"शिखु को बुला दे।"

शिखरिणी आई तो धमकाकर बोले, "कहां है तेरी कचौड़ी ? लाई नहीं !"

उन्होंने खुद ही इनकार किया था, शिखरिणी ने इसका ज़िक्र नहीं किया। बस मुस्कराकर बोली, "लाती हूं।" और वह चली गई।

मेघसुन्दर ने कई कचौड़ियां खाईं। उन्होंने बड़ी तृप्ति के साथ खाया। रात को नींद भी अच्छी आई। ऐसी अच्छी नींद उन्हें बहुत दिनों से नहीं आई थी।

सवेरे डाकिया जब चिट्ठी दे गया, उस समय हीराबाई उदात्त स्वर में एक बंगला गीत गा रही थीं, जिसका अर्थ था—

१६

केशवसामन्त के तिमंज़िलेवाले कमरे में भी वाद्य-वृन्द खूब जमा हुआ था, हू-हू आवाज़ करता हुआ स्टोव जल रहा था, विलायती आर्केस्ट्रा बज रहा था। 'सैकफोन' खें-खें आवाज़ करता हुआ प्रेतिनी की तरह हंस रहा था। केशवसामन्त खुद एक झांझ लेकर ज़ोर-ज़ोर से बजा रहे थे। चारों ओर हिरण्यगर्भ और मेघसुन्दर की गोलियों से छिदी हुई तस्वीरें, बिखरी पड़ी थीं। शिखरिणी के फोटो के माथे पर ताज़े खून की एक और बिन्दी चमक रही थी। बीच-बीच में केशवसामन्त अट्टहास कर रहे थे।

एकाएक नीचे इलेक्ट्रिक बेल घनघना उठी। ग्रामोफोन का रिकार्ड खत्म हो रहा था। बाजा बन्द करके केशवसामन्त थोड़ी देर कान लगा-कर सुनते रहे, फिर स्टोव बुझाकर नीचे चले गए। कोई खास बात नहीं थी। डाकिया एक रजिस्टर्ड चिट्ठी लेकर नीचे खड़ा था। उन्होंने दस्तखत करके चिट्ठी ले ली। डाकिया चला गया। अपरिचित लिखावटवाली चिट्ठी खोलते ही उनका हृदय धक् से रह गया। शिखरिणी की चिट्ठी थी। लिखा था—"तुम्हारा पत्र मिल गया। मैं कलकत्ता आई हूं। ऊपर के पते पर हूं। तुम्हारे घर आना सम्भव नहीं है, क्योंकि वे साथ हैं। अगर तुम किसी तरह इस पते पर आ सको तो भेंट हो जाएगी।" हस्ताक्षर भी शिखरिणी के नहीं थे। केशवसामन्त भौंहें सिकोड़कर मूंछें ऐंठने लगे।

१७

मेघसुन्दर नवदम्पति को आशीर्वाद देने के लिए आकाश-विहार पर चढ़ रहे थे। पीछे-पीछे पुरोहित और उनके अनुचर आशीर्वाद के उपकरण तथा उपहार का सामान लिए आ रहे थे। हिरण्यगर्भ भी साथ थे। सबसे पीछे शिखरिणी शंख बजाती हुई आ रही थी। तिमंज़िले तक चढ़ने पर

मेघसुन्दर हांफने लगे। सांस लेने पर कष्ट होने लगा। अगर वहीं रुक जाते तो ठीक था, पर वे नहीं रुके। उन्हें जाने कैसी ज़िद हो गई कि वे सात मंज़िल चढ़कर ही रहेंगे। कोहबर में ही जाकर वे उन्हें आशीर्वाद देंगे। अपनी तकलीफ के बारे में उन्होंने किसीसे कुछ नहीं कहा। एक के बाद एक सीढ़ी लांघते गए। सातवीं मंज़िल की सीढ़ी पर चढ़ रहे थे तो उनकी छाती में जैसे हथौड़ियां चल रही थीं। एकाएक न जाने क्या हुआ आंखों के सामने अंधेरा छा गया, वे मुंह के बल गिर पड़े। नवीन युग के कोहबर के दरवाज़े पर प्राचीन अभिजात्य की मृत्यु हो गई।

एक और मृत्यु क़रीब-करीब साथ ही साथ हो गई। कलकत्ता में हीरा-बाई के मकान में तुंगश्री की गोली से केशवसामन्त मारे गए।

१८

हिरण्यगर्भ अपनी प्रयोगशाला में ही एक कम्बल पर बैठे-बैठे कोई किताब पढ़ रहे थे। बिना किनारी की सफेद धोती और सफेद चादर उनके बदन पर थी। सिर के बाल बिखरे हुए थे। छः दिन से हजामत न करने के फलस्वरूप मूंछ-दाढ़ी बढ़कर नुकीली हो गई थी। चाचाजी की मृत्यु के कारण सूतक का पालन कर रहे थे।

तुंगश्री भीतर आईं।

"आइए।" मीठी मुस्कान से हिरण्यगर्भ ने उनका स्वागत किया, मानो कुछ हुआ ही न हो। उनकी मुस्कान देखकर तुंगश्री विस्मित हो गईं।

"काकू चल बसे।"

"मैंने अभी नरेन से सब कुछ सुना। केशवसामन्त भी मर गए। शायद आपको मालूम नहीं है।"

"नहीं तो, क्या हो गया था उसे! आह..."

"तुंगश्री की गोली से..."

दोनों एक-दूसरे को काफी देर तक चुपचाप देखते रह गए।

आखिरकार हिरण्यगर्भ ने कहा, "आपने अन्याय किया है।"

"न्याय-अन्याय मैं नहीं जानती। मैंने अपने विवेक की आज्ञा मानी है।"

फिर चुप्पी छा गई।

"आपकी प्रयोगशाला तो बरबाद हो गई, अब क्या करेंगे?"

"फिर बनाऊंगा। कल-पुर्जे सब बाजार में मिल जाएंगे। पर सबसे बड़ा नुकसान यह हुआ कि इतने दिनों का हमारा सारा रिकार्ड जल गया। गनीमत हुई कि बन्दर उस मकान में था। उसका अभी तक कुछ नहीं हुआ है। आखिर तक अगर उसे कुछ न हुआ तो क्रियाकर्म हो जाने के बाद मैं खुद अपने ऊपर उसका प्रयोग करूंगा।"

"आप खुद टाइफायड कल्चर खाएंगे?"

"हां।"

"पर मैंने कलकत्ता में एक डाक्टर से पूछा था। उन्होंने कहा—टाइफायड कल्चर लेने से ज़रूर टाइफायड हो जाएगा।"

"तो क्या हुआ, मर ही गया तो हर्ज क्या है।" बहुत ही शान्त स्वर में हिरण्यगर्भ ने यह बात कही। फिर थोड़ा मुस्कराकर बोले, "इन दिनों एक बात मेरे मन में उठती है। अगर मैं मर जाऊं तो शायद मेरा मुरारीपुरवाला स्कूल टूट जाएगा। आप मेरे स्कूल की ज़िम्मेदारी ले लीजिए। मास्टरसाहब तो हैं ही। अगर आप भी रहें तो···"

"मेरी जैसी खूनी लड़की पर आप यकीन कर सकते हैं?"

थोड़ी देर अपलक दृष्टि से उनके चेहरे की ओर देखकर हिरण्यगर्भ ने कहा, "···कर सकता हूं।"

खिड़की की ओर नज़र फेरकर तुंगश्री काफी देर तक चुप रह गईं, फिर बोलीं, "यहां के सबसे बड़े आकर्षण आप ही हैं। अगर आप न रहें तो···"

"मैं! मैं कौन हूं? देश का काम अगर आपका सबसे बड़ा आकर्षण

न हो तो आपके यहां आने की जरूरत ही नहीं है।"

फिर दोनों चुपचाप बैठे रह गए।

थोड़ी देर बाद हिरण्यगर्भ बोले, "मैं अभी आकाश-विहार जा रहा हूं। वहीं पर ये कई दिन बिताऊंगा। आप शिखु के पास रहिए। आप जो स्पेक्ट्रोस्कोप लाई थीं, उसीके सहारे आज लड़कों को सूर्य-किरण के सातों सुन्दर रंगों को दिखाऊंगा। वे आज वहीं आ रहे हैं, इसीलिए पदार्थ विज्ञान की यह किताब मैं पढ़ रहा था। तो आप उस मकान में जाकर रहिए।··· कुंज!"

तुंगश्री के मन पर ठेस-सी लगी। उनके प्रति इस आदमी के मन में ज़रा भी मोह नहीं है। एकदम निर्विकार है। उनका हृदय मसोस उठा, पर चेहरे की एक भी पेशी नहीं हिली। हृदय के कोने में जो वंचिता, अभागिन निर्वाक् होकर औंधी पड़ी थी, स्तब्ध बठीं उसे देखती रहीं। कुंज के आते ही वे उठ खड़ी हुईं।

"अच्छा, तो अब चलूं। मैं दो-एक दिन में ही शायद चली जाऊं।"

"ओह, अच्छा! नमस्कार।"

"नमस्कार।"

१९

आकाश-विहार की छत पर हिरण्यगर्भ अकेले एक दूरबीन लेकर घूम रहे थे। विराट आकाश की पृष्ठभूमि पर विस्तृत दिगन्त को देखकर उनके मन से हानि की सारी चिन्ता, शोक, ग्लानि धुल-सी गई थी। उन्हें लग रहा था, जैसे भारतवर्ष का शाश्वत रूप चारों ओर मूर्त हो रहा है। कहीं ज़रा भी हीनता नहीं, दीनता नहीं, संकीर्णता नहीं। सूर्य का उज्ज्वल प्रकाश निर्मल नील आकाश से धरती की हरीतिमा पर फैला हुआ है, वह प्रकाश जो अन्धकार का हरण करता है, जिसमें सप्त वर्णों का

समन्वय है, और इसी कारण वह सब पापों को नष्ट करता है।

दूरबीन लेकर वे चारों ओर घूम-घूमकर देखने लगे। अचानक तुंगश्री आती दिखाई पड़ीं। वे सीढ़ी पर जल्दी-जल्दी चढ़ती आ रही थीं। हिरण्यगर्भ भी उतरने लगे। बीच रास्ते में भेंट हो गई। तुंगश्री का हृदय कांप-सा रहा था, उनका चेहरा विवर्ण-सा हो गया था।

"क्या बात है, आइए !" हिरण्यगर्भ ने हंसकर स्वागत किया।

"आपका बन्दर बीमार हो गया ! चुपचाप पड़ा है, कुछ खाता-पीता नहीं।"

"आपसे किसने कहा ?"

"मैं उसे देखने गई थी।"

"ओह, तो शायद उसे कुछ हो गया।"

"तो फिर अब आपको अपने ऊपर वह प्रयोग करने की ज़रूरत तो नहीं पड़ेगी ?"

"नहीं, अगर उसे टाइफायड हो गया तो मेरा सारा प्रयोग ही खत्म हो गया।"

तुंगश्री का चेहरा खिल उठा।

"चलिए ऊपर चला जाए। लड़के अभी तक नहीं आए ?"

"नहीं, अब आते ही होंगे।"

"चलिए ऊपर चलें। आपके स्पेक्ट्रोस्कोप से मैं भी देखूंगी।"

दोनों ऊपर जाने लगे।